।। ओ३म् ।। वर्ष-७ अंक-८

वैदिक संसार

जून -२०१८ | मासिक-हिन्दी | मूल्य - २५/-

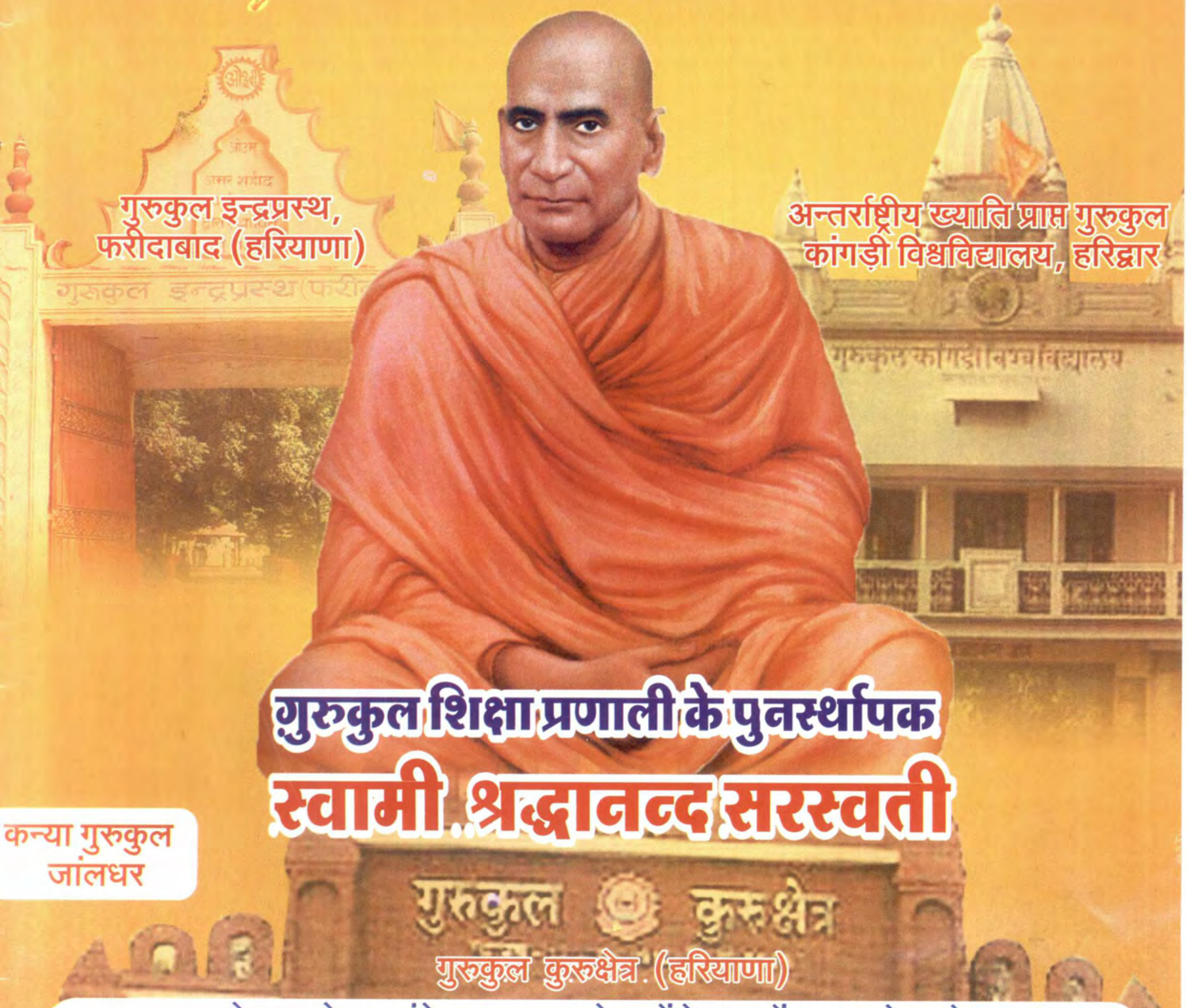

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनर्स्थापक
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

देश का नेतृत्व अंग्रेज परस्त राजनेताओं के हाथ में न गया होता तो स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती द्वारा चलाया गया शुद्धि आन्दोलन और पुनर्स्थापित शिक्षा प्रणाली के द्वारा आज देश की दशा कुछ और होती तथा देश का विभाजन भी नहीं होता..

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली...

आर्य समाज कलकत्ता में आर्य जगत् के विद्वान पं. देवनारायणजी तिवारी वैदिक संसार की प्रति प्रदर्शित करते। साथ में है डॉ. जे.आर. शर्मा तथा अन्य

कलकत्ता निवासी बहन मृदुलाजी अग्रवाल के निवास स्थान पर देवयज्ञ करते हुए। साथ में बहन जी की बेटी सुश्री बेला चौधरी तथा आदित्य शर्मा

आर्य समाज बड़ा बाजार, कोलकात्ता द्वारा संचालित निःशुल्क योग प्रशिक्षण कक्षा के प्रथम वर्ष पूर्ण होने पर डॉलर वाले श्री दीनदयाल जी गुप्ता की अध्यक्षता में हर्षोल्लासपूर्वक आयोजन सम्पन्न। मंचस्थ अतिथि, प्रशिक्षणार्थीगण तथा उपस्थित महानुभाव

श्री सत्येन्द्र जी आर्य सिलीगुड़ी के निवास पर यज्ञशाला में देवयज्ञ करते हुए

रॉक गार्डन दार्जिलिंग में देवयज्ञ करते हुए

ग्राम बूढ़ा जिला-मन्दसौर (म.प्र.) में आयोजित ध्यान योग शिविर के मौन का पालन करने वाले शिविरार्थियों को आशीर्वाद देते हुए आचार्य चन्द्रेश जी तथा देवयज्ञ करते श्री नरेश जी पिपलियामण्डी, कु. स्तुति शर्मा, कु. गायत्री पांचाल, कु. भाग्यश्री एवं अन्य शिविरार्थीगण। अंतिम चित्र में कु. भाग्यश्री सुपुत्री सुखदेव शर्मा, इंदौर शिविर के अनुभवों की प्रस्तुति देते हुए

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-७, अंक-८
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५जून, २०१८
आर्ष तिथि- आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी
सृष्टि संवत्- १,९७,२९,४९, ११९
शक संवत्- १९४०
विक्रम संवत्- २०७५, दयानन्दाब्द-१९५

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रात: ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएसएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
वर्तमान में प्रचलित स्कूली शिक्षा और प्राचीन...	सम्पादकीय	०५
आर्ष बोध-भाग २	सत्य सनातन प्रबोधक मण्डल	०५
हमारी महान् विभूति- सरदार ऊधमसिंह	डोंगरलाल पुरुषार्थी	१०
क च ट त प वर्गस्थ प्रभु	रमेशचन्द्र च्यवान:	११
वाणी का महत्व	नरेन्द्र आहूजा	१३
महाभारत काल के बाद महर्षि दयानन्द ने सत्य...	उम्मेदसिंह विशारद	१४
आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान	आ. सोमदेव आर्य	१५
'वेदों की ओर लौटो'-ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ...	पं. सत्यपाल शर्मार्य	१६
ऋग्वेद में दक्षिणा	शिवनारायण उपाध्याय	१९
गणित ज्योतिष के चार बिन्दू	आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक'	२१
आंख-मूसली, ओखल-काम, देते ये संकेत...	देवनारायण भारद्वाज	२३
राष्ट्र के नागरिक जागरूक तो राष्ट्र जागरुक	आचार्य श्रुति भास्कर	२४
बुद्धिजीवियों जागो! और अपने कर्त्तव्य का...	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	२५
आर्यो! जगत् बचाओ तुम	पं. नन्दलाल निर्भय	२६
शिक्षा-संस्कार सभ्यता और संस्कृति के बिना...	मोहनलाल दशौरा	२७
परोपकारी बनो	महात्मा चैतन्य मुनि	२७
अनेक रोगों की रामबाण औषधि-हल्दी	हरिश्चन्द्र आर्य	२९
प्रेरक प्रसंग-आज मन बहुत व्यथित हुआ	रेणू अग्रवाल	२९
उदारवादियों की अनुदारता	रामफलसिंह आर्य	३०
अन्तर के पट खोल	स्वामी सत्यव्रतानन्द सरस्वती	३१
आर्य जगत् की प्रस्तावित/सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	३३
आर्य-द्रविड़/उत्तर-दक्षिण भेद की समीक्षा	जगदीश प्रसाद आर्य	३४
मेरी कोलकाता-दार्जिलिंग यात्रा	सुखदेव शर्मा	३७
वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक...	वैदिक संसार	३९
शोक-सूचना	वैदिक संसार	४१

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधाम है।
त्वोतासो न्यर्वता।। ऋ. १.८.२

भावार्थ : ईश्वर के सेवक मनुष्यों को उचित है कि अपने शरीर और बुद्धिबल को बहुत बढ़ावें, जिससे श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का अपमान सदा होता रहे और शत्रुजन उनके मुष्टि प्रहार को न सह सकें, इधर-उधर छिपते, भागते फिरें। ■

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह जुलाई २०१८ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

१० गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ कृष्ण तृतीया २०७५	१ जुलाई	पंचक प्रारम्भ-१९:५५
१३ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ कृष्ण षष्ठी २०७५	४ जुलाई	स्वामी विवेकानन्द पुण्यतिथि
१५ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ कृष्ण अष्टमी २०७५	६ जुलाई	श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयन्ति
१६ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ कृष्ण नवमी २०७५	७ जुलाई	पंचक समाप्त-२५:५७
२० गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी २०७५	११ जुलाई	मृगशिरा- २१:५३
२२ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ कृष्ण अमावस्या २०७५	१३ जुलाई	क्षयतिथि प्रतिपदा-२८:३४
२३ गते	नभस मास	१९४० शक स. श्रावण शुक्ल द्वितीया २०७५	१४ जुलाई	पुष्य-२१:०७
२८ गते	नभस मास	१९४० शक स. श्रावण शुक्ल सप्तमी २०७५	१९ जुलाई	चित्रा-२०:३९, गोस्वामी तुलसीदास एवं वीर क्रान्तिकारी मंगल पाण्डे जयन्ति दिवस
३१ गते	नभस मास	१९४० शक स. श्रावण शुक्ल दशमी २०७५	२२ जुलाई	सक्रान्ति-२६:३१
०१ गते	नभस्य मास	१९४० शक स. श्रावण शुक्ल एकादशी २०७५	२३ जुलाई	गुरु हरकिशन, बाल गंगाधर तिलक एवं चंद्रशेखर आजाद पुण्यतिथि
०३ गते	नभस्य मास	१९४० शक स. श्रावण शुक्ल त्रयोदशी २०७५	२५ जुलाई	पूर्वाषाढ़-२८:५५
०४ गते	नभस्य मास	१९४० शक स. श्रावण शुक्ल चतुर्दशी २०७५	२६ जुलाई	भद्रा २३:१८ से आगामी दिवस १२:०५ बजे तक
०५ गते	नभस्य मास	१९४० शक स. श्रावण शुक्ल पूर्णिमा २०७५	२७ जुलाई	श्रावणी उपाकर्म पर्व (रक्षाबन्धन व यज्ञोपवित परिवर्तन), वेद प्रचार सप्ताह प्रारम्भ, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुण्यतिथि
०६ गते	नभस्य मास	१९४० शक स. श्रावण कृष्ण प्रतिपदा २०७५	२८ जुलाई	पंचक प्रारम्भ- २५:५६
०७ गते	नभस्य मास	१९४० शक स. श्रावण कृष्ण द्वितीया २०७५	२९ जुलाई	ईश्वरचन्द विद्यासागर पुण्यतिथि, राष्ट्रीय खेल दिवस
०९ गते	नभस्य मास	१९४० शक स. श्रावण कृष्ण तृतीया २०७५	३१ जुलाई	मुंशी प्रेमचन्द जयन्ति, सरदार उधमसिंह पुण्यतिथि

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अन्य दैनन्दिनियों से प्राप्त कुछ विशेष दिवस

०१ जुलाई
डॉक्टर्स एवं सी.ए. दिवस

११ जुलाई
विश्व जनसंख्या दिवस

१८ जुलाई
गुरु हरकिशन दिवस

२५ जुलाई
स्वामी करपात्री जी महाराज ज.

३१ जुलाई
पार्श्व गायक मो. रफी पुण्यतिथि

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धिता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना। ●

सम्पादकीय

वर्तमान में प्रचलित स्कूली शिक्षा एवं प्राचीन वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा
एक तुलनात्मक अध्ययन

यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत विश्वगुरु की पदवी पर समूचे संसार का सिरमौर रहा है। इस भू-भाग का इतिहास उत्कृष्ट शिक्षा-संस्कृति, प्रेरणास्पद व्यक्तित्वों से भरा पड़ा है। हम जब मानव जीवन के अतित पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि मानव की उत्पत्ति को लगभग दो अरब वर्ष होने को हैं। यह तथ्य हमें विचार देता है कि परमपिता की असीम कृपा से जब मानव अमैथुनी सृष्टि में प्रथम इस पृथिवि पर उत्पन्न हुआ क्या तब वह वर्तमान में प्रचलित देशों, जातियों, भाषाओं तथा विभिन्न तथाकथित धर्म रूपी मत-मतान्तरों, सम्प्रदायों में बंटा हुआ था?

हम हमारी बुद्धि को उपयोग में लें और अनुमान प्रमाण का आश्रय लेवें तो पाते हैं कि मानव जाति अपने प्रारम्भिक काल में विभाजित न होकर एक थी। अब दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि मानव जाति अपनी उत्पत्ति काल से नैमित्तिक ज्ञान आधारित जाति है, अर्थात् इसमें सिखने-सिखाने, बोलने-सुनने, समझने और समझाने का गुण है, यह जो कुछ सीखाता है इस संसार में आने के बाद किसी निमित्त अर्थात् किसी माध्यम से सीखता है। प्रश्न उठता है कि सृष्टि में उत्पन्न प्रथम मानव को किसने सिखाया? विकासवादियों का तथाकथित सिद्धान्त की मनुष्य की उत्पत्ति के समय आदिम युग था, अर्थात् मानव जाति जंगली थी और धीरे-धीरे वह सभ्य हुआ, अगर ऐसा होता तो मानव के अतिरिक्त अन्य जंगली प्राणी भी मनुष्य की तरह सभ्य-सुसंस्कृत क्यों नहीं हो गए? और वर्तमान में मानव पर दृष्टिपात करें तो वह हिंसक पशु पक्षियों से भी ज्यादा घातक और अविश्वसनीय प्रतीत हो रहा है। इसका व्यवहार इतना असभ्य-अपसंस्कृत हो गया है कि इसे जंगली अथवा पशुवात् कहने पर मूक प्राणी भी आपत्ति लेंगे कि हम इतने प्रतीत नहीं है। इस मानव को हमारी संज्ञा देकर हमें क्यों अपमानित किया जा रहा है?

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का प्रथम नियम कहता है- **'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।'** यह बात तो गले उतरने वाली है जो भी शक्ति इस ब्रह्माण्ड और मानव जाति के सहित समस्त प्राणियों की रचयिता है वह ना तो अल्पज्ञ होगी ना अल्प शक्तिमान अर्थात् वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है और जब उस सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान सुपर पॉवर जिसे परमपिता परमात्मा कहा जाता है के द्वारा इस विलक्षण मानव तनधारी प्राणी की रचना की गई। इसे बोलने, सीखने, सिखाने, मनन करने के योग्य बनाया तो इसे संसार में किस प्रकार रहे का कोई ज्ञान तो दिया होगा? इस प्रश्न का उत्तर है कि **सृष्टि पर प्रथम उत्पन्न मानव को परमपिता परमात्मा द्वारा दिया गया वह ज्ञान वेद का ज्ञान है। वेद की भाषा संस्कृत है और संस्कृत को ही भाषाओं की माता कहा गया है। संसार के समस्त विचारधाराओं के विद्वान इस तथ्य पर सहमत हैं कि ऋग्वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है। वेद का ही एक नाम 'श्रुति' है।** अर्थात् जो ज्ञान श्रवण परम्परा से प्रवाहित होता आया हो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश भूमिका में लिखते हैं 'मनुष्यों का आत्मा सत्यासत्य को जानने हारा है, अपितु अविद्या, स्वप्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह के कारण सत्य को छोड़, असत्य पर झुक जाता है।' आओं सत्य और असत्य क्या है, महर्षि द्वारा निर्धारित आर्य समाज के नियम से जाने- **'सब सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'** यहां ऋषि ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों अर्थात् श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव के लोगों का मात्र धर्म ही नहीं अपितु परमधर्म माना है। **इसी का नाम 'विश्ववारा संस्कृति' अर्थात् विश्व के लिए वरणीय संस्कृति है।**

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव जाति अल्पज्ञ है और परमात्मा सर्वज्ञ तथा परमात्मा ने मानव जाति को उत्पन्न किया है। अन्य प्राणियों से इतर मानव जैसे विलक्षण प्राणी को उत्पन्न करने का क्या कारण रहा होगा? इस तथ्य की पड़ताल परमात्मा प्रदत्त ज्ञान वेद में करते हैं तो पाते हैं कि परमात्मा ने जीवात्मा के भोग और अपवर्ग की प्राप्ति के लिए इस संसार को बनाया और केवल और केवल मानव जाति के कल्याण के लिए वेद का ज्ञान दिया, किन्तु उसने मानव तनधारी जीवात्मा की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप न करते हुए उसे कर्म करने हेतु स्वतन्त्र रखा है। मानव जब-जब

आर्ष बोध भाग-२

१. शाश्वत वैदिक मान्यताएं-ईश्वर एक ही है, गुण कर्म स्वभाव से उसके (ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणपति, जगदम्बा, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि)नाम अनेक हैं उसका मुख्य नाम '**ओ३म्**' है।

२. ईश्वर सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार एक रस, अचल, अटल, अपरिवर्तनीय, अप्रभावित, निर्विकार, सृष्टि रचयिता और हम जीवों को हमारे शुभाशुभ कार्मो का यथायोग्य फल प्रदाता है।

३. जन्म मरण से रहित ईश्वर अनुभूति का विषय है। वह इन्द्रियों से नहीं जाना जाता। उसकी अनुभूति सदोष अन्तःकरण में नहीं होती। उसे पाने के लिए अष्टांग योग को विधिवत अपनाना अति आवश्यक है।

सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल, कर्णावती (गुजरात)
चलभाष- ९८२४०९६०४५, ९९७९४२८०८९

परमात्मा प्रदत्त ज्ञान को तजकर अपनी कर्म करने की स्वतन्त्रता का दुरुपयोग कर अपनी अल्पज्ञता पर आधारित कर्म करता हैं तो समस्याएं उत्पन्न करता है। वर्तमान में मानव जाति में देश, जन्मना जाति, भाषा, मत-मतान्तर आधारित विभाजन मनुष्य की अल्पज्ञता पर आधारित विभाजन है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचयित अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में पाते हैं कि महाभारत के लगभग एक हजार वर्ष पूर्व से विश्ववारा वैदिक संस्कृति का ह्रास होना प्रारम्भ हुआ और महाभारत इसी ह्रास का परिणाम होकर महाभारत पश्चात् मानव जाति अज्ञानता के अन्धकार में जकड़ गई। मानव जाति में व्याप्त विभिन्न विभाजन, परस्पर घृणायुक्त व्यवहार, सर्वत्र दु:ख, अशान्ति, भय तथा परतन्त्रता का कारण महर्षि ने खोजा, वेदों से विमुख होना और मानव जाति को सन्देश दिया। **'वेदों की ओर लौटो'** महर्षि दयानन्द की प्रेरणा और प्रयासों से हम स्वतन्त्र हुए, किन्तु दुर्भाग्य हमने ऋषि की मंशानुसार धर्मार्य सभा, राजार्य सभा और विद्यार्य सभा के क्षेत्र में प्रगति नहीं की और अविवेकी-अज्ञानी व्यक्ति हमारे राजनेता बन रहे हैं और अंग्रेजों द्वारा थोंपी गई शिक्षा पद्धति को अपने कल्याण का पथ मान लिया है।

झारखण्ड राज्य के जिला पलामू स्थित राज चैनपुर से आर्य समाज राज चैनपुर के संरक्षक श्री जगदीश जी शर्मा, जिनका मेरा परिचय आर्य समाज गान्धीधाम के वार्षिकोत्सव में हुआ था। यह परिचय मित्रता में परिवर्तित हुआ और यह मित्रता आपके छोटे भाई की सुपुत्री प्रियंका शर्मा और मेरे पुत्र नितिन शर्मा के सम्बन्ध में परिवर्तित होकर आप मेरे समधी बन गए।

तीन वर्ष पूर्व विवाह संस्कार के कुछ दिनों पूर्व पक्षाघात (लकवा) रोग से ग्रसित हो जाने के कारण आप व आपके परिवार के सदस्य विवाह संस्कार के समय उपस्थित नहीं हो पाए थे। गत वर्ष आपने अपने सुपौत्र चि. रोहित को मुझसे परामर्श पश्चात् वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल केहलारी, जिला- खण्डवा में प्रवेश दिलवाया था। दिनांक १२ मई को चि. रोहित की इस सत्र की परीक्षा का समापन हो रहा था, अत: श्री जगदीश जी शर्मा हम लोगों से भेंट करने चि. रोहित को लेने तथा भ्रमण आदि की मंशा से सपरिवार पधारे।

दिनांक १४ मई को आपको तथा आपके परिजनों को साथ लेकर वेद प्रचार वाहन से गुरुकुल दोपहर १ बजे के लगभग पहुंचे। आचार्य सर्वेश जी से अभिवादन, कुशलक्षेम आदि पश्चात् भोजन विश्राम हुआ। सायंकाल को गहन वार्ता हुई। मस्तिष्क में विचार आया कि हम जैसे लोग वैदिक धर्म सिद्धान्तों से सुपरिचित है वे तो जानते हैं कि वर्तमान स्कूली शिक्षा और गुरुकुलीय शिक्षा में क्या अन्तर है। किन्तु क्या गुरुकुल में प्रवेश लेने वाले ब्रह्मचारी इस अन्तर को जानते-समझते हैं? क्यों न इस विषय पर ब्रह्मचारियों से वार्ता की जाए और वे जानते हैं तो अच्छी बात है, अन्यथा उन्हें अवगत करवाया जावे। आचार्य जी के समक्ष इस सुझाव को रखा, उन्होंने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। संध्या से निवृत्त हो भोजन से पूर्व गुरुकुल की निर्माणाधीन यज्ञशाला में आचार्य जी, शास्त्रीगण और गुरुकुल में अध्ययनरत उपस्थित समस्त ब्रह्मचारीगण बैठे।

मैंने ब्रह्मचारियों से प्रश्न किया कि इस गुरुकुल मार्ग पर एक स्कूल है और एक आपका गुरुकुल है वहां भी पढ़ाई होती है और यहां भी पढ़ाई होती है, वहां भी बालक पढ़ने आते हैं और यहां भी बालक पढ़ते हैं। वहां अध्यापकगण पढ़ाते हैं और यहां पर आचार्यगण पढ़ाते हैं और इसी प्रकार के स्कूल आप लोगों के गांव में जहां के तुम लोग रहने वाले हो, वहां भी होंगे, फिर तुम अपने घर से माता-पिता से दूर यहां पढ़ने क्यों आये हो? इस गुरुकुल में ऐसा क्या है जो आपके गांव के स्कूलों में नहीं है? ब्रह्मचारियों ने अपनी क्षमता के अनुसार उत्तर दिए, उन्होंने कहा कि गुरुकुल में पढ़ने वाले ब्रह्मचारी में संस्कारों का निर्माण होता है, अनुशासन में रहने की आदत बनती है, शेखर शास्त्री जी ने कहा कि व्यक्ति की त्रिविध उन्नति अर्थात् उसका शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति होती है, आदि-आदि बातें सामने आई।

मैंने भी अपनी ओर से वार्ता का समापन करते हुए कहा कि वेद परमपिता परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है, गुरुकुलीय शिक्षा वेदाधारित शिक्षा होने से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है जो स्कूली शिक्षा में नहीं है, स्कूली शिक्षा से व्यक्ति मात्र अर्थ प्राप्ति कर जीवन को चलाने वाले साधनों की प्राप्ति भर कर सकता है, अर्थात् उसका मात्र आर्थिक पक्ष का विकास होता है। **गुरुकुल शिक्षा से व्यक्ति को मनुष्य जीवन की प्राप्ति किसके द्वारा और क्यों अर्थात् - वह मानव जीवन का उद्देश्य परमपिता परमात्मा की प्राप्ति को जान पाता है और उस लक्ष्य की प्राप्ति की पूर्ति किस प्रकार हो यह जान पाता है। जबकि स्कूली शिक्षा में इसका नितान्त अभाव है।** आदि विचारों को रखकर वार्ता का समापन किया। आचार्य जी द्वारा भावपूर्ण आत्मिक अभिनंदन करते हुए आभार व्यक्त किया। यह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण और विस्तृत होने से परस्पर वार्ता में इस पर समुचित प्रकाश डाल पाना सम्भव नहीं है और यह विषय हमारे गौरवपूर्ण अतित से जुड़ा होकर जन-जन के लिए आवश्यक एवं हितकारी है। विशेषकर गुरुकुल में पढ़ने वाले ब्रह्मचारियों को अपने परिवार, गांव, रिश्तेदारी के गुरुकुल शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ साथियों तथा लोगों के द्वारा किए गए, इस प्रकार के प्रश्नों का सामना प्राय: करना पड़ता है कि तू गुरुकुल में पढ़ने क्यों गया? क्या यहां पर स्कूल नहीं है, क्योंकि स्कूल में पढ़ने वाले ज्यादा हैं और गुरुकुल में जाने वाले इक्का-दुक्का हैं, क्या गुरुकुल में पढ़कर पुजारी बनेगा? जन सामान्य की यह भ्रान्ति होती है कि गुरुकुल में पढ़ने वाला व्यक्ति केवल पूजा-पाठ करवा सकता है उसमें डॉक्टर- इंजीनियर जैसी कोई योग्यता नहीं होती। प्रश्न करने वाले पूर्णतया इस तथ्य से अनभिज्ञ होते हैं कि गुरुकुल में पढ़ने वाला ब्रह्मचारी डॉक्टर-इंजीनियर से भी उच्च कोटि का विद्वान हो सकता है या होता है। गुरुकुलीय शिक्षा महत्ता से सर्वथा अनभिज्ञ जन सामान्य में वर्तमान में एक भ्रान्ति यह भी है कि

जो लोग अपने बच्चों से प्रेम नहीं करते अथवा जो निर्धन हैं वे लोग अपने बच्चों को गुरुकुल में पटक आते हैं, जबकि वास्तविकता इसके उलट है। गुरुकुलों में वे ही माता-पिता अपने बच्चों को भेज पाते हैं जो गुरुकुलीय शिक्षा का आधार वैदिक ज्ञान महत्ता से सुपरिचित होते हैं और अपनी सन्तान के पूर्ण हितकारी होते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक लोग ऐसे भी हैं जिन्हें पता ही नहीं है कि आवासीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जैसी कोई व्यवस्था वर्तमान में प्रचलित है जिसमें अल्प व्यय में बालक-बालिका को सुयोग्य, संस्कारवान, माता-पिता का आज्ञाकारी, सदाचारी, सेवाभावी, धर्मनिष्ठ, राष्ट्रभक्त बनाया जा सकता है। उपरोक्त जानकारी **के अभाव में जन-सामान्य भारी-भरकम स्कूली शिक्षा में व्यय कर यहां तक कि अपनी सम्पत्ति आदि बेचकर भी एक भोगवादी पुतले का निर्माण करते हैं और परिणाम रूप में वृद्धाश्रम आश्रय जैसा दारुण दुःख पाते हैं।**

अतः जन-जन का उपयोगी, मानव मात्र का हितकारी विषय जानकर मानस बनाया कि इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला जावे, प्रस्तुत है तुलनात्मक अध्ययन

वर्तमान में प्रचलित स्कूली शिक्षा

१. अल्पज्ञ मनुष्यों के ज्ञान आधारित विषय केन्द्रीत शिक्षा है जो देश काल अनुसार पृथक-पृथक है।

२. इस संसार के आधार तथा अनादि और अनन्त तत्व ईश्वर, प्रकृति तथा जीवात्मा के ज्ञान से रहित है।

३. विद्यार्थी को ईश्वर का ठीक-ठीक ज्ञान न होने से वह ईश्वर निष्ठ न होकर वह ईश्वर को अपना अटका हुआ काम निकालने का माध्यम मात्र समझ अन्धविश्वासी-पाखण्डी और पापी बनता है।

४. ईश्वर के न्यायकारी स्वरूप तथा कर्मफल व्यवस्था से सर्वथा अनभिज्ञ होने से ईश्वर का कोई भय नहीं होने से दुष्ट-दुराचारी, दुर्व्यसनी, असत्य भाषणवादी बन मानव जीवन को व्यर्थ नष्ट करता है।

५. भोगवादी, परिग्रही होने से असंतोषी होकर दुःखों को भोगता है।

६. उच्च शिक्षा अर्जित कर लेने और किसी उच्च पद पर आसीन हो जाने पर **'करेला और नीम चढ़ा'** की कहावत को चरितार्थ करता है। अहंकारी होकर किसी को कुछ समझता नहीं है यहां तक कि समय आने पर माता-पिता का भी तिरस्कार करता है।

७. अध्यापकों, का हृदय से सम्मान करने वाला न होकर उद्दण्डी, अवसर आने पर अध्यापकों से मुंहजोरी, अशिष्ट व्यवहार यहां तक कि उन पर हाथ चलाने और हत्या तक करने में भी पीछे नहीं हटता है।

८. स्कूलों के आसपास दुर्व्यसनों की उपलब्धता, अध्यापकगणों, परिवारजनों, पड़ोसियों द्वारा दुर्व्यसनों का उपयोगी वातावरण होने से दुर्व्यसनी बनने की सम्भावना अधिक होती है। स्कूली शिक्षा में दुर्व्यसनों के निषेध के दृढ़ ज्ञान का अभाव भी इसमें सहायक होता है।

९. स्कूली विद्यार्थी वेदज्ञान विहिन माता-पिता तथा शिक्षकों के सम्पर्क में रहता है। जिनकी व्यवस्थित दिनचर्या नहीं होती। इनका न सोने का कोई निश्चित समय, ना जागने का समय, कब खाना है, क्या खाना है, क्या नहीं खाना है, कोई ध्यान नहीं। ऐसे वातावरण में पले-बढ़े स्कूली शिक्षा के विद्यार्थी इन्द्रियों का नियंत्रण तो दूर उन्हें यह भी पता नहीं कि इन्द्रियां किन्हें कहते हैं। वे भोगी-विलासी बन सकते हैं,

प्राचीन वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा

१. सर्वज्ञ परमपिता परमात्मा द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति के सर्वांगीण विकास व कल्याण हेतु सम्पूर्ण भू-भाग पर समस्त काल में प्रासंगिक वेद पर आधारित सर्वोत्तम शिक्षा है।

२. ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति से अच्छे से सुपरिचित करवाती है। जिससे मानव जीवन की महत्ता का ज्ञान होता है।

३. ब्रह्मचारी को ईश्वर का ज्ञान ठीक-ठीक होने से वह ईश्वर को सर्वत्र- सर्वव्यापक जानता और मानता है तथा वह जानता है कि ईश्वर मेरे कर्मों का ठीक-ठीक फल देगा। अर्थात् वह कर्मशील पुण्यात्मा-धर्मात्मा बनता है।

४. ईश्वर के न्यायकारी स्वरूप से सुपरिचित तथा ईश्वर आधारित पुनर्जन्म और कर्मफल व्यवस्था से सुपरिचित होने से उत्तम चरित्रधारी होकर कर्मशील होता है।

५. त्यागवादी, परोपकारी होने से संतोषी-सुखी होता है।

६. वेद-वेदादि शास्त्रों का गहन अध्ययन, उपरान्त फलों से लदे वृक्षों की भाँति विनम्र-विनयशील सबके सम्मान का सत्पात्र, माता-पिता का आज्ञाकारी तथा अपने-आपको ऋणी मानने वाला सदाचारी बन जाता है।

७. आचार्यों को पिता तुल्य हृदय से सम्मान देने वाला, उनकी आज्ञा पर प्राणों को भी न्यौछावर करने पर पीछे नहीं हटने वाला सदैव उनके चरणों में झुका रहने वाला बनता है।

८. शहरी-नगरीय वातावरण से दूर निर्जन, दुर्व्यसन मुक्त वातावरण में गुरुकुल में ही निवास और विद्यार्जन करने से दुर्व्यसनों से दूर होता है। दुर्व्यसनों के दुष्प्रभावों का ज्ञान प्राप्त होने से दुर्व्यसनों को निषेध वस्तुओं का दृढ़ ज्ञानी होता है।

त्यागी-तपस्वी नहीं।

१०. स्कूली विद्यार्थी कामी होता है, अर्थात् कभी पूर्ण न की जा सकने वाली अनन्त वासनाओं-इच्छाओं का धनी होता है। आज कुछ चाहिए, कल कुछ, परसों कुछ। एक इच्छा पूर्ण हुई तो दूसरी तैयार। पूर्ण नहीं हुई तो दु:खी, हठ, क्रोध, परिणाम, असंतोष, अविचलित मानसिकता से ग्रसित दु:खी सन्तापी होता है।

११. स्कूली विद्यार्थी तामसिक आहार-विहार तथा परिवार एवं स्कूली वातावरण का प्रभाव उस पर अनुकूल न होने से वह अशान्त तथा क्रोधी स्वभाव का होता है।

१२. स्कूली विद्यार्थी में अतृप्त कामनाओं के कारण लोभवृत्ति का जन्म होता है। फलत: वह सहपाठियों परिवार-रिश्तेदारी के अन्य बालकों की वस्तुओं को छुपा लेता है, उठा लेता है। इन कृत्यों को करने में उसे कोई संकोच नहीं होता, क्योंकि उसे सिखाया ही नहीं जाता कि ऐसा करना चोरी है। शनै:-शनै: वह अन्यों की वस्तुओं को हड़पने का आदि हो जाता है। इसमें उसे किसी बात का भय लगता नहीं है। ऐसे ही एक भ्रष्ट नागरिक का निर्माण होता है जो राष्ट्रघातक बनता है और उस व्यक्ति को इस बात का बोध तक नहीं होता।

१३. जीवात्मा, प्रकृति का ठीक-ठीक ज्ञान न होने से ईश्वर को विस्मृत कर मनुष्यों को ईश्वर मान बैठता है तथा प्रकृति तत्वों से निर्मित जड़ पदार्थों पत्थर, काष्ठ, जल आदि का जड़ पूजक और उपासक होने से इसका स्वयं का जो ज्ञान होता है, वह भी जड़ हो जाता है तथा ठगी का शिकार बनता है।

१४. वेतनधारी अध्यापकों द्वारा उनका दायित्व मात्र उनके विषय का अध्यापन करवाना मात्र होता है। अनेक अध्यापक दुर्व्यसनों, व्याभिचार, असत्य भाषणादि दुर्गुणों में जकड़े होते हैं।

जिनको विद्यार्थी की दिनचर्या से कोई सरोकार नहीं होता। परिणामत: विद्यार्थी अव्यवस्थित दिनचर्या का धनी होकर कदाचारी होता है।

१५. माता-पिता स्वयं वैदिक सिद्धान्त विहिन अव्यवस्थित दिनचर्या अर्थात् शयन (सोने)-जागरण का कोई निश्चित समय नहीं, वे स्वयं नहीं जानते कि निद्रा भी सात्विक, राजसिक, तामसिक होती है। अधिक सोने वाला तामसिक निद्रा का स्वामी होकर आलसी प्रमादी होता है। आहार का कोई ध्यान नहीं, कब खाना है क्या खाना है, क्या-क्या नहीं खाना है, कोई विचार नहीं भोगी होकर रोगी बने रहते हैं। स्वयं के परिवार में परस्पर अनर्गल वार्तालाप तथा मोबाइल आदि पर मित्रों से करते रहते हैं जिसमें असत्य और अश्लील शब्दों का भी समावेश रहता है, जिसे बच्चा सुनता रहता है। टेलीविजन आदि पर चलने वाले सीरियल, फिल्मों में नाटकीय भाव मुद्राएं, अंग प्रदर्शन, हिंसक घटनाओं, रोमांस आदि दृश्यों से माता-पिता चिपके रहते हैं जिसे साथ में बालक-बालिका भी देखते रहते हैं। कुल मिलाकर वर्तमान का पारिवारिक वातावरण बालक के बिगाड़ का कारखाना है।

९. गुरुकुल में अध्ययनरत बालक ब्रह्मचारी कहलाता है और उसे ब्रह्मचर्य का अर्थ अच्छी तरह पता होता है। ब्रह्मचारी अर्थात् अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने वाला।

१०. गुरुकुल के ब्रह्मचारी का रहन-सहन, खान-पान सब कुछ संयमित, सादगीपूर्ण, मिल गया तो ठीक अन्यथा कोई बात नहीं, कोई हठ, क्रोध, दु:ख नहीं परिणाम संतोष वृत्ति स्थिर मानसिकता का धनी।

११. सात्विक आहार-विहार, शहरी कोलाहल से दूर प्राकृतिक सुरम्य वातावरण, पूर्ण अनुशासित, आचार्यों, सहपाठियों के निरन्तर सम्पर्क में रहने से वह शान्त, धीर, गम्भीर, विचारशील, सहनशील होता है।

१२. गुरुकुल का ब्रह्मचारी समय पर जो जैसा मिला खा लिया, जो जैसा मिला पहन लिया अतिरिक्त कोई मांग नहीं तथा गुरुकुल में परस्पर एक दूसरे का सहयोग करने आदि कारणों तथा वैदिक शिक्षा में किसी की वस्तु को बगैर पूछे लेना चोरी कहलाने से वह ऐसे कर्मों से दूर रहता है। परिणामत: वह लोभी के स्थान पर त्यागी बनता है। वैदिक शिक्षा के प्रभाव से उसे दृढ़ ज्ञान होता है कि उसे मानव जीवन परोपकार आदि कार्यों के लिए मिला है। मनुष्य के लिए निषिद्ध कर्म पाप श्रेणी में आते हैं और ऐसे कर्मों को करने पर परमपिता परमात्मा से प्राप्त दण्ड निश्चित रूप से भोगना होता है। इसका उसे अच्छी तरह बोध होता है।

१३. ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का ठीक-ठीक ज्ञान होने से इसका ज्ञान-कर्म-उपासना शुद्ध होते हैं तथा उनसे यथोचित व्यवहार कर यथोचित लाभ प्राप्त करता है। ठगों-धूर्तों के कुचक्रों का शिकार नहीं होता है।

१४. त्यागी- तपस्वी, सेवाभावी आचार्यों द्वारा शिष्य को पुत्रवत मानकर उसकी दिनचर्या पर पूर्ण निर्देशन तथा नियंत्रण होता है। परिणामत: सुव्यवस्थित दिनचर्या का धनी होकर सदाचारी होता है।

१५. गुरुकुलों में लगभग ९.३० से १०.०० बजे तक शयन आवश्यक रूप से हो जाता है तथा प्रात: जागरण ४ बजे प्रात:राश (नाश्ता) साधारण रूप से हल्का-फुल्का निर्धारित समय पर होता है। भोजन निश्चित समय पर बगैर तला-गला, मिर्च-मसालों से रहित सात्विक होता है, जो आयु-बल और बुद्धि को बढ़ाने वाला होता है। अनावश्यक वार्तालाप से परे मौन का पालन करना निश्चित समयावधि में होता है परस्पर शरारत, छेड़खानी, हंसी-ठट्ठे का कोई स्थान न होने से वृत्ति धीर-गम्भीर बनती है। सार रूप में गुरुकुल '**मनुर्भव**' अर्थात् मनुष्य निर्माण के द्वारा देवत्व के आधान का कारखाना है।

गुरुकुलीय शिक्षा और वर्तमान शिक्षा के विषय में कहने-लिखने को बहुत कुछ है। स्थानाभाव के कारण संक्षेप में इतना ही पर्याप्त है कि गुरुकुलीय शिक्षा से मानव अग्रणी बन ऊपर को उठता है वह आकाश की ऊंचाईयों को छूता है और अपने मनुष्य जीवन को सफल-सार्थक कर अपने परम लक्ष्य मोक्षानन्द की प्राप्ति कर सकता है जबकि वर्तमान प्रचलित शिक्षा से मानव इसके ठीक विपरित भोग-विलास के दल-दल में धंसकर विलक्षण-अद्‌भुत मानव जीवन को व्यर्थ नष्ट कर जन्म-मृत्यु के आवागमन के चक्र में और गहरे फंस जाता है यह भी पूर्ण सम्भावना होती है कि उसे आगामी मानव जीवन भी प्राप्त न हो। अपवाद प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं अत: प्रारब्धानुसार और परमात्मा प्रदत्त बुद्धि तथा कर्म करने की स्वतन्त्रता का सदुपयोग करने वाले अपवाद भी हो सकते हैं, किन्तु इसका श्रेय स्कूली शिक्षा को नहीं दिया जा सकता। इसी प्रकार गुरुकुलीय शिक्षा में पले-बढ़े व्यक्ति भी अपवाद हो सकते हैं किन्तु उसका दोष गुरुकुलीय शिक्षा को नहीं दिया जा सकता। प्राचीन वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा का स्वरूप और सर्वोत्कृष्टता का तो परिदृश्य ही शत-प्रतिशत मानव मात्र का हितकारी तथा वैश्विक सुख-शान्ति का आधार था, जिसे पुनर्स्थापित करने का स्वप्न संजोया स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती ने जिन्होंने अपने जीवन में चार गुरुकुलों की स्थापना की गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार), गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा कन्या गुरुकुल जालन्धर। आपने अपने सुपुत्रों और अपनी सुपुत्री को अपने द्वारा स्थापित गुरुकुलों में प्रथम प्रवेश करवाकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। आपकी प्रेरणा से आपके पश्चात् आर्य जगत् के समर्पित सेवाभावी महानुभावों ने सैकड़ों गुरुकुलों की स्थापना की जिनसे अनेक वैदिक विद्वानों का निर्माण हुआ और वैदिक धर्म का कार्य विस्तारित हुआ, किन्तु शनै:शनै: पाश्चात्यवादी, भौतिकवादी दूषित वातावरण ने गुरुकुलीय शिक्षा को भी संक्रमित कर दिया है।

अब गुरुकुलों में नि:शुल्क शिक्षा न होकर वहां भी शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। गुरुकुल संचालक भी क्या करें अब आश्रम व्यवस्था तो है नहीं लोग वानप्रस्थ-संन्यास आश्रम में जाते नहीं, अपने बच्चों को गुरुकुल में पढ़ने भेजते नहीं इस कारण उन्हें धन की आवश्यकता अधिक होती है, दान देगा कौन? दान देंगे नहीं, वानप्रस्थ-संन्यास में जाएंगे नहीं तो गुरुकुलों में अध्यापन कार्य करेगा कौन? गृहस्थी आचार्य अध्यापन कार्य करेंगे तो उन्हें भी पारिश्रमिक चाहिएगा पैसा कहां से आएगा अत: शुल्क लेना बाध्यता हो गई।

जिन महानुभावों ने ऋषि ऋण से उऋण होने की भावना तथा विशुद्ध रूप से वैदिक धर्म के विस्तार को समर्पित होकर अपने रक्त-श्वेद से गुरुकुलों की स्थापना की उनके दिवंगत होने के पश्चात् उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल खण्डहरों में परिवर्तित हो अपने दुर्दशा पर अश्रु बहा रहे हैं अथवा राजनीति का चारागाह बन गए है। इसके स्थान पर नवोदित विद्वान कुकुरमुत्तों की तरह गुरुकुल खोले जा रहे हैं। उनका ध्यान ब्रह्मचारियों की शिक्षा-दीक्षा से अधिक धनाढ्य वर्ग से दान प्राप्त करने में अधिक होता है। आज यह भी एक अच्छा व्यवसाय बनता जा रहा है। वर्तमान के धनाढ्य वर्ग को वैदिक सिद्धान्तों के पालन करने में अधिक कठिनाई होती है कैसे भी हो धन अर्जित करों और दान दे दो, हो गए ऋषि ऋण से उऋण। किसे दे रहे हैं उसका क्या उपयोग हो रहा है किसे देखने का समय है? बस हमारी प्रशंसा होना चाहिए, अपने बच्चों को लार्ड मैकाले का मानस पुत्र बनाएंगे, विदेश में पढ़ने भेजेंगे, वह वहीं पर नौकरी-विवाह कर बस जाएगा तो गर्व से फूले नहीं समाएंगे और आर्य समाज में आकर भारतमाता की जय, सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय, आर्य समाज अमर रहे आदि उद्‌घोष बड़े जोर से लगाएंगे। जब शरीर से बेबस हो जाएंगे तो आंसु पोंछने को श्रमिक भी नहीं पाएंगे। सब पुत्रैषणा-वितैषणा-लोकेषणा का युग है, किन्तु परमात्मा तो न्यायकारी है, जाओगे कहां?

वर्तमान की दूषित शासन प्रणाली में नौकरशाहों, राजनेताओं, भारी-भरकम, वेतन-भत्तों, पेंशनों, सुख-सुविधाओं का भार तथा प्रत्येक समय होने वाले निर्वाचनों का भारी-भरकम व्यय आदि अनेक प्रकार के व्ययों के भार से करों रूपी बोझ के तले सामान्य जन का जीवन निर्वाह करना दूभर होता जा रहा है। चहूंओर बाजारवाद हावी है ऐसे में दान कौन दें, गुरुकुलों के लिए भी भूमि क्रय करना होती है, गुरुकुल भवन निर्माण तथा संचालन हेतु समस्त सामग्री ऊंचे दामों पर क्रय करना होती है। स्पष्ट है कि जब हमें कुछ नि:शुल्क प्राप्त नहीं हुआ तो नि:शुल्क शिक्षा कहां से देवेंगे?

वर्तमान में यह भी देखने में आ रहा है कि गुरुकुलों में दीक्षित विद्वान, आर्य समाज के ऊंचे-ऊंचे पदों को शोभायमान करने वाले पदाधिकारी, गुरुकुलों को दान देकर इतिश्री कर लेने वाले आदि महानुभाव कुछ अपवाद छोड़कर अपनी सन्तानों को लार्ड मैकाले का मानस पुत्र बना डॉक्टर-इंजीनियर की प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित है तो गुरुकुलों में अपनी सन्तानों को पढ़ने कौन भेंजेगा? जो अत्यन्त निर्धन है अथवा जो अपनी सन्तान के बिगाड़ से इतना दु:खी हो गया कि उसे सुधार का कोई उपाय नहीं सूझ रहा है जब ऐसे होगा तो गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा की स्थिति तो दयनीय होना ही है और सहारा बचेगा एक मात्र स्कूली अर्थात् ईशा के कुल की शिक्षा जो सिखाएंगी **'कैसे भी हो प्राप्त करो और खाओ, पीओ-मौज करो दुनिया जाए भाड़ में' तो सर्वत्र छीन-झपट, अशान्ति, त्राहि-त्राहि ही तो उत्पन्न होगी। जिसका दोषी कौन? झांको अपने अन्तरमन में। जब तक वैदिक आश्रम व्यवस्था स्थापित नहीं होती संसार में सुख-शान्ति स्थापित हो ही नहीं सकती। अत: आओ- ऋषि दयानन्द के सन्देश वेदों की ओर लौटो को आत्मसात करें। जीवन वेदानुकूल बनाये। बच्चों को गुरुकुल नहीं पढ़ा सकते कोई बात नहीं ऋषि दयानन्द प्रणीत पंच महायज्ञ का स्थापन कर घर को ही गुरुकुल बनाये। गुरुकुल बनाकर स्वर्ग बनाए, कृण्वन्तो विश्व मार्यम् का अलख जगाए।**■

भारत का बब्बर शेर- अमर बलिदानी सरदार ऊधमसिंह
उर्फ शेरसिंह उर्फ उदेसिंह उर्फ राम-मोहम्मद-सिंह-आजाद

- डोंगरलाल पुरुषार्थी-
पूर्व प्रधानाध्यापक, प्रधान-आर्य समाज
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-८९५९०५९०९९

गले की शोभा हार से होती है, घर की शोभा पिता से होती है।
बात यह सच है कि इस जगत् की,
राष्ट्र की शोभा शहीदों से होती है।।
हजारों खदानों में हीरा एक होता है।
हजारों वृक्षों में चन्दन एक होता है।।
लाखों सितारों में चांद एक चमकदार होता है।
करोडों जन में एक बब्बर शेर दमदार होता है।।
है विस्तृत पंजाब प्रान्त, यहां वन-प्रांतर-मैदानी।
पानीदार बनाता सबको, यहां पन्च-नद पानी।
इस पानी में भाव क्रान्ति के घुले हुए रहते हैं।
यहां जान पर अक्सर खेलने को तुले हुए रहते हैं।।

भारत के इतिहास में आजादी की लड़ाई में अंग्रेज अफसरों, सेनापतियों को मौत के घाट उतारने वाला, अंग्रेजों की नाक में दम करने के बाद अन्ततः गिरफ्तार होकर सन् १७८५ को फांसी पर चढ़ने वाला आदि योद्धा आदिवासी तिलका मांझी का नाम सबसे पहले आता है। सन् १८५७ में गदर-क्रान्ति में मंगल पाण्डे का नाम लिया जाता है। मंगल पाण्डे का प्रेरक शेर दिल मदनलाल धींगरा का नाम गर्व से लिया जाता है। जिसने क्रूर अत्याचारी कर्जन वायली को उसी के गृह नगर लन्दन में दि. ०१ जुलाई १९०९ को गोलियों से छलनी कर दिया। मदनलाल धींगरा का अनुयायी सरदार ऊधमसिंह ने दिनांक १३ मार्च १९४० को लन्दन में ही माइकल ओडायर पर गोलियां बरसाकर दिनांक १३ अप्रैल १९१९ को अमृतसर के जलियांवाला बाग में हजारों निर्दोष बाल-वृद्ध, युवक-युवतियों की मौत का प्रतिशोध भुनाया, जो कि भारत माता के मस्तक को विश्व-पटल पर उन्नत किया।

सरदार ऊधमसिंह का जन्म पंजाब के संगरूर जिले के ग्राम सुनाम में दिनांक २० दिसम्बर १८९९ को हुआ था। इनके पिताजी रेल विभाग में चौकीदारी का काम करते थे। मां नारायणीदेवी बहुत ही धार्मिक स्वभाव की नारी थी। ऊधमसिंह के बड़े भाई साधुसिंह यथा नाम तथा कामानुसार सीधे-सादे थे। ऊधमसिंह का बचपन का नाम शेरसिंह था, जो कि गुण, कर्म स्वभावानुसार सार्थक सिद्ध करता था। कुश्ती लड़ना, पक्षियों का शिकार करना, गड्ढे खोदकर जंगली जानवरों को फंसाना आदि इसके बचपन के कारनामे थे। ढाई साल की उम्र में मां का साया उठ गया। कुछ वर्षों के बाद पिता का निधन हो जाने पर रिश्तेदारों का आसरा नहीं मिलने पर शिक्षक पं. जयचन्द्र शर्मा अनाथालय की स्कूल में भर्ती कर पढ़ाने लगे। ऊधमसिंह की कुशाग्र बुद्धि होने से पहले स्थान पर उत्तीर्ण होते थे। कुछ वर्ष बाद बड़े भाई को निमोनिया हो जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। सन १८५७ के क्रान्तिकारी मंगल पाण्डे के चरित्र का अध्ययन और मदनलाल धींगरा को अपने जीवन का आदर्श बनाया। क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आकर क्रान्ति के छोटे-मोटे कार्यों में जुट गए। दि. १३ अप्रैल १९१९ में बैशाखी पर्व और मेले के अवसर पर जलियांवाला बाग के कार्यक्रम में २०-२५ हजार जनसमूह के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि के बच्चे-बूढ़े, पुरुष-महिलाए उपस्थित थे। लाला हंसराज सभा को सम्बोधित कर रहे थे। पंजाब के गवर्नर माइकल ओडायर के आदेश के तहत सेनापति जनरल डायर ने हथियारों से लैस सैकड़ों अंग्रेज सैनिकों ने बाग को पूरी तरह से घेरकर और बगैर चेतावनी के बन्दूकों से गोलियां बरसाई। लोगों की अपनी रक्षा और भगदड़ में बाग में स्थित कुआं लाशों से भर गया। बाग में चारों ओर लाशें ही लाशें पड़ी फैली थी। यह सारा नजारा एक पेड़ की पत्तियों की आड़ में छिपा १९ वर्षीय ऊधमसिंह देख रहा था। ऊधमसिंह ने अपनी डायरी में घटना को दर्ज कर संकल्प कर यह लिखा 'जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के तीन अत्याचारी, तानाशाही-माइकल ओडायर, जनरल डायर और लार्ड जेट लैण्ड को मैं मौत के घाट उतारूंगा।' जो कि प्रतिवर्ष बैशाखी पर अपनी डायरी पढ़ता रहता था। हण्टर कमेटी की रिपोर्ट ने माइकल ओडयर, जनरल डायर को अनैतिक और गैर कानूनी हत्याकांड का दोषी करार दिया और इन्हें नौकरी से मुक्त करके पेंशन भी जब्त कर ली गई। किन्तु अफसोस की भारत में रह रहे कुछ अंग्रेजों ने इन दोनों को २०-२० हजार पौण्ड का इनाम और सम्मान में एक-एक तलवार भी उपहार में भेंट की गई।

जलियांवाला बाग की घटना के बाद पं. जयचन्द्र की प्रेरणा से ऊधमसिंह लाहौर जाकर वहां काम-धन्धे के साथ इन्टरमीडिएट की परीक्षा पास कर ली। अपने उद्योग से धन एकत्रित करने के बाद अप्रवासी भारतीय के साथ अफ्रीका जा पहुंचा। यहां क्रान्तिकारियों से मुलाकात हुई, इनके साथ काम करते हुए अफ्रीका से एक सन्देश लेकर अमेरिका जा पहुंचा। यहां कुछ दिन रहने के बाद पुनः अफ्रीका आ पहुंचा और यहां से रवाना हो **अमृतसर आकर घण्टाघर के पास एक दुकान खोली जिसका नाम 'राम-मोहम्मद-सिंह आजाद' रखा।**

जो कि हिन्दू, मुसलमान, सिख एकता की प्रतीक मानी जाती थी। दुकान खूब चल पड़ी और इससे भी बढ़कर देशभक्त क्रान्तिकारियों को एकत्र होने का बड़ा अड्डा बन गई। सरदार भगतसिंह, सुखदेव, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्य महानुभावों के आगमन से ऊधमसिंह को खूब स्नेह, प्यार और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सन १९२३ को पुनः उसी भारतीय के साथ अमेरिका पहुंचे। यहां ऊधमसिंह के उद्यम से लकड़ी के व्यापारी को बहुत लाभ की प्राप्ति होने से ऊधमसिंह को अपना भागीदार बना लिया। अमेरिका में **'आजाद पार्टी'** का संगठन बनाकर भारतीयों ने आजादी के लिए खूब प्रचार-प्रसार किया। इसी दौरान ऊधमसिंह को नोट छापने की एक मशीन इनके कब्जे में आ गई। ऊधमसिंह ने अपने तकनीकी ज्ञान से मशीन बनाने का अभ्यास प्राप्त कर लिया। किन्तु भगतसिंह के एक सन्देश से ऊधमसिंह पुनः भारत आ गए। सन् १९२८ के आसपास इनको शस्त्र-संहिता के जुल्म में गिरफ्तार कर चार साल की सजा लाहौर जेल में पूर्ण की। इसी जेल में भगतसिंह भी बम बनाने के अपराध में बंद थे। **ऊधमसिंह ने पुनः अमृतसर में 'राम-मोहम्मद-सिंह-आजाद' नाम से दुकान प्रारम्भ** की। ऊधमसिंह ने कहीं से जाली पासपोर्ट बनवाकर जर्मनी में अपना पड़ाव डाला। यहां से रूस जाकर वहां के कई प्रान्तों का भ्रमण करके जर्मनी के बर्लिन नगर में रहने लगा। सन १९३३ में इंग्लैण्ड आकर अपने संकल्प के तहत लन्दन के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लिया। यहां अपना नाम उदेसिंह लिखवाया। लम्बी प्रतीक्षा के बाद दिनांक १३ मार्च १९४० का वह दिन आ गया, जो लन्दन के कैक्स्टन हॉल में एक सेमिनार के आयोजन में लार्ड जेटलैण्ड और माइकल ओडायर अपना भाषण देंगे। ऊधमसिंह एक वकील की पोषाक में नियत हाल में जा पहुंचा। इनके बाये हाथ में कानून की एक मोटी किताब को बीच में खोखली करके गोलियों से भरा एक पिस्तौल रखा था। जो पूर्व में सन् १८९२ में जन्मे चौदह वर्षीय क्रान्तिकारी सुशील कुमार सेन ने एक मोटी किताब को खोखली करके उसमें एक बम तारों द्वारा ऐसा समायोजित किया था कि पुस्तक का मोटा मुखपृष्ठ खोलते ही बम का फटना निश्चित था। आयोजन में माइकल ओडायर ने अपना भाषण प्रारम्भ किया।

निर्वाचन-समाचार

आर्य समाज वैशाली नगर जयपुर, राजस्थान के विगत दिनों चुनाव कराए गए जिसमें निम्न पदाधिकारियों का चुनाव किया गया तथा नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। **प्रधान**- डॉ. मोतीलाल शर्मा, **मंत्री**- श्री आशीष मिनोचा, **कोषाध्यक्ष**- श्री जे.एन. चोपड़ा

ooooooooooooooooo

आर्य समाज मुरैना, म.प्र. का साधारण वार्षिक अधिवेशन दिनांक १३.०५.२०१८ को सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। **प्रधान**- आचार्य घनश्याम, **उपप्रधान**- डॉ. शिवप्रतापसिंह तोमर, **मंत्री**- श्री विजयेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, **उपमंत्री**- श्री रामनरेश माहौर, **कोषाध्यक्ष**- श्री बृजमोहन गुप्ता, **पुस्तकाध्यक्ष**- श्री ओमशान्ति वर्मा ■

सेवा में,

सम्पादक महोदय, वैदिक संसार, इंदौर

आज प्रभातकाल में वेद स्वाध्याय करते समय प्रभु प्रेरणा हुई कि जगदाधार जगत्पिता परमेश्वर के कतिपय नाम वर्णमाला के क, च, ट, त, प वर्ग में अंकितकर पांच श्लोक रचे जाएं। तदनुसार, स्वरचित ५ श्लोक भाषार्थ सहित प्रकाशनार्थ-प्रेषित हैं। इन्हें रचकर मुझे अतीव आनन्द की अनुभूति हुई है। आशा है- आर्य जगत् भी रसपान कर आशीर्वाद देगा।

क च ट त प वर्गस्थ प्रभु

करुणाकन्दः खंगरुत्मान् घनानन्दः जगत्पिता।
क वर्गस्थ कृपावन्तः कर्मफल प्रदायकः।।

भाषार्थः क वर्ग- जो करुणा कन्द खं **(आकाशवद्व्यापक)** गरुत्वमान् **(गुर्वात्मा महास्वरूप)** आनन्द घन जगत्पिता है, वह क वर्गस्थ कृपावन्त परमेश्वर हमारा कर्मफल प्रदाता है।

चन्द्रश्छन्दः जगज्ज्येष्ठः इङ्कृतिः सृष्टिवीणायाः।
च वर्ग स्थितो स्वामी चलाचल प्रदायकः।।

भाषार्थः च वर्ग- जो चन्द्र **(आह्लाद प्रद)**, छन्द **(सृष्टि में छाया, व्यापा हुआ)**, जगत् में ज्येष्ठ एवं विश्व वीणा की धड्कारवत है, वह च वर्ग स्थित स्वामी हमें चला चल सम्पत्तियों का प्रदाता है।

टंकपतिः प्रकृतेश्च ठक्कुर ओ३म डिण्डिमः।
ढौकयन्ता साधकस्य ट वर्गो मोक्षदायकः।।

भाषार्थः ट वर्ग- जो प्रकृति परमाणुओं का कोषाध्यक्ष है, ओ३म् घोष स्वरूप ठाकुर **(स्वामी)** है, वह ट वर्ग स्थित प्रभु साधकों को निकट बुलाकर मोक्ष देता है।

तारकस्थः देव धाता निर्माता भुवनस्य च।
त वर्ग स्थितों प्रभुः मे ताप नाश प्रदायकः।।

भाषार्थः त वर्ग- जो तारक जगत् का तारणहार, थः= भयत्रायक (वाचस्पत्यं पृष्ठ ३४०५) देव धाता तथा भुवनों का निर्माता है। वह त वर्गस्थ मेरा प्रभु ताप (त्रिताप) नाशकर्ता भी है।

पूषा फलाढ्यः बन्धुश्च भगवां मंगलमूलः।
प वर्गस्थ महादेवोऽपवर्ग प्रदायकः।।

भाषार्थः प वर्ग- जो पूषा (विश्वपोषक), कर्मफलदाता, सबका बन्धु मंगलमूल भगवान है। प वर्ग स्थित वह महादेव अपवर्ग प्रदायक है।

कविः - रमेशचन्द्र च्यवानः
लेखन स्थान-२६२, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर
चलभाष-९८२६०-३१३४९
तिथि-श्रवण ज्येष्ठ शुक्ल-८, वैक्र.२०७५

भाषण का विषय था 'अफगानिस्तान' किन्तु बोलते-बोलते वह भारत के विरोध में बड़े ही जोश में कहने लगा- 'अंग्रेज शासन को भारत के प्रति विरोध-नीति को और कठोर करनी होगी, जिससे भारतीय जनता को बुरी तरह पैरों तले कुचला जा सके।' ऐसी आग उगलने पर ऊधमसिंह अपने स्थान से उठकर ओडायर के पास जाकर अपने पिस्तौल से दनादन गोलियां दागकर प्राण पखेरू उड़ा दिए। इसके बाद लार्ड जेटलैण्ड, लार्ड लिमेन्टन और सर लेडयूसन को भी अपना शिकार बनाया।

२१ वर्ष के बाद मिला उसको अवसर,
२१ वर्ष तक अन्तर में तूफान पला।
२१ वर्ष तक घाव देश के हरे रहे,
२१ वर्ष तक अन्तरज्वाला में वीर जला।।
२१ वर्ष तक साधना वीर की सजग रही,
२१ वर्ष तक भारत ने सन्ताप सहा।
२१ वर्ष पश्चात् देश का दाग धुला,
जब लन्दन में उस हत्यारे का खून बहा।।
जा पहुंचा ऊधमसिंह सभा को चीर वहां,
उसने हत्यारे को ललकारा। शेष भाग ,,,, पर
भारत मां की जय बोल दाग दी गोली,
फट पड़ा शत्रु-तन से शोणित फव्वारा।।
पिस्तौल वीर की रही गरजती दनदन कर,
ओडायर का तन उसने छलनी कर डाला।
धूल गया दाग भारत मां अरमानों का,
उस क्रान्तिवीर की हुई शान्त अन्तरज्वाला।। (श्रीकृष्ण सरल)

माइकल ओडायर की मौत का समाचार मिलते ही भारत में हर्ष, उल्लास की लहर फैल गयी। लोग रात में ही अपने घरों से बाहर निकलकर खुशी में मग्न हो नाचने और गाने लगे। अगले दिन संसार के समाचार-पत्रों में इस घटना का बड़े-बड़ पृष्ठों में प्रकाशन हुआ। जर्मनी की तत्कालीन सरकार ने अंग्रेज सरकार की अत्याचारी नीति की बहुत निन्दा करते हुए '**ऊधमसिंह के कार्य की खूब प्रशंसा की।**' एक दिन जेल में वह अंग्रेज महिला ऊधमसिंह से मिलने आई, जो कि इस महिला ने ऊधमसिंह का हाथ पकड़ रोका था।' महिला ने पूछा- आपने मुझे गोली क्यों नहीं मारी? **ऊधमसिंह ने कहा- मेडम! हमारी वैदिक संस्कृति स्त्री-जाति पर प्रहार करने की आज्ञा नहीं देती है।** स्त्रियों, बच्चों पर अन्यायी, अधर्मी अंग्रेज लोग ही गोलियां चला सकते हैं। जब न्यायालय के कठघरे में हष्ट-पुष्ट भीमकाय ऊधमसिंह ने एक विजेता सम्राट की भांति चारों ओर नजर दौड़ाई तो दर्शकों में कानाफूंसी शुरू हो गयी। अरे! यह तो पहाड़ जैसा है, इसे देखकर बब्बर शेर को देखने की इच्छा ही नहीं रहती। यह हत्यारा तो बिल्कुल प्रतीत नहीं होता है। मौत के इनाम के प्रति आश्वस्त होकर यह कितना प्रसन्न है। दर्शकों में न जाने कितने विचार हृदय से निकलकर कानों में रस घोल रहे थे। जज ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है? ऊधमसिंह ने बताया- 'राम-मोहम्मद-सिंह-आजाद'। जज ने पूछा-तुम सिख हो या मुसलमान। ऊधमसिंह ने कहा- जज सा. मैं हिन्दुस्तानी हूं। हिन्दूओं का राम-मुसलमानों का मोहम्मद, सिखों का सिंह और भारत का आजाद इन्सान हूं। मैं भारतीय एकता का शीशा हूं। माता-पिता ने शेरसिंह नाम दिया है, एक शेर की भांति बेखौफ विचरण करता हूं। अपने ऊधम से वतन के लिए कार्य करता हूं इसलिए ऊधमसिंह मेरा नाम पड़ा। ऊधमसिंह! तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है, जज ने कहा। ऊधमसिंह ने बताया- जज सा.! हजारों निर्दोष भारतीय लोगों की हत्या के दोषियों को अंग्रेज सरकार मौत की सजा नहीं देने के कारण मैंने माइकल ओडायर आदि गुनाहगारों को मारकर मैंने मेरे भारतीयजनों की आत्माओं को शान्ति प्रदान की है।

जज सा.! अब आप अपने अन्यायी, अत्याचारी नाटक को लम्बा ना खींचो। मुझे मालूम है कि आप न्याय का पक्ष कदापि न लोंगे, मुझे मृत्यु-दण्ड ही देंगे। इसलिए जनाब मुझे जल्दी से जल्दी फांसी पर चढ़ा दी जाए। क्योंकि अंग्रेज सरकार -'अन्धी-बहरी, गूंगी और लंगड़ी-लूली है। अपनी इच्छा के बगैर-नियम, कानून, न्याय, धर्म आदि किसानों से बढ़-चढ़कर लगान वसूलना, असहायों को नालदार जूतों से कुचलना, क्रान्तिकारियों को काले पानी की सजा और फांसी पर लटकाना सारे अत्याचारी कर्म आपके भूषण है। आपकी लुटेरी सरकार भारत से सोना-चान्दी, हीरे-मोती, धन-दौलत लूट-लूट इंग्लैण्ड की बेरी कोर्ट ने ३१ वर्ष पूर्व मदनलाल धींगरा को अत्याचारी कर्जन वायली की हत्या का फैसला फांसी था। आपका फैसला भी फांसी का ही होगा।

इस प्रकार सरदार ऊधमसिंह को दि. ३१ जुलाई १९४० को फांसी दी गई। फांसी के पूर्व ऊधमसिंह ने नहा-धोकर वेद-मन्त्रों का उच्चारण कर खुद अपने हाथ से रस्सी को गले में डाल लिया, ओ३म् शान्ति-शान्ति का जयघोष कर शहीद हो गए। शहीद के शव को इंग्लैंण्ड में गुप्त रूप से दफनाया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात् पंजाब और केन्द्र सरकार के संयुक्त प्रयास से दि. ३१ जुलाई १९७४ में इंग्लैंण्ड से दिल्ली अवशेषों को लाया गया। यहां चण्डीगढ़ होते हुए जन्म स्थान सुनाम गांव में लाकर बाद में दिनांक ३१ जुलाई १९७४ को ही हरिद्वार गंगा नदी में विसर्जित कर दिया। इस प्रकार चौतीस वर्ष बाद शहीद के अवशेषों ने भारतीय माटी, हवा, जल का स्पर्श किया। शहीद की शान में-

भीष्म पितामह, महाराणा की वो आन चाहिए।
वाल्मीकि, चाणक्य, नानक की वो बान चाहिए।।
सुभाष, बिस्मिल, ऊधम की वो शान चाहिए।
न हिन्दू चाहिए, न मुसलमान चाहिए।।
न बौद्ध चाहिए, न सरदार चाहिए।
हिन्दुस्तान को चाहिए, सरफरोशी इन्सान, इन्सान चाहिए।।
क्रान्तिवीरों की महकती रहेगी महक, स्वाभिमान की।
लन्दन में बरसती रहेगी गोलियां, हिन्दुस्तान की।।
हर देशभक्त को प्यार न जीवन में उतना,
जितना इनको अपनी धरती से होता है।
यदि दाग धरा से आंचल में लग जाए,
तो वह उसको अपने गर्म रक्त से धोता है।-सरलजी ■

वाणी का महत्व

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

वाणी का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है। वाणी से बोली गई भाषा वक्ता के भावों की संवाहक होती है। वाणी द्वारा ही मनुष्य अपने भावों को दूसरे के मन में संप्रेषित कर सकता है। वाणी मनुष्य के चरित्र को दर्शाती है और मनोभावों को प्रकटीकरण करती है। वाणी से ही सुख और दुःख उपजते हैं और मनुष्य की शांति और अशांति का सीधा संबंध मनुष्य की वाणी से होता है। तीरों, तलवारों से लगे घाव समय के साथ भर जाते हैं, लेकिन कटु वाणी से मन पर लगा घाव कभी नहीं भरता। इसका इतिहास प्रसिद्ध उदाहरण द्रोपदी का व्यंग्य **''अन्धें का पुत्र अन्धा''** जिससे महाभारत के युद्ध के नींव पड़ गई थी।

इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य को सदा तोलमोल कर बोलना चाहिए। ऋग्वेद में मंत्र आया है **''सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमकृत।''** अर्थात् जैसे चलनी में छान कर सत्तु को साफ किया जाता है, उसी प्रकार बुद्धिमान लोग ज्ञानरूपी चलनी द्वारा वाणी को शुद्ध करके प्रयोग करते हैं और हितैषी विद्वान लोग हित की बातों को समझते हैं। उनकी वाणी में कल्याणप्रद लक्ष्मी रहती है। इस वेद मन्त्र में दो सामान्य सी घर की दैनिक प्रयोग की वस्तुओं सत्तु और चलनी की उपमा दी गई है। जिस प्रकार सत्तु को चलनी से छान कर तिनके, रेत आदि इतर पदार्थों को निकाल दिया जाता है या फिर ना पचने के योग्य कर्कश अंश छान लिए जाते हैं और शुद्ध सत्तु जो कि रेत, कंकर आदि इतर पदार्थों तथा मोटे अपाच्य पदार्थों से मुक्त हो जाता है वह स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी होता है। इस उपमा का प्रयोग वाणी और बुद्धि जैसे सूक्ष्म उपमेयों के लिए किया गया है। वेदमंत्र बड़े स्पष्ट रूप से इस उपमा के माध्यम से संदेश देता है कि मनुष्य को वाणी का प्रयोग बड़ी सावधानी से बुद्धि की चलनी से छानकर करना चाहिए और कभी भी असत्य चाहे वह प्रिय ही क्यों न हो जैसे इतर पदार्थों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साथ ही साथ अप्रिय कटु सत्य का प्रयोग करने से बचना चाहिए। जैसे काने को काना कहना चाहे सत्य ही क्यों ना हो लड़ाई मोल लेने के समान है। कठोर शब्दों में कहे गए हितकर वाक्यों को सुनकर भी मनुष्य रूष्ट हो जाता है। कटु वचन क्रोध की अग्नि में ईंधन के समान उसे भड़का देते हैं जबकि विनम्र कोमल सत्य, क्रोध की अग्नि पर शीतल जल के छींटे के समान होता है। इसीलिए कहा गया है- **''सत्यम् ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात्''** अर्थात् सत्य बोलें प्रिय बोले किन्तु अप्रिय सत्य या प्रिय असत्य न बोलें। किसी के साथ व्यर्थ वैर और शुष्क विवाद न करें। प्रिय होने पर भी जो वचन हितकर ना हो उसे नहीं कहना चाहिए और हितकर बात चाहे सुनने में अप्रिय ही क्यों ना लगे अवश्य कह देनी चाहिए, क्योंकि मलेरिया ज्वर की अवस्था में कुनीन की कड़वी दवा भी मीठी औषधि के समान होती है।

वाणी का संयम मनुष्य के जीवन का आभूषण है। व्यर्थ व अनुपयोगी बोलना भी अनुचित होता है। जो व्यक्ति उपयोगी और अनुपयोगी का अंतर समझ लेते हैं वह कभी व्यर्थ शब्द व्यक्त नहीं करते। महात्मा विदुर ने कहा कि कम बोलने से मन की शक्ति बढ़ती है। प्रश्न का समय पर उपयुक्त उत्तर देना आनंद प्रदान करता है और उचित समय पर कही गई बात ज्यादा वजन रखती है। सही कहा गया है कि पशु ना बोलने के कारण और मनुष्य व्यर्थ कटु बोलने के कारण कष्ट उठाते हैं। जो व्यक्ति अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है। महात्मा गांधी ने कहा कि मौन से अच्छा भाषण दूसरा कोई नहीं, फिर भी यदि बोलना पड़े तो जहां एक शब्द से काम चलता हो वहां दूसरा शब्द नहीं बोलना चाहिए। मौन का महत्व तो उस अज्ञानी से पूछो जो ज्ञानियों की सभा में जा बैठा हो। जो इन्सान तोलमोल कर नहीं बोलता उसे अक्सर कटु वचन सुनने पड़ते हैं। प्रत्येक स्थान और समय बोलने के योग्य नहीं होता, कभी-कभी मौन वाणी से अधिक प्रभावी सिद्ध होता है, इसीलिए कहा जाता है कि धैर्यपूर्वक सबकी बात ध्यान से सुनों, परन्तु अपनी सलाह बिना मांगे मत दो और केवल थोड़े ही उन मनुष्यों को दो जो धैर्यपूर्वक सुनकर उसके अनुसार कार्य करें।

मनुष्य की वाणी का मनुष्य जीवन में अत्यन्त महत्व है। वाणी भाषा के माध्यम से भावों की संवाहक बनती है। मनुष्य को सदा बुद्धि की चलनी से छान कर प्रिय, सत्य ही बोलना चाहिए। अप्रिय सत्य या प्रिय असत्य कभी नहीं बोलें। शब्द का महत्व समझें और व्यर्थ शब्दों का प्रयोग कदापि न करें। ■

खुशहालचन्द्र जी आर्य का अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द गुरुकुल और आर्य समाज मालिग्राम पश्चिम मेदनीपुर का वार्षिकोत्सव विगत २३ मार्च से २५ मार्च तक बड़े ही धूमधाम, उत्साह और उमंग के साथ सुसम्पन्न हुआ। इस उत्सव में प. बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान और आर्य समाज के नेतागण तथा विभिन्न ग्रामवासियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के अनन्य भक्त, सेवा परायण, ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले वैदिक धर्म ध्वज के संवाहक, वैदिक सिद्धान्तों एवं विचारों के प्रचार व प्रसार में रत, सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि तथा आर्य समाज बड़ाबाजार (कोलकाता) के पूर्व प्रधान श्री खुशहाल चन्द्र आर्य जी का सार्वजनिक अभिनंदन दिनांक २५/३/२०१८ को किया गया। श्री खुशहालचन्द्र आर्य जी को महर्षि दयानन्द गुरुकुल, मालिग्राम पश्चिम मेदिनीपुर का प्रधान भी मनोनीत किया गया।

महाभारत काल के बाद महर्षि दयानन्द ने ही सत्य ईश्वर की अनुभूति करवाई

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम व सप्तम समुल्लास में ईश्वर की अनुभूति करवाई व अन्य समुल्लास में संकेत किया कि महाभारत काल से एक हजार वर्ष पूर्व तक समाज में वेदों का पठन-पाठन था, तथा वेदानुसार संस्कार होते थे, और वैदिक संस्कृति व सभ्यता का ही चलन था। सत्थार्थ प्रकाश के प्रथम सम्मुलास के प्रारंभ में ओउम् यह औंकार शब्द परेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओउम) समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे- अकार से विराट अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं। ओउम् यह तो केवल परमात्मा ही का नाम है।

ततो विराडजायत विराजो ओधपुरुषः-।
श्रोताद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत-।। यजुः अ. ३

वेदों के व तैत्तिरीयोपनिषद के प्रमाणों में विराट, पुरुष, देव, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि आदि नाम लौकिक पदार्थों के होते हैं, क्योंकि जहां-जहां उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ, जड़, दृश्य आदि विशेषण भी लिखें हो वहां-वहां परेश्वर का ग्रहण नहीं होता। वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पृथक है, और उपरोक्त मंत्रों में उत्पत्ति आदि व्यवहार है, इसी से यहां विराट आदि नामों से परमात्मा का ग्रहण न हो के संसारी पदार्थों का ग्रहण होता है। किंतु जहां-जहां सर्वज्ञादि विशेषण हैं, वहीं वही परमात्मा और जहां-जहां इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हो वहां-वहां जीव का ग्रहण होता है, ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए।

क्योंकि परमेश्वर का जनम मरण कभी नहीं होता, इससे विराट आदि नामों और जन्मादि विशेषणों से जगत् के जड़ और जीवादि पदार्थों का ग्रहण करना उचित है, परमेश्वर का नहीं (सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास)

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यसतन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समससते।।
- ऋग्वेद

अर्थात्:- (प्रश्न) वेदों में अनेक देवता लिखे हैं, उसका क्या अभिप्राय है?

(उत्तर) देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं जैसी कि पृथ्वी परन्तु इसको कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है। देखो इस मंत्र में कि जिसमें सब देवता स्थित है, वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है। यह उनकी भूल है, जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं। परमेश्वर देवों का देव होने से महादेव इसलिये कहाता है कि वह सब जगत् की उत्पत्ति स्थिति, प्रलयकर्ता, न्यायाधीश, अधिष्ठाता है।

(ऋचो अक्षरे) अर्थात् जो सब दिव्य गुण, कर्म स्वभाव विद्यायुक्त और जिसमें पृथ्वी, सूर्य्यादि लोक स्थित है, और जो आकाश के समान व्यापक सब देवों का देव परमेश्वर है, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःख सागर में डूबे ही रहते हैं। सवर्दा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं।

ईशा वास्यमिंद सर्व यत्किन्च जगत्यान्जगत।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मागृधःकस्य स्विद्वनम-।। -यजुर्वेद

अर्थात्- हे मनुष्य! जे इस संसार में जगत् है, उस सब में व्याप्त होकर जो नियन्ता है वह ईश्वर कहाता है, उससे डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांशा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायचरण रूप धर्म से अपने आत्मा से धर्म को भोग।

अहमिन्द्रो न परा जिव्य इध्र्दंन न मृत्यवे-2 वतस्थे कदाचन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूख सख्ये रिषाधन।।
-ऋग्वेद

अर्थात्- मैं परमैश्वर्यवान सूर्य के सदृश सब जगत् का प्रकाशक हूँ। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूं। मैं ही जगत् रूप धन का निर्माता हूँ। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाला मुझी को ही जानो। हे जीवो ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन को मुझसे मांगों और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत।
स साधार पृथिवीं द्यामु तेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम-।।
-यजुर्वेद

अर्थात्- हे मनुष्यों! सृष्टि से पूर्ण सूर्य्यादि तेज वाले लोकों का उत्पत्ति स्थान आधार और जो कुछ उत्पन्न हुआ **शेष भाग पृष्ठ २० पर**

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान

समाधानकर्ता
- आचार्य सोमदेव आर्य -
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल
ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान)
चलभाष- ८६१९६३५३०७

जिज्ञासा

१. सृष्टि कालगणना के संबंध में अलग-अलग मतभेद है। एक कालगणना है- १,९७,२९,४९,११९ और

दूसरी गणना है-१,९६,०८,५३,११७ सही किसे माने कृपया समाधान करे।

मोहनलाल सगीतरा
आर्य खाचरौद, जिला-उज्जैन (म.प्र.)

समाधान

सृष्टि के कालगणना संबंध में जो दो अलग-अलग विचार हैं वे अपने-अपने स्थान पर ठीक हैं। एक गणना सृष्टि बनाने के आरम्भ से की गई है और दूसरी मानवोत्पत्ति, वेदोत्पत्ति से लेकर की गई है।

वेदोत्पत्ति वाली कालगणना १,९६,०८,५३,११९ ये महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में दे रखी है। इस काल गणना के आधार पर जो एक हजार चतुर्युगी की एक सृष्टि मानी है, वह एक हजार चतुर्युगी पूरी नहीं हो रही है। ९९४ चतुर्युगी बनती है। और जो १,९७,२९,४९,११९ वाली कालगणना है उसके आधार पर एक हजार चतुर्युगी पूरी हो जाती है।

इसको थोड़ा विस्तार से देखते हैं- तैतालीस लाख बीस हजार वर्षों की एक चतुर्युगी बनती है, ऐसी इकहत्तर चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर अर्थात् तीस करोड़ सड़सठ लाख बीस हजार वर्षों का बनता है। ऐसे चौदह मन्वन्तर मिलकर एक सृष्टि काल बनता है जो चार अरब बत्तीस करोड़ संख्या बनती है।

महर्षि ने जो वेदोत्पत्ति का समय एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख तिरेपन हजार एक सौ उन्नीस (वर्तमान वर्ष के अनुसार) दी है, इस संख्या के अनुसार छह चतुर्युगियों का अन्तर आता है। इसको विद्वान लोग इस प्रकार से संगत कर लेते हैं कि वेदोत्पत्ति -मानवोत्पत्ति से पहले सृष्टि रचना के प्रारम्भ होने तक या यूं कहें सृष्टि उत्पत्ति के आरम्भ से लेकर मानवोत्पत्ति तक का जो काल लगा वह तीन चतुर्युगी लगा और इसी प्रकार मानव प्रलय से लेकर सृष्टि के अन्तिम प्रलय तक जो समय लगा वह भी तीन चतुर्युगी होगा। इस प्रकार जो छह चतुर्युगी का भेद हो रहा था वह नहीं रहेगा। अर्थात् एक हजार चतुर्युगियों की एक सृष्टि महर्षि को कालगणना अनुसार ठीक हो जाती है। ■

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान
प्रश्न- आपके
उत्तर- मूर्धन्य वैदिक विद्वान के

समस्त पाठकगणों से अनुरोध है कि आपकी ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, मनुष्य जीवन, धर्म- संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित कोई जिज्ञासा, शंका, अथवा प्रश्न हो तो लिख भेजें। आपकी जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्नों का समाधान वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वान आचार्य सोमदेव जी के द्वारा प्रस्तुत किया जावेगा। अपनी जिज्ञासाएं डाक से **आचार्य सोमदेव जी आर्य,** ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड अजमेर (राज.) के पते पर भेजें। जिसकी प्रति वैदिक संसार कार्यालय के पते पर भी भेजें। एक माह में मात्र एक जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्न करें। **- सम्पादक**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यो का महाकुम्भ

अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : २५ से २८ अक्टूबर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक २५ से २८ अक्टूबर को भारत की राजधानी दिल्ली में यह तृतीय आयोजन आयोजित होगा। देश-विदेश के आर्यजन उत्साहपूर्वक भाग लेंगे।

आर्य महा सम्मेलन की तैयारी को लेकर मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक दिनांक १० जून को आर्य समाज दयानन्द गंज इन्दौर पर सार्वदेशिक सभा से प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य जी की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

बैठक में प्रदेश के स्थान-स्थान से पदाधिकारीगण, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्र प्रकाश जी गान्धी, महामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य उपस्थित रहे। ■

ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

'वेदों की ओर लौटो'- ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

- पं. सत्यपाल शर्मार्य -

पुरोहित एवं भजनोपदेशक

आर्य समाज-देहरी, जिला-मन्दसौर म.प्र.

चलभाष- ८४३५७४६४७४

अथ ऋग्वेद तृतीय मण्डलम्

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
१	१ से ३ तक	विद्वानों की प्रशंसा।
	४, ६ व ७	स्त्री पुरुष के विषय में।
	५वां	पुरुष के विषय में।
	८ से १२ तक	विद्या जन्म की प्रशंसा।
	१३ से २३ तक	विद्या की प्रशंसा।
२	१ व ८	विद्वानों के विषय में।
	२ से ७ तक	अग्नि के गुणों के विषय में।
	९ से १५ तक	अग्नि के गुण।
३	१ से ४ व ७ से ११	विद्वानों के विषय में।
	५ व ६	अग्नि व अग्नि विद्या के उपदेश।
४	१ से ९ तक	विद्वानों के विषय में।
	१० व ११	अग्नि विषयक।
५	१ से ११ तक	विद्वानों के सम्बन्ध से अग्नि के गुण।
६	१ से ११ तक	अग्नि के सम्बन्ध से विद्वानों के गुण।
७	१	विद्युत अग्नि के गुणों का वर्णन।
	२	मनुष्य को वाणी कैसी हो।
	३	राजा के कर्त्तव्य
	४ व ६	मनुष्यों के कर्त्तव्य।
	५वां	कौन महात्मा होते हैं।
	७ व ८	उपदेशक किसके सदृश क्या करते हैं।
	९ से ११ तक	विद्वानों के कर्त्तव्य।
८	१ व ३	मनुष्य किसकी कामना करें व क्या करें।
	२	कौन मनुष्य कल्याण को प्राप्त होता है।
	४ व ५	विद्वान कैसा हो।
	६	मनुष्यों को किनका ग्रहण व त्याग करें।
	७	विद्या से क्या होता है।
	८	अहिंसा धर्म की उन्नति के विषय में।
	९	कौन पूर्ण सुख को प्राप्त होता है।
	१०	कौन विद्वान जन सत्कार को पाते हैं।
	११	ब्रह्मचर्य के अनुष्ठान से क्या होता है।
९	१	मनुष्यों के लिए अहिंसा धर्म का ग्रहण।
	२	विद्यार्थी किसको पाकर सुखी होता है।
	३	कौन जगत् में पूज्य होते हैं।
	४	पाखण्डी लोग कैसे दूर होते हैं।
	५	आत्म ज्ञान के विषय में।
	६	उपदेशक के विषय में।
	७	मनुष्य कैसे सब भय से रहित होते हैं।
	८	मनुष्य ईश्वर का ही ध्यान करें।
१०	१ व २	ईश्वर क्या करता है।
	३	मनुष्य कैसे सुखों को प्राप्त हो।
	४	उपदेशक के विषय में।
	५ से ९ तक	अध्यापक और विद्वान के कर्त्तव्य।
१	१,२,५ से ९ तक	अग्न्यादि के दृष्टान्त से विद्वान क्या करें।
	३	मनुष्यों को किनका सेवन करना चाहिए।
	४	सन्तानों की शिक्षा विषयक।
१२	१ व २	अध्यापक और उपदेशक सम्बन्धी
	३ व ७	मनुष्य क्या करें।
	४,५,६,८ व ९	राजधर्म के विषय में।
१३	१ से ४ तक	विद्वान लोग क्या करें।
	५ से ७ तक	फिर मनुष्य क्या करें।
१४	१	शिल्प विद्या विषयक।
	२	पढ़ना-पढ़ाने के रूप में।
	३ व ४	मनुष्यों नियमों का पालन करें।
	५ व ६	अध्यापक और अध्येता के विषय में।
	७	विद्वानों के तुल्य अन्य लोग आचरण करें।
१५	१	विद्वानों को क्या करना चाहिए।
	२ से ७ तक	मनुष्य क्या करें।
१६	१ से ६ तक	अग्नि के गुण।
१७	१ से ५ तक	अग्नि के गुण।
१८	१ से ५ तक	विद्वानों को क्या करना योग्य हैं।
१९	१	मनुष्यों का धनादि ऐश्वर्य कैसे बढ़ें।
	२ से ५ तक	मनुष्यों को क्या करना चाहिए।
२०	१ से ३ व ५	विद्वानजन कैसे वर्त्ते व उनके कर्त्तव्य।
	४	अग्नि के दृष्टान्त के विषय में।
२१	१,४ व ५	मनुष्यों को क्या करना चाहिए।
	२ व ३	धर्मोपदेशक विद्वान लोग किसके तुल्य रक्षा करते है।
२२	१ से ५ तक	अग्नि के गुणों का वर्णन।
२३	१ से ३ तक	शिल्प विद्या का उपदेश अग्नि के द्वारा।

	४ व ५	मनुष्य क्या करें।
२४	१, ३ व ४	राजधर्म विषयक।
	२ व ५	विद्वानों को कैसे दूसरों की उन्नति करना चाहिए।
२५	१ से ४ तक	सूर्य्य रूप अग्नि के दृष्टान्त से विद्वानों के कर्त्तव्य।
	५	विद्वानों को परमात्मा के तुल्य जगत् को आनन्दित करना चाहिए।
२६	१ से ४ तक	अग्नि आदि से विद्वान क्या सिद्ध करें।
	५ व ६	वायु आदि से क्या सिद्ध करना चाहिए।
	७	मनुष्यों को विद्युत के तुल्य वर्त्तना चाहिए।
	८ व ९	शुद्ध मनुष्य कौन है।
२७	१,३, ४, ५, ८ से १३	विद्वानों का सङ्ग सब करे, विद्वान क्या करें।
	२	अग्नि से क्या सिद्ध होता है।
	६ व १४	मनुष्य क्या करें।
	७ व १५	विद्यार्थी क्या करें।
२८	१ से ३ तक	अग्नि और विद्वानों का वर्णन।
	४ व ५	कौन लोग सुखी होते हैं।
	६	विद्वान लोग कैसा बर्ताव करें।
२९	१ से १५ तक	अग्नि, वायु और विद्युत से विद्वान लोग किस-किस कार्य को सिद्ध करते हैं।
	१६	किन पुरुषों को निश्चल ऐश्वर्य की प्राप्ती।
३०	१ से २२ तक	विद्वानों के कर्त्तव्य का उपदेश।
३१	१ से ३ तक	अग्नि के गुणों के विषय में।
	४	सूर्य रूप अग्नि कैसा है।
	५, १० से १८ तक	विद्वानों के सङ्ग से क्या होता है व विद्वान क्या करें।
	६	कौन स्त्री सुख देने वाली होती है।
	७	कौन पुरुष सुख देने वाला होता है।
	८	कौन सुखी होते हैं।
	९	मोक्ष की इच्छा करने वाले क्या करें।
	१९ व २०	राजा और प्रजा के कर्त्तव्य।
	२१	कौन गुरु होने के योग्य है।
	२२	कौन विजय होते हैं।
३२	१	नित्य कर्म का विधान।
	२	कौन लोग श्रीमान होते हैं।
	३	राजधर्म विषयक।
	४	कौन लोग विद्वान होते हैं।
	५	विद्वानजन क्या करें।
	६ व ११	राजपुरुष क्या करें।
	७ से ९ तक	कैसे ईश्वर की उपासना करनी चाहिए।
	१०	जन्म की सफलता किस प्रकार हो।
	१२ से १७ तक	मनुष्य क्या करें व सुख को कैसे प्राप्त हो।
३३	१ से ५ तक	नदी के दृष्टान्त से स्त्री के कर्त्तव्य।
	६	सूर्य्य के दृष्टान्त से मनुष्य के कर्त्तव्य।
	७ से १३ तक	मनुष्य के कर्त्तव्य यानी मनुष्य क्या करें।
३४	१	सूर्य के गुणों का उपदेश।
	२	राजा-प्रजा सम्बन्धी विषय।
	३ व ४	सूर्य के दृष्टान्त से राजधर्म।
	५	मनुष्य राज्य में अधिकारी हो।
	६	राजा तथा प्रजाजन के कर्त्तव्य।
	७ से ९ तक	विद्वान तथा राजपुरुष के विषय में।
	१०	राजादि जनों को क्या करना चाहिए।
	११	मनुष्यों को कैसे राजा का सेवन करना चाहिए।
३५	१ से ११ तक	मनुष्यों को क्या करना चाहिए।
३६	१ से ५ तक	मनुष्य किस तरह से आचरण से सुख को प्राप्त हो।
	६	विद्वान के गुणों के विषय में।
	७ से ११ तक	राजा और प्रजा के गुण।
३७	१ से ३ तक	राजा के गुण।
	४	प्रजा के गुण।
	५ से १० तक	राजा के विषय में।
	११	राजा और प्रजा का परस्पर सम्बन्ध।
३८	१ व २	विद्वान के विषय में।
	३	भूमि के विषय में।
	४	सूर्य्य के विषय में।
	५	राजा के विषय में।
	६	सभा के कार्य का उपदेश।
	७ व ८	राज विषयक।
	९ व १०	परस्पर भाव से राजा-प्रजा विषय में।

योग शिविर सम्पन्न

जावर। वेद योग महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम केहलारी में चल रहे पांच दिनी योग शिविर का हवन के साथ रविवार को समापन हुआ। शिविर में स्वामी अमृतानंद सरस्वती ने योग के माध्यम से विभिन्न रोगों का निदान, उससे होने वाले लाभ और नियमित योग से बीमारियों पर नियंत्रण के उपाय बताए। शिविरार्थियों ने भी उत्साह के साथ योगासनों का अभ्यास किया। स्वामीजी ने सभी से राष्ट्र की तरक्की और स्वस्थ रहने के लिए स्वदेशी अभियान से जुड़ने का आह्वन किया। इस दौरान गुरुकुल के आचार्य डॉ. सर्वेश सिद्धांताचार्य, शेखर शास्त्री, सोहन शास्त्री, सविता शर्मा सहित समस्त गुरुकुल परिवार मौजूद था। ■

३९	१ से ९ तक	विद्वान के विषय में।
४०	१ से ९ तक	राजा-प्रजा के विषय में।
४१	१ से ९ तक	अग्नि के विषय में।
४२	१ से ९ तक	विद्वान के गुण व सत्कार के विषय में।
४३	१	विद्वानों के विषय में।
	२ से ८ तक	मित्रता के गुणों के विषय में।
४४	१ से ५ तक	सूर्य्य के विषय में।
४५	१ से ५ तक	विद्वानों के विषय में।
४६	१ व २	राजा कैसा हो।
	३	बिजुली कैसी हो।
	४ व ५	विद्वान कैसे हो।
४७	१,२,४,५	राजा के विषय में।
	३	सूर्य्य के विषय में।
४८	१	राजा के विषय में।
	२ व ३	सन्तान की उत्पत्ति के विषय में।
	४ व ५	प्रजा के पालन के विषय में।
४९	१	प्रजा के विषय में।
	२ से ५ तक	राजा के विषय में।
५०	१	राजा के विषय में।
	२ से ५ तक	परस्पर प्रीति के विषय में।
५१	१ से ३ व ७ से १२	राजा के विषय में।
	४ से ६ तक	प्रजा के प्रशंसा के विषय में।
५२	१ से ५ तक	राजा और राज धर्म के विषय में।
	६ व ७ तक	अध्यापक के विषय में।
	८	यज्ञ के अन्न के इकट्ठे करने विषयक।
५३	१,२,६,७,२२ से २४	राजा, राजधर्म व राजा की सेना।
	३	प्रजा के विषय में।
	४,५,८,९ से १९	विद्वान के विषय में।
	२०, २१	राजा के पुरुष के विषय में।
५४	१ से ४ तक व १५	राजा के विषय में।
	५,११,१६ से २२	विद्वान के विषय में।
	६, ९, १०	ईश्वर के विषय में।
	७,८, १२, १३	शिष्य के विषय में।
	१४	वक्ता के विषय में।
५५	१,४,५,७ से ११व १३ से १६, १८ से २२ तक	ईश्वर के गुणों के विषय में।
	२	विद्वानों के कर्त्तव्य।
	३	पूर्व पुरुषों द्वारा किये कर्मों का सेवन कर परमात्मा का दर्शन करें।
	६	परमात्मा के कर्म।
	१२	सभ्यजन प्रजा को आनन्दित करें।
	१७	सूर्य और चन्द्रमा के विषय में।
५६	१ से ४ तक	ईश्वर के गुण।
	५	ईश्वर ने जगत् बनाया।
	६	ईश्वर की प्रार्थना के साथ जगद्विषय का उपभोग।
	७ व ८	राज प्रस्ताव से विद्वानों के विषय में।
५७	१	वाणी के विषय में।
	२	बुद्धि के विषय में।
	३	गृहाश्रम के कृत्य।
	४ से ६ तक	स्त्री-पुरुषों के कृत्य।
५८	१	शिल्पी जन के काम।
	२	उर्ध्व और अध:स्थान विषयक शिल्पी जनों के कृत्य।
	३ से ५ तक	अग्नि आदि पदार्थ चालित यान विषयक शिल्पी कृत्य।
	६	शिल्पी विद्वानों के साथ और लोग परस्पर मित्रता करें तो क्या पावे।
	७	शिल्प विद्या उपदेशार्थ आज्ञा।
	८	शिल्प विद्या सिद्ध यान से जाने आने के बारे में।
	९	शिल्प विद्या के फल।
५९	१	मित्र गुणों का उपदेश।
	२ से ४ तक	ईश्वर और आप्त विद्वान के मित्रपन के विषय में।
	५	मित्र के लिए प्रिय पदार्थ देने के विषय में।
	६	प्रजा मित्र राजा के गुण।
	७ से ९ तक	मित्रपन से ईश्वर के पदार्थ रचना, ईश्वर सेवन व उपासना।
६०	१, ४ से ६ तक	राज विषय
	२	राज शिक्षा
	३	सर्वाधीश परमात्मा की मित्रता का फल।
	७	राज प्रसंग में अमात्य और प्रजा के कृत्य।
६१	१ से ५ तक	प्रात:काल की बेला की उपमा से स्त्री के गुण।
	६	प्रातः बेला के गुण।
	७	बिजुली और शिल्पियों के गुण।
६२	१,२ व १६ से १८	मित्र अध्यापक और उपदेशक के विषय में।
	३ व ४	अध्यापक के विषय में।
	५, ६ व १५	मित्र के विषय में।
	७ व १४	विद्वान के विषय में।
	८	पठन के विषय में।
	९, १० से १३ तक	परमात्मा के विषय में (१०वां निचृद गायत्री मन्त्र)

इति तृतीय मण्डलम् शेष आगामी अंक में। ■

ऋग्वेद में दक्षिणा

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

वैदिक संस्कृति में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म माना गया है। यज्ञ में तीन चीजों को विशेष महत्व दिया गया है- देवपूजा, संगति करण और दान। यज्ञ में कार्य करने वाले ऋत्विजों को जो दान दिया जाता है वह ही दक्षिणा कहलाता है। यज्ञ को उस समय तक सफल नहीं माना जाता है जब तक कि ऋत्विजों को दक्षिणा का भुगतान न कर दिया जाए। दान और दक्षिणा में थोड़ा अन्तर है। दान तो परोपकार की भावना से किसी भी दुःखी, अपंग, निराश्रित व्यक्तियों को बिना उसकी किसी सेवा के दिया जाता है परन्तु दक्षिणा ऋत्विजों को उनकी यज्ञ में दी गई सेवाओं के उपलक्ष्य में दी जाती है। दक्षिणा ऋत्विजों पर कोई उपकार नहीं होता है। वे यज्ञ सम्पन्न कराते हैं उसके बदले में उनको जो कुछ धन, कपड़े, अनाज आदि दिया जाता है। यह अवश्य है कि यज्ञ कराने वाले ऋत्विजों से यज्ञ के पूर्व ही किसी निश्चित मात्रा में धन देने का कोई ठहराव नहीं होता है।

ऋग्वेद मण्डल १० सूत्र १०७ में दक्षिणा पर चर्चा हुई है। इस सूक्त में ११ ऋचाएं हैं। सूत्र के ऋषि आंगिरस तथा देवता दक्षिणा है। अब हम इस सूक्त के आधार पर दक्षिणा पर चर्चा करते हैं।

आविट भृन्महि माघो नमेषां विश्वे जीवं तमसो निरमो चि।
महि ज्योतिः पितृभिर्दत्तमागादुरुः पन्था दक्षिगाया आदिर्शे।।१।।

अर्थ- (**एषाम्**) इन मनुष्यों के लिए (**महि माधोनम् ज्योतिः**) महान् सूर्य का प्रकाश व इन्द्र का ऐश्वर्य (आविःअमूत्) प्रकट होता है। (**विश्वं जीवम्**) सब जीव को (**तमसा**) अन्धकार से (**निद् अमोचि**) पूरा मुक्त कर दिया है। (**महि ज्योतिः**) बड़ी ज्योति (**पितृभिः दत्तम**) पितरों से वा सूर्य की किरणों से दी हुई (**आगात्**) प्राप्त हुई है। (**दक्षिणायाः**) दक्षिणा का (**उरुःपन्था**) विस्तृत मार्ग (**अदर्शि**) देखा गया है।

भावार्थ- दक्षिणा के अर्थ है किसी व्यक्ति को उसके द्वारा किए गये धार्मिक कार्य यज्ञ में सहयोग देने के बदले में उसकी योग्यता के अनुरूप दिया जाने वाला धन है। यह प्रथा बहुत ही उत्तम है। इससे दुर्भावना दूर होती है। देने वाले यजमान में उदात्त भावना जाग्रत होती है और लेने वाले में कृतज्ञता और सद्भावना उत्पन्न होती है।

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्रद्धाः सह ते सूर्येण।
हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्त वासोदाः सोम प्र तिरन्त आयुः ।।२।।

अर्थ- (**दक्षिणावन्तः**) दान-दक्षिणा देने वाले जन (**दिवि**) स्वर्ग में (**उच्चा अस्थुः**) उच्च पद पर स्थित होते हैं। (**ये अश्वदाः**) जो घोड़ा दान देने वाले हैं (**सूर्येण सह**) सूर्य के साथ (**अस्थुः**) स्थित होते हैं। (**हिरण्यदाः**) सूवर्ण के देने वाले (**अमृतत्वं भजन्ते**) मोक्ष को प्राप्त होते हैं। (**हे सोम**) हे श्रेष्ठ वृत्ति वाले पुरुष (**वासोदाः**) वस्त्र देने वाले (**आयुः प्रतिरन्ते**) बड़ी आयु वाले बनते हैं।

भावार्थ- इस ऋचा में दान-दक्षिणा देने का फल बताया गया है। कहा गया है कि जो व्यक्ति दान-दक्षिणा देता है उसे स्वर्ग में उच्च पद प्राप्त होता है। जो व्यक्ति घोड़ा दान-दक्षिणा मे देता है। वह सूर्य के समान तेजस्वी बन जाता है। जो व्यक्ति स्वर्ण दान करता है उसे मोक्ष मिल जाता है तथा व्यक्ति वस्त्र दान करता है उसको दीर्घ आयु प्राप्त हो जाती है। मेरी दृष्टि में यह सब केवल दान-दक्षिणा को बढ़ावा देने के लिए गया है।

कुछ लोग भय से भी दान-दक्षिणा देते हैं।

देवी पूर्तिर्दक्षिणा देवयज्या न कवारिभ्यो नहि ते पृणन्ति।
अथा नरः प्रयत दक्षिणा सोऽवद्यभिया बहवः पृणन्ति ।।३।।

अर्थ- (**देवयज्या**) देवताओं के लिए यज्ञ कराने वाली (**दैवी पूतीः**) देवों को पूर्ण करने वाली (**नहि कवारिभ्यः**) यह बुरे आचरण वालों के लिए नहीं है। (**नहि ते पृणन्ति**) वे एक-दूसरे को भरण-पोषण नहीं करते हैं। (**अथा**) और (**प्रयत दक्षिणासः**) दक्षिणा दान देने वाले पुरुष (**अवद्यभिया**) अपयश के भय से (**बहवःनर;**) बहुत से मनुष्य (**पृणन्ति**) दान से जनों की पूर्ति करते हैं।

भावार्थ- दक्षिणा आचरणहीन मनुष्यों को नहीं दी जाती है क्योंकि वे लोग एक-दूसरे का भरण-पोषण नहीं करते हैं। कभी-कभी दक्षिणा अथवा दान अपयश के भय से भी दिया जाता है।

शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षसस्ते अमि चक्षते हविः।
ये प्रणन्ति प्र च यच्छन्ति सङ्गमे ते दक्षिणा दहते सप्तमातरम् ।।४।।

अर्थ - (**नृचक्षसःते**) मनुष्यों को उपदेश देने वाले वे (**हविः**) अन्नादि भोजन योग्य पदार्थ को (**शतधारम् वायुम्**) सैकड़ों प्रकार से लाभ पहुंचाने वाली वायु को (**स्वर्विदम्**) स्वर्ग को जानने वाले, स्वर्ग को प्राप्त कराने वाले (**अर्कम्**) सूर्य के लिए (**हविः अभि चक्षते**) हवि को भलि प्रकार कहते हैं (**ये संगमे**) जो सबके मिलने के अवसर पर (**पृणन्ति**) पूर्ति करते हैं (**यच्छन्ति**) और दान देते हैं। (**ते दक्षिणाम् दुहते सप्त मातरम्**) वे दक्षिणा के दुह लेते हैं पञ्चभूत, मन और आत्मा से।

भावार्थ - विद्वान जन पञ्चभूत, मन और अहंकार तत्वों से प्रकृति से दक्षिणा प्राप्त कर लेते हैं। ऋत्विज, होता उद्गाता और ब्रह्मा को दान-दक्षिणा देने वाले आदर के योग्य होते हैं।

दक्षिणावान्प्रथमो हुत एति दक्षिणावान्ग्रामणीरग्रमेती।
तमेव मन्ये नृपतिं जनानां यः प्रथमो दक्षिणामाविवाय।।५।।

अर्थ -(**दक्षिणा वान्**) दक्षिणा देने वाला (**प्रथमः हूत;**) प्रथम स्वीकार किया हुआ सन्देश वाहक (**एति**) आता है अर्थात् वह जनता को परोपकार का उपदेश देता है। (**दक्षिणावान् ग्रामणीः**) दक्षिणा देने वाला ग्राम का मुखिया होकर आता है। (**तमेव**) उसी को, दक्षिणा देने वाले को (**जनानाम् नृपतिं मन्ये**) जनता का राजा मानता हूं। (**यःप्रथमः**) जिस प्रथम मनुष्य के (**दक्षिणाम्**) दक्षिणा को (**आ**

वियाय) अन्यों के लिए दक्षिणा से उत्साह बढ़ाता है।

भावार्थ- दक्षिणा देने वाला व्यक्ति जनता को परोपकार का सन्देश देता है। दक्षिणा देने वाले को ही जनता ग्राम का मुखिया बनाती है। वह जनता का राजा होता है। दक्षिणा देने से दूसरे लोगों का भी उत्साह बढ़ता है।

दक्षिणा देने वाले व्यक्ति को नानाप्रकार से सम्मान मिलता है।

तमेव ऋषिं तमु ब्रह्माणमाहुर्यज्ञन्यं सामगामुक्थ शासम् ।
स शुक्रस्य तन्वो वेद तिस्रो यः पथम दक्षिणया रराध।।६।।

अर्थ-(**यः शुक्रस्य तिस्रः तन्वः वेदः**) जो शुक्र के तीन अंगों को जानता है (**यःप्रथमःदक्षिणया रराध**) जिसने प्रथम दक्षिणा से सेवा करी (**तमेव ऋषिम्**) उसको ही ऋषि (**तम् ब्रह्माणम्**) उसको ब्रह्मा (**तम् यज्ञन्यम्**) उसे ही यज्ञ का नेता (**सामगाम्**) साम गाने वाला (**उक्थ शासम्**) वेद स्तोत्र पढ़ने वाला (**आहुः**) कहते हैं।

भावार्थ- शुक्र वह शुभ प्रकार है जिसका योगी को प्रत्यक्ष होता है उसके तीन अंग होते हैं, ब्रह्मचर्य, प्राणायाम और सत्संग। यह प्रकार दक्षिणा देने वाले को भी होता है। जो व्यक्ति दक्षिणा देता है उसे ही यज्ञ का नेता कहा जाता है।

दक्षिणाश्वं दक्षिणा गां ददाति दक्षिणा चन्द्रमुत यद्धिरण्यम।
दक्षिणान्नं वनुते यो न आत्मा दक्षिणां वर्म कृणुते विज्ञानन् ।।७।।

अर्थ- (**दक्षिणा अश्वम्**) दक्षिणा घोड़ा (**दक्षिणा गाम्**) दक्षिणा गाय (**ददाति**) देती है। (**दक्षिणा चन्द्रम्**) दक्षिणा चांदी (**उत यत् हिरण्यम्**) और जो स्वर्ण है, उसे देती है। (**दक्षिणा अन्नम् वनुते**) दक्षिणा अन्न देती है। (**या नः आत्मा**) जो हमारा अन्तःकरण है (**विजानन्**) विशेष ज्ञान रखता हुआ (**दक्षिणाम् वर्म कृणुते**) दक्षिणा को कवच बना देता है।

भावार्थ- दक्षिणा के द्वारा घोड़ा, गाय, चांदी, स्वर्ण, अन्न आदि प्राप्त होता है। दक्षिणा देने वाले को राजा द्वारा भी सम्मान दिया जाता है।

न भोजा मम्रर्नं न्यर्थमोयुर्नं रिष्यन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः।
इदं यद्विश्वं भुवनं स्वश्चतत्सर्वं दक्षिणैभ्यो ददाति ।।८।।

अर्थ-(**भोजाः**) प्रजा पालक क्षत्रिय (**नम्रसः**) मरते नहीं उनका यश रूपी जीवन सदा रहता है। (**निः अर्थम्**) नित्कृष्ट गति को (**न ईयुः**) प्राप्त नहीं होते (**न रिष्यन्ति**) कष्ट नहीं पाते (**भोजाः**) प्रजा पालक (**न व्यथन्ते**) कभी पीड़ित नहीं होते (**इदम् यत् विश्वम् भुवनं**) यह जो सम्पूर्ण भुवन है (**स्वःच**) और स्वर्ग (**एतत् सर्वम्**) यह सब (**एभ्यः**) इन भोजों के लिए (**दक्षिणा ददाति**) दक्षिणा इनको दक्षता और दान (**ददाति**) देता है।

भावार्थ- इस ऋचा में दक्षिणा से प्राप्त होने वाला फल बताया गया है। अब एक ऋचा और देकर विषय को विराम देते हैं।

भोजमश्वाः सुष्ठबाहो वहन्ति सुवृद्रथे वर्तते दक्षिणायः।
भोजं दे वासोऽवता भरेषु भोजः शत्रून्त्समनी केषु जेता ।।११।।

अर्थ - इस ऋचा में भी दक्षिणा देने का फल ही बताया गया है। (**भोजम्**) दानी को (**सुष्टबाहुः**) सुन्दरता से रथ आदि को ले चलनेवाले (**अश्वा**) घोड़े (**वहन्ति**) ले चलते हैं। (**दक्षिणायाः**) दक्षिणा का (**सुवृत्**) अच्छी तरह निर्माण किया हुआ (**रथः**) रथ (**वर्तते**) रहता है। (**भरेषु**) हैं। भीड़भाड़ वा युद्धों में (**भोजम्**) पानी को (**देवासः**) दिव्य शक्तियां (**अवता**) रक्षा करती हैं। (**भोजः**) प्रजा पालक राजा (**समनीकेषु**) संग्राम में (**शत्रून्**) शत्रुओं को (जेता) जीत लेता है। इतिशम् ।

पृष्ठ १४ का शेष भाग **...महाभारत काल**

था और और होगा उसका स्वामी था, है और होगा। वह पृथ्वी से लेके सूर्यलोक प्रर्यन्त सृष्टि को बना के धारण कर रहा है, उस सुख स्वरूप परमात्मा ही की भक्ति जैसे हम करें वैसे तुम लोग भी करो (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम स.)

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपाप विद्धम।
-यजुर्वेद

ईश्वर की स्तुति- वह परमात्मा सब में व्यापक शीघ्रकारी और अनन्त बलवान जो शुद्ध सर्वज्ञ सबका अन्तर्यामी सर्वोपरि, विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध परमेश्वर अपनी जीव रूप सतातन आदि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति अर्थात् जिस-जिस गुण से सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुण (अकाय) अर्थात् कभी शरीर धारण नहीं करता व जन्म नहीं लेता (सप्तम स.)

प्रेम व समर्पण का मार्ग ही ईश्वर से साक्षात्कार की अनुभूति करा सकता है।

हम प्रायः कहते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए ईश्वर का चिंतन करना चाहिए। किंतु बिना अनुभव के हम चिंतन नहीं कर सकते हैं। मन ही सर्वाधिक तीव्रगामी है। विचार ही मन की भक्ति हैं, किंतु जहां मन की सीमा समाप्त होती है वहां से परमात्मा की सीमा शुरू होती हैं। अर्थात् जब संसार के भौतिक विचार भक्ति से उपराम होने पर ही उस ईश्वर की अनुभूति होती है। उपनिषदों में कहा गया है कि ईश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की और सारी कर्मेन्द्रियों का रूख बाहर की ओर रखा और स्वयं हमारे भीतर हमारी हृदय गुहा में विराजमान हो गया। हमारी सारी उपलब्धियां बाहर से प्राप्त होती है। इसलिए हम ईश्वर को बाहर पाना चाहते हैं। इस प्रकार ईश्वर की ओर हमारी पीठ हो जाया करती हैं, हम भीतर को छोड़ कर बाहर तलाश करते हैं। जो चीज हमारे जितनी निकट होती है, उसके होने का आभास उतना ही क्षीण होता है। और उसका पता तब चलता है जब वह चीज हमसे दूर हो जाती है। हमने ईश्वर को अपने भीतर होने का बोध खो दिया है। काश हमने कभी परमात्मा को खोजा होता तो उसको खोज सकते थे। किंतु जब हमने उसे खोजा ही नहीं तो उसे कैसे और कहां खोजे।

इस संदर्भ में हमें एक यह बात याद रखनी चाहिए कि परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि एक प्रबल रचनात्मक शक्ति है, जो अदृश्य है, उसकी शक्ति को ध्यान के जरिये निर्विचार होकर हम अपनी अंतर चेतना में अनुभव कर सकते हैं।

श्रद्धेय मान्य पाठक जी! यह तो महर्षि दयानंद सरस्वतीजी द्वारा रचित ग्रंथों से किचिंत मात्र ईश्वर की अनुभूति का संकेत मात्र किया है। ऋषिवर के पूर्ण ग्रंथों को पढ़ने से ही पूर्ण रूप से ईश्वर की अनुभूति हो सकती है। ■

गणित-ज्योतिष के चार बिन्दु

- डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक' -
बी-७२, आर्य समाज-श्रृंगार नगर
आलमबाग, लखनऊ (उ.प्र.)
चलभाष- ९८३९१८१६९०

वेद के छह अंग है- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। ज्योतिष से तात्पर्य है-'**गणित-ज्योतिष**।' इसे काल-शास्त्र भी कहते है। इसमें अगणित काल-खण्डों की मीमांसा की गई है, यथा-

१. **निमेष** = पलक गिरने में लगा समय।

२. **घटी या घड़ी**= दिन या अहोरात्र का ६०वां भाग=२४ मिनट

३. **मुहूर्त**= दिन या अहोरात्र का ३०वां भाग= २ घड़ी=४८ मिनट

४. **दिन=अहोरात्र**=सूर्योदय से सूर्योदय तक का समय=दिवस +रात्रि=२४ घण्टे।

५. **तिथि**= चन्द्रमा को पृथ्वी के चारों ओर घूमते हुए १२ डिग्री चलने में लगा समय=न्यूनतम ५० घड़ी (२० घण्टे) और अधिकतम ६७ घड़ी (२६ घण्टे ४८ मिनट)

६. **पक्ष**= चन्द्रमा की वृद्धि के १५ दिन अथवा ह्रास के १५ दिन।

७. **चान्द्र मास**= अमावस्या से अमावस्या तक अथवा पूर्णिमा से पूर्णिमा तक की कालावधि= २९ दिन १२ घण्टे।

८. **सौर मास**= पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करते हुए ३० डिग्री चलने में लगा समय = ३० दिन १० घण्टे ३० मिनट।

९. **चान्द्र वर्ष**= १२ चान्द्र मास= ३५४ दिन।

१०. **सौर वर्ष**= पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में लगा समय = ३६५ दिन ६ घण्टे (इत्यादि)।

मौलिक रूप से चार बिन्दु महत्वपूर्ण है- (१) २१ मार्च, (२) २१ जून, (३) २३ सितम्बर, (४) २२ दिसम्बर। सूर्य के चारों और परिक्रमा करते समय पृथ्वी ९०-९० अंश के चार समकोण बनाती है। उपर्युक्त चार बिन्दु इन्हीं चार समकोणों पर स्थित है। इनमें २१ जून को दीर्घतम दिवस, २२ दिसम्बर को लघुतम दिवस और शेष दो दिनों पर दिवस-रात्रि बराबर होते हैं। ये चारों तिथियां अंग्रेजी पंचांग की है और गणित-शास्त्र द्वारा प्रमाणित है। भारतीय इतिहास के गत १००० वर्ष उथल-पुथल और मार-काट के रहे हैं, जिनमें वेधशालाओं का कार्य भलि-भाँति नहीं हुआ। फलस्वरूप पंचांगों में गम्भीर त्रुटियां व्याप्त हो गई हैं। यूरोप ने गत ५०० वर्षों में अनुसन्धान-पर-अनुसन्धान करके अपने पंचांग को परिष्कृत किया है।

भारतीय उत्सव प्राय: चान्द्र वर्ष पर आधारित हैं। चन्द्रमा एक मास में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी करता है अर्थात् ३६० डिग्री घूमता है। वह ३६० डिग्री/३०=१२ डिग्री का कोण बनाने में जितना समय लेता है, उसे तिथि कहते हैं। सब तिथियां समान नहीं होती। लघुतमा तिथि ५० घड़ी, दीर्घतमा तिथि ६७ घड़ी और शेष तिथियां इनकी मध्यस्थ लम्बाइयों की होती है। चन्द्रमा की गति में यह अन्तर अन्य पिण्डों के आकर्षण बलों के कारण आता है।

एक चान्द्र वर्ष ३५४ दिन और सौर वर्ष स्थूलदृष्टया ३६५ दिन का होता है। चान्द्र वर्ष, सौर वर्ष से ११ दिन पहले समाप्त हो जाता है। फलस्वरूप भारतीय उत्सव प्रत्येक वर्ष ११ दिन पहले आ जाते हैं। दो वर्ष में यह अन्तर २२ दिन और तीन वर्ष में ३३ दिन का हो जाता है। तब समायोजन करते हुए एक मास को मलमास (अधिमास) घोषित कर दिया जाता है अर्थात् वह मास ६० दिन का हो जाता है। उसमें दो के बजाए चार पक्ष अर्थात् दो पूर्णिमा और दो अमावस्याएं होती है। प्रथम और चतुर्थ पक्ष को वास्तविक मास और द्वितीय-तृतीय पक्ष को अतिरिक्त मास कहा जाता है। इस समायोजन से अन्तर घटकर तीन दिन रह जाता है। तीन-तीन वर्षों में यह समायोजन नियमित रूप से किया जाता है। इस्लामिक पंचांग भी चान्द्र वर्ष के आधार पर है किन्तु इसमें कोई समायोजन नहीं किया जाता और प्रत्येक वर्ष उनका उत्सव ११ दिन पहले होता जाता है। इस प्रकार एक वर्ष में दो ईद आ सकती हैं किन्तु दो होली नहीं आ सकती।

१=चैत्र	४=आषाढ़	७=आश्विन	१०=पौष
२=वैशाख	५=श्रावण	८=कार्तिक	११=माघ
३=ज्येष्ठ	६=भाद्रपद	९=मार्गशीर्ष	१२=फाल्गुन

उपर्युक्त चित्रानुसार २१ वर्ष को दिवस-रात्रि बराबर और इस कारण मौसम भी समशीतोष्ण होता है। इस समय पृथ्वी सूर्य के साथ ० डिग्री का कोण बनाती है। पृथ्वी घड़ी की विपरीत दिशा में घूमती हुई १२ मासों में सूर्य की परिक्रमा करके ३६० डिग्री का कोण पूरा करती है। अत: ३६० डिग्री/१२=३० डिग्री चलने में लगा समय मास कहलाता है। यह सौर मास है। पृथ्वी का परिक्रमा-पथ '**क्रान्ति वृत्त**' कहलाता है। यह

वृत्ताकार न होकर अण्डाकार है। उसकी त्रिज्याएं भिन्न-भिन्न हैं। अतः प्रत्येक ३० डिग्री चलने में वह भिन्न-भिन्न समय लेती है।

दो मास की समयावधि '**ऋतु**' कहलाती है। चन्द्रमा का शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष मिला कर एक चान्द्र-मास बनता है, पृथ्वी का सूर्य से कोण कुछ भी हो। चैत्र-वैशाख को वसन्त ऋतु, ज्येष्ठ-आषाढ़ को ग्रीष्म ऋतु, श्रावण-भाद्रपद को वर्षा ऋतु, आश्विन-कार्तिक को शरद ऋतु, मार्गशीर्ष-पौष को हेमन्त ऋतु और माघ-फाल्गुन को शिशिर ऋतु कहते हैं।

पृथ्वी अपने क्रान्ति वृत्त पर ३० डिग्री चलती है तो एक सौर-मास होता है, चन्द्रमा के किसी पक्ष की वह कोई भी तिथि हो। सौर मास का पूरा होना संक्रान्ति कहलाती है। दो बार ३० डिग्री अर्थात् ६० डिग्री का कोण पूरा होते ही ऋतु-परिवर्तन हो जाता है। तदनुसार ३३० डिग्री से ३० डिग्री तक वसन्तु ऋतु, ३० से ९० डिग्री तक ग्रीष्म ऋतु, ९० से १५० डिग्री तक वर्षा ऋतु, १५० से २१० डिग्री तक शरद ऋतु, २१० से २७० तक हेमन्त ऋतु और २७० से ३३० डिग्री तक शिशिर ऋतु होती है। तीन-तीन ऋतुओं का एक अयन होता है। वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुओं की ९० से २७० डिग्री तक की समयावधि '**दक्षिणायन**' तथा शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म ऋतुओं की २७० से ९० डिग्री तक की समयावधि '**उत्तरायण**' नाम वाली है।

३६० डिग्री या ० डिग्री की स्थिति वसन्त-सम्पात है। यह वसन्त ऋतु का प्रारम्भ नहीं अपितु मध्य-बिन्दु है। वसन्त को ० डिग्री से ६० डिग्री तक नहीं माना जा सकता। वसन्त के प्रथम दिन और सम्पात के तापमानों में जितना अन्तर है, वसन्त के अन्तिम दिन और सम्पात के तापमानों में भी उतना ही अन्तर है। सम्पात से समान दूरी के अगले-पिछले दिनों पर भी ऐसा ही जानें। यह तभी सम्भव है जबकि वसन्त-सम्पात अर्थात् ० डिग्री का दिन वसन्त का मध्य-बिन्दु हो। इसी दिन वैशाखी संक्रान्ति होती है। इसी दिन सृष्टि की रचना होती है। अब प्रश्न उठता है कि नववर्ष कब से गिना जाए?

पश्चिम जगत् १ जनवरी से नववर्ष मानता है। यह तिथि उसकी आस्था का विषय है। इस पर गणित-शास्त्र का अनुमोदन नहीं है।वह संसार का नेतृत्व कर रहा है और शेष जगत् उसकी पीछे चलने के कारण उसकी बात चाहे-अनचाहे मान रहा है। वसन्त-सम्पात के दिन तक पूरा चैत्र मास बीत जाता है और पूरा वैशाख मास शेष रहता है। नववर्ष की गणना के दो नियम हैं और इनसे तीन दिन निर्धारित होते हैं:-

१. सृष्टि की रचना के लिए आदर्श दिन वसन्त सम्पात है- दिवस-रात्रि समान होने और मौसम समशीतोष्ण होने से। इस २१ मार्च के दिन शक-सम्वत् प्रारम्भ होता है।

२. सूर्य और चन्द्रमा एक तल में हों तो अमावस्या होती है। उससे अगला पल शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा थी जो सृष्टि का प्रथम दिवस था। बारह महीनों में प्रथम मास चैत्र है। अतः चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नववर्ष का प्रथम दिन हुआ। अधिकांश भारतवासी यही मानते हैं।

३.वसन्त-सम्पात से तात्पर्य है कि चैत्र मास बीत गया और वैशाख मास शेष रहा। इस प्रकार बिन्दु (२) में जिस दिन को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा कहा गया, वह वास्तव में वैशाख शुक्ल प्रतिपदा है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा इससे एक मास पहले हुई। अतः नववर्ष और वसन्त का प्रथम दिन २० फरवरी है। यह ज्योतिषाचार्य दार्शनेय जी लोकेश का मन्तव्य है। आचार्य जी से लेखक ने भी ज्योतिष-शास्त्र का अध्ययन किया है।

खगोलीय मानचित्र में सामने की दिशा पूर्व-पीछे की पश्चिम, दाहिनी ओर की दक्षिण और बायीं ओर की उत्तर होती है। पृथ्वी जब दक्षिण-पूर्व-उत्तर मार्ग पर चल रही हो, तब कहा जाता है कि दक्षिण से उत्तर की ओर दौड़ रही है जब उत्तर-पश्चिम-दक्षिण मार्ग पर चल रही हो, तब कहा जाता है कि उत्तर से दक्षिण की ओर दौड़ रही है। यह ९० डिग्री का कोण तब बनाती है जब दक्षिण में दूरतम बिन्दु पर होती है और २७० डिग्री का कोण तब बनाती है जब उत्तर में दूरतम बिन्दु पर होती है।

२१ जून को दीर्घतम दिवस और लघुतमा रात्रि होती है। ज्यों ही ९० डिग्री का कोण पूरा होता है, पृथ्वी दक्षिण से उत्तर की ओर पलटा खाती है। तब सूर्य उत्तर से दक्षिण को जाता दिखायी देता है। यह कर्क संक्रान्ति है। यही सूर्य का दक्षिणायन है। इस दिन ग्रीष्म ऋतु समाप्त और वर्षा ऋतु प्रारम्भ होती है।

२३ सितम्बर को १८० डिग्री का कोण बनता है। यह शरत् सम्पात कहलाता है, जो शरद ऋतु का मध्य बिन्दु है। इस दिन पुनः दिवस-रात्रि बराबर होते और मौसम भी समशीतोष्ण होता है।

२२ दिसम्बर को लघुतम दिवस और दीर्घतमा रात्रि होती है। ज्यों ही २७० डिग्री का कोण पूरा होता है, पृथ्वी उत्तर से दक्षिण की ओर पलटा खाती है। तब सूर्य दक्षिण से उत्तर को जाता दिखाई देता है। यह मकर संक्रान्ति है। यही सूर्य का उत्तरायण है। इस दिन हेमन्त ऋतु समाप्त और शिशिर ऋतु प्रारम्भ होती है। यह घटना आकाश में २१ या २२ दिसम्बर को होती है। संवत् २०७४ में यह २१ दिसम्बर २०१७ को रात्रि ९.५८ बजे हुई थी। संवत् २०७५ में २२ दिसम्बर २०१८ को तड़के ३.५३ बजे होगी।

१४ जनवरी को २७० डिग्री का कोण नहीं बनता और लघुत्तम दिवस नहीं होता। अतः मकर संक्रान्ति भी १४ जनवरी को कभी नहीं होती। ग्वालियर के ज्योतिषाचार्य बृजेन्द्र श्रीवास्तव कहते है- उतरायण की घटना २१ दिसम्बर को होती है किन्तु पंचांग में इसे २४ दिन बाद १४ जनवरी को होना बताया जाता है। इसका कारण है-पंचांग बनाने में ऋतुनिष्ठ वर्षमान २४ मिनट बड़ा है। इस प्रकार प्रतिवर्ष ०.०१६५६ दिन की अशुद्धि बढ़कर प्रति ७१ वर्ष में एक दिन की हो जाती है। अभी यह अशुद्धि २४ दिन की है। यह उत्तरायण २४ दिन बाद १४ जनवरी को बताया जाता है। एक दिन प्रति ७१ वर्ष के हिसाब से सूर्य की मकर संक्रान्ति १५-१६ जनवरी होते हुए मार्च-अप्रैल और मई-जून में पहुंच जाएगी।

मकर-संक्रान्ति की गणना स्पष्ट है। लघुतम दिवस के २७० डिग्री से अगला पल मकर-संक्रान्ति है। कहना न होगा कि यह २१-२२ दिसम्बर को ही होगा। इसके बाद कदापि नहीं। परिवर्तन से गुजर रहे **भारतवर्ष को सही तथ्य सामने रखकर असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण करना चाहिए।** ■

'आँख-मूसली, ओखल-काम, देते ये संकेत ललाम'

- देवनारायण भारद्वाज -
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

वेदमाता गुरु गम्भीर मंत्र श्रृंखाओं के साथ-साथ यदाकदा हल्की-फुल्की फुराहें भी छोड़ देती हैं, जिसे सुनकर मन हास्य विनोद में लोटपोट हो ही जाता है, किन्तु उसका अर्थ हितोपदेश से भरपूर होता है। अथर्ववेद काण्ड-११, सूक्त-३ मन्त्र संख्या ३ पर दृष्टिपात कीजिए।

''चक्षुर्मुसल काम उलूखलम्''

अर्थात् - आंखें मूसल हैं तो कामनाएं ओखली है। काव्यतीर्थ पं. बिहारीलाल शास्त्री के दृष्टांत सागर के प्रसंग से हंसते-हंसते इस मंत्र का अर्थ समझ में सहज ही आ जाता है। चार मूर्खों ने परामर्श किया कि राजा भोज एक कविता पर एक लाख रुपए का पारितोषिक देते हैं। चलो हम सब मिलकर एक कविता बनाएं और एक लाख रुपए प्राप्त कर जीवन भर चैन से रहें।

पहले ने देखा कि सामने रहट से सिंचाई हो रही है, उसकी आवाज को सुनकर उसने कविता की पहली पंक्ति बना दी- **'रहटा घनर घनर धन्नाय।'** दूसरे ने देखा कि सामने कोल्हू का बैल खड़ा-खड़ा भूसा खा रहा है। उसने भी अपनी पंक्ति बना दी- **'कोल्हू का बैल खड़ा भूसा खाय'**। तीसरे ने सामने तीर-तूणीर बांधे हुए एक सैनिक को देखा और बोल पड़ा मेरी पंक्ति भी बन गई- **'तरकस बांधे तरकस बन्द।'** चौथे को और कुछ नहीं सूझा तो बोल बड़ा- **'राजा भोज है मूसलचंद।'** अब उनकी कविता बन गई।

'रहटा घनर-घनर घन्नाय, कोल्हू का बैल खड़ा भूसा खाय।
तरकस बांधे तरकस बन्द, राजा भोज है मूसलचन्द।।'

चतुर्कविमण्डल धारा नगरी में पहुंच गया और दरबार में अपने पहुंचने की सूचना दी। उन्हें निर्देशित किया गया कि पहले वे अपनी कविता राजकवि कालीदास को सुनायें। अनुमति होने पर दूसरे दिन राजा के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे। कालीदास ने तीन कवियों की पंक्तियां ज्यों की त्यों मान ली, किन्तु चौथे कवि की पंक्ति अपमान जनक समझकर संशोधित कर दी। अब चारों कवियों की कविता राजा के सम्मुख यूं प्रस्तुत हुई-

'रहटा घनर-घनर घन्नाय, कोल्हू का बैल खड़ा भूसा खाय।
तरकस बांधे तरकस बन्द, राजा भोज हैं पूनम के चंद।।

सुनकर राजा भोज एकदम रुष्ट होकर बोल पड़े। आपकी तीन पंक्तियां तो ठीक है, किन्तु चौथी पंक्ति का मेल तीन पंक्तियों से नहीं बैठता। इसलिए किसी को भी पुरस्कार नहीं दिया जाएगा। यह सुनकर चौथे मूढ़ कवि ने गुहार लगाई और कहा- महाराज यह पंक्ति मेरी नहीं है। आपके राजकवि कालीदास ने बदल दी है। राजा भोज ने कहा-तुम अपनी पंक्ति सुनाओ। उसने सुनाई- **'राजा भोज है मूसलचंद'** राजाभोज ने कहा अब ठीक है। तुम सबको घोषित राशि दी जाएगी। इसके बाद राजा भोज ने दरबार में सम्बोधित करते हुए कहा- 'महाकवि कालीदासजी! आपने इन चारों को महामूढ़ कहा है और पुरस्कार के योग्य भी नहीं माना है, किन्तु इन्होंने मेरी आंखें खोल दी हैं। अब तक जो कवि आए उन्होंने मेरा अभिमान व अज्ञान को ही बढ़ाया है। किसी ने मुझे बलि व विक्रम बताया, किसी ने मेरे प्रताप को सूर्य व चन्द्र से भी बढ़ा दिया। किन्तु आज इन लोगों ने मुझे ठोकर लगाकर जगा दिया। **वास्तव में मैं मूसलचंद हूं। मूसल केवल धान कूटता रहता है। उसे चावल का रस नहीं मिलता। हमारी कामनाएं ओखली के समान है जो कभी भरती नहीं है। धान आता-कुटता- निकल जाता, ओखली खाली की खाली। परलोक के लिए मैंने क्या शेष बचाया? यह विचारणीय है। ठीक ही कहा है कि वीर लोग तरकस बांधते हैं मृत्यु पर विजय के लिए, ज्ञान-गुणों से भरा तरकस। अविवेकी विलासी लोग कोल्हू के बैल की भांति क्रियाहीन होकर केवल भूसा खाते रहते हैं।**

संसार का रहट चक्र चल रहा है। ऊपर की घड़ियां (पात्र) खाली हो जाता है और नीचे की भर जाती है, वे फिर ऊपर आती और खाली होती जाती। इसी प्रकार आज कोई ऊपर है तो कल नीचे। आज भरा है कल खाली। धन्य वहीं है जो समय रहते अपनी तैयारी कर लेते हैं। ये चारों भले ही तुक्कड़ी हैं, किन्तु इन्होंने मुझे शिक्षा बड़ी दी है। ठीक ही कहा गया है-

जीवन्तु में शत्रुगणाः सदैव येषां प्रसादात सुविचर्णोऽहय् ।
यदायदा मां विकृतं भजन्ते तदा तदा मां प्रतिबोधयन्ति।।

अर्थात् - मेरे विरोधी सदा जीवित रहें। उनकी कृपा से मैं बहुत सावधान हो गया हूं। वे जब-जब मेरा विरोध करते हैं, तब-तब मैं सुबोधवान होकर सजग बनता हूं। तात्पर्य यह कि ऐसा अवसर-कुअवसर आने पर हर कृति कीर्तिमान व्यक्ति को अपनी अन्त समीक्षा अवश्य करना चाहिए। ठीक वैसे ही जैसे हिन्दी कवि ने कहा है-

''निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छबाय।
बिनु पानी साबुन बिना शीतल करे स्वभाव।।'' ■

वृहद वृष्टि यज्ञ का आयोजन

दिनांक- २ से ८ जुलाई २०१८ तक

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान आचार्य विष्णु मित्र जी वेदार्थी बिजनौर (उ.प्र.) के ब्रह्मत्व में आर्य समाज ब्यावर , जिला-अजमेर (राज.) के द्वारा वृहद वृष्टि यज्ञ का आयोजन दिनांक २ से ८ जुलाई तक आयोजित किया जा रहा है।

राष्ट्र के नागरिक जागरुक तो राष्ट्र जागरुक

- श्रुति भास्कर -
धार्मिक प्रवक्ता एवं साम गायनाचार्य
सहारनपुर (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२७४२५५७

यो जागार तं ऋचाः कामयन्ते,
यो जागार तं सामानियन्ति,
यो जागार तं सोम अह् .. (ऋग्वेद-२)
वयंम राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः (यजुर्वेद-९)

अर्थात् सफल जीवन एवं सफल राष्ट्र का मूलमन्त्र है जागरुकता। सफल जीवन से तात्पर्य है स्वस्थ यशस्वी जीवन जीते हुए सम्पूर्ण कामनाओँ की पूर्ति, धन, धान्य से पूर्ण संसार (सोम) संसार के रचयिता परधन्यवादी परमात्मा का धन्यवाद करना अर्थात् भक्ति करना (साम)

वेद मंत्र हमारे जीवन में अनेक रूपों में आते हैं, कहीं उपासना है कहीं ईश्वर स्वरूप, कहीं वर्ण, कहीं कर्त्तव्यबोध कहीं ज्ञान-विज्ञान है, इस वेद मंत्र में चेतावनी दी गई है कि जो जागता है उसी की कामनाएं पूर्ण होती है। हमारे जीवन में वेद की ऋचाएं तभी आती है जब हमारा सम्बन्ध वेद प्रदाता परमात्मा से होता है। हम जागरुक तभी होते हैं जब हमारा सम्बन्ध परम् जाग्रत परमात्मा से होता है।

जागरुकता की मुख्य दो कसौटी है-

१. अपने कर्त्तव्य एवं दायित्व के प्रति सजग रहना।

२. जीवन, परिवार, समाज एवं राष्ट्र में होने वाली घटनाओं की अनदेखी ना करना।

महर्षि दयानन्द जागरुक थे, शिवपिण्ड के ऊपर चूहे की घटना को उन्होंने नजरान्दाज नहीं किया। उस घटना के कारण ही उनकी प्रबल इच्छा ईश्वर प्राप्ति सम्भव हो सकी। जबकि सामान्यजन ऐसी अनेक घटनाओं की अनदेखी कर देते हैं, क्योंकि वह जागरुक नहीं होते।

वेद की ऋचाएं कामनाओं को पूर्ण करती है और हमें जागरुक करती है। यह तभी सम्भव है जब हमारा सम्बन्ध वेद प्रदाता परमात्मा से होता है। अग्निदेव परमात्मा परम जाग्रत एवं त्रिकाल दर्शी हैं, जब हम उसकी भक्ति करते हैं तो हमारे अन्दर भी जागरुकता आती है अग्नितत्व आता है।

यजुर्वेद के नौवें अध्याय में कहा गया है-

वयंः राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

अर्थात् - अपने राष्ट्र को सफल एवं विश्व में अग्रणी राष्ट्र बनाने हेतु हम सदैव प्रयत्नशील रहें। जिस राष्ट्र के नागरिक जागरुक होते हैं, वहां राष्ट्र जागरुक होता है। परम जाग्रत, परम प्रेरक अग्निदेव परमात्मा को ही उपास्य देव मानकर जीवन जीने से जागरुकता आती है, किन्तु इस राष्ट्र के ८० प्रतिशत नागरिक जागरुक नहीं है, क्योंकि ८० प्रतिशत लोगों ने अपना उपास्य देव चेतन के स्थान पर अजाग्रत जड़मूर्ति को या किसी पीर को, सांई को शरीरधारी गुरु को मान रखा है, फिर जागरुकता कहां से आयेगी, वेद और विद्वानों के सम्पर्क में ना आने के कारण विद्वतापूर्ण विचारों का अभाव भी अजागरुकता होने का सबसे बड़ा कारण है।

क्रांतिकारी जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपने आपको समर्पित किया, वेद मंत्र एवं महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रभावित थे। क्रांतिकारी जैनमत, निरंकारी मत, राधास्वामी मत के अनुयायी नहीं थे। वर्तमान में राष्ट्र अनेक समस्याओं से ग्रसित हैं, उसका सबसे बड़ा कारण नागरिकों में जागरुकता का अभाव। राष्ट्र को कमजोर बनाने में अविद्वानों का बहुत बड़ा हाथ है, अविद्वान लोगों को भाग्यवादी, अवतारवादी, राशिफलवादी एवं अजागरुक अपने विचारों से बनाते हैं, क्योंकि उनके विचार वेद के विरुद्ध होते हैं। इसके विपरित विद्वान, राष्ट्र के नागरिकों को पुरुषार्थी, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं जागरुक बनाते हैं।

वर्तमान में आर्य समाज एवं सभी जागरुक समाज के व्यक्तियों को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रगत राजनीति के प्रति सक्रियता दिखानी चाहिए। राजनैतिक पार्टी एवं राजनीतिज्ञों द्वारा उन क्रिया-कलापों या विचारधारा वक्तव्यों का जो समाज एवं राष्ट्र को नुकसान पहुंचाते हैं उनके विरोध करने हेतु सदैव सक्रिय रहें।

अब समय आ गया है कि राष्ट्र को जागरुक बनाने में अपना योगदान करें। जीवन समाज एवं राष्ट्र में होने वाली घटनाओं की अनदेखी ना करें बल्कि उसके परिणाम के प्रति सतर्क रहें एवं दूसरों को सतर्क करें। ■

दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का १८वां वार्षिक उत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। मुख्य अतिथि श्रीमान के.पी. सिंह राणावत, विशिष्ट अतिथि श्रीमती राणावत, श्रीमान डॉ. सक्सेना, श्रीमती साधना सक्सेना, डॉ. सोनल सक्सेना, श्रीमान रामनिवास गदिया, श्रीमती गायत्री सोनी के कर कमलों से बालिकाओं को विद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन-यथा-खेलकूद, शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों हेतु पुरस्कार वितरित किए। विद्यालय मंत्री कृष्णकुमार सोनी ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने अतिथियों का स्वागत और मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिन्धी ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संयोजन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। इस अवसर पर कक्षा आठ की छात्राओं को विदाई भी दी गई। सभी बालिकाओं को डॉ. सुनील पंचोली (यूएसए) ने अपनी माता श्रीमती नलिनी पंचोली की पुण्य स्मृति में भोजन कराया। ■

गान्धी जी के तीन चीनी बन्दरों के प्रतीक रूप में आज का एक बुद्धिजीवी

बुद्धिजीवियों जागो और अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करो

- स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती
तेजेन्द्र नगर-चांदखेड़ा
अहमदाबाद- गुजरात
चलभाष- ८१५५०५५२६०

उपरोक्त शीर्षक को देख, सुन कर आपको हंसी अवश्य आएगी, मगर जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, यथार्थ हमारी समझ में आता चला जाएगा। गांधी जी ने समझदार बुद्धिजीवियों को यह कहा था या निम्न लक्षण बताये थे और आज्ञा दी थी कि सदैव इसी प्रकार से रहना। नहीं तो पछताना पड़ेगा। जो होता है होने दो, लूटपाट, चोरी, डकैती, हत्यायें, नाबालिग क्वारी कन्याओं के साथ वीभत्स बलात्कार, राहजनी, दान चोरी, घूसखोरी, जमा खोरी, लागबग शाही, ताना शाही, वन्शवाद, भाई भतीजावाद, जातिवाद आदि न जाने कितने ही अपराध जो भी हैं उन सबको होने दो। ये कर्म बुरे हैं इसलिए इन्हें...

१. बुरा है इस लिए बुरा सुनो मत। (कान बन्द कर लो) प्रथम चीनी बन्दर का चित्र।

२. बुरा है इसलिए बुरा देखो मत (आंख बन्द कर लो) द्वितीय चीनी बन्दर का चित्र।

३. बुरा है इसलिए बुरा बोलो मत (मुंह बन्द कर लो) तृतीय चीनी बन्दर का चित्र।

उपरोक्त प्रकार के अपराधों से हृदय विदारक चीखें उठेंगी, मगर सुनना मत क्योंकि वे हृदय को ठेस पहुंचायेंगी, दुःख होगा इसलिए सुनना मत।

उन्हीं अपराधों से वीभत्स दृश्य उत्पन्न होंगे, आँखों को पीड़ा होगी, इसलिए देखना मत।

यदि इन कुकृत्यों को सुनोगे, देखोगे तो कुछ बोलोगे, इसलिए मत सुनो, मत देखो और न कुछ बोलो।

उपरोक्त तीन अवस्थाएं तीन चीनी बन्दरों की दर्शाई गई हैं, मगर आज उन तीनों अवस्थाएं जिस पर घटित हो रही है वह है आज का बुद्धिजीवी। गान्धी जी ने उसे आज्ञा दी कि......

१. बुरा सुनो मत तो उसने हाथों से काम बन्द कर लिए।

२. बुरा देखो मत तो उसने हाथों से आँखें बन्द कर ली।

३. बुरा बोलो मत जीभ को ३२ चौकीदार ने अपने अधिकार में लेकर होठों पर ताला लगा दिया।

उपरोक्त तीनों अवस्थाओं का एक ही प्रतीक यानी आज का बुद्धिजीवी

गान्धी की आज्ञा से उपरोक्त बुद्धिजीवी चिर स्थाई समाधी में लीन हो गया। उनकी आज्ञा से तीन ज्ञानेन्द्रिय निष्क्रय हो गई, बाकी दो ज्ञानेन्द्रिय इनके क्रियाभाव से शून्य हो गई। इस प्रकार गांधी जी की आज्ञा का पूर्णरूप से पालन कर रहा है, आज का बुद्धिजीवी। क्योंकि वे अपने समय के राष्ट्र पिता थे। उनकी आज्ञा पालन करना बुद्धिजीवी का परम धर्म तथा कर्म था और होना भी चाहिए था, क्योंकि यह राष्ट्रपिता की आज्ञा थी।

गांधी के आदर्शों की सिद्धान्तों की आज के तथाकथित नेता उनकी ही समाधी पर फूलों की श्रद्धांजलि समर्पित कर झूठी कसम खाते हैं। प्रजा को वायदे कर उनको झूठे सुनहरे सुन्दर सपने दिखाते हैं कि मतदाता इन सुनहरे सुन्दर सपनों का आनन्द लेकर मीठी नींद लेकर सोता रहे। प्रजाजनों तुम मीठे, सुन्दर सपने देखो और हम गान्धी जी की कसमें खाएंगे। उनके आदर्शों और सिद्धान्तों पर चलने का वायदा भी करेंगे, मगर चलेंगे उनके विपरीत ही, क्योंकि हमने मृतक गान्धी की समाधि पर झूठी कसमें खाई थी, जो उन्होंने सुनी नहीं थी, यदि किसी जीवित व्यक्ति के सामने कसम खाई होती तो बात दूसरी थी कि वह कभी वायदा खिलाफी के अपराध में हमारे विरुद्ध कभी कोई एफआईआई दर्ज करा सकता था, मगर अब तो ऐसा कोई भय ही नहीं है और यदि उनकी जगह पर दूसरा कोई नामधारी ऐसा गान्धी आएगा और ऐसा ही काम करेगा तो हम उसे भी गान्धी जी की समाधि के पास ही दफना देंगे। ताकि हमारी आने वाली सन्तानें भी उसकी कसमें खा सकें। और विदेशी नेताओं को तथा सैलानियों को भी हम इसी प्रकार मूर्ख बना ही सकते हैं।

इस प्रकार गान्धी जी का आज्ञा पालक बुद्धिजीवी वर्ग चिर समाधी में लीन हो गया और स्वतन्त्र हो गए आज के ये तथाकथित छोटे-बड़े तक सर्वदेशीय नेता बन्धू। आजादी दिलाने वाले या तो मर गए या मार दिये गए, अथवा शहीद हो गए। पूर्ण आजादी की वसीयत इन्हीं नेताओं बन्धुओं तथा इनके सहयोगियों, सत्ता दिलाने वाले गुण्डा तत्वों को ही मिली। अब उनके हाथ में हजारों हाथों वाली सत्ता है, जिससे सभी अधिकार उनके हाथों में है। सत्ता दिलाने वाले सभी साधन, ब्लैक मनी, गुण्डा तत्व पुलिस सभी उनके साथ में हैं, कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो....

रक्षकों और भक्षकों का एक पवित्र संगम आज प्रयाग के स्थान पर दिल्ली रंग मंच हो रहा है। जिसकी झांकी पूरे देश में उसी प्रकार सुनाई तथा दिखाई दे रही है जैसे कि रेडियो तथा टेलीविजन पर कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाया जा रहा हो।

ऐसे नेताओं की प्रजा तो वही लोग हैं जो उनके प्रशन्सक, समर्थक तथा हर भले बुरे कर्म के सहयोगी हैं। बाकी देश की प्रजा तो जानवर है, जिसे भूलने की भयंकर बीमारी है। जिसे केवल रुखा, सूखा, घास, कूड़ा-करकट ही चाहिए और मलमूत्र में बसेरा करने की आदत पड़ गई है और वस्त्र तो जानवरों के शरीरों पर शोभा ही नहीं देते। नेताओं के सहयोगियों को सभी सुविधाएं सुलभ होती है, इसलिए वे ही उनका

गुणगान करते हैं तो फल भी तो उनको ही मिलेगा जो भक्ति करेगा उसी को सब कष्टों से मुक्ति मिलेगी। कहते हैं कि पौराणिक देवी-देवता कुछ देते थे और आज के ये नेता (कलयुगी देवता) लेता ही लेता है, देता कुछ भी नहीं है। इनके दुष्ट पुजारी पहले ही जाकर प्रपंन्च की व्यवस्था कर देते हैं, ताकि प्रजा का शोषण हो सके और कभी-कभी तो ये दुष्ट पुजारी देवता यानी नेता की अनुपस्थिति में भी देवता के नाम पर काला धन्धा करने में भी नहीं हिचकिचाते हैं। क्यों कि प्रजा को इन कानूनी दन्द-फन्दों की जानकारी होती नहीं है, इसी अज्ञानता का लाभ ही ये दुष्ट लोग उठाते हैं। ये सब इसलिए हो रहा है कि उपरोक्त सभी कलयुगी देवता लोग जानते हैं कि गान्धी जी ने सभी बुद्धिजीवियों को अफीम का डोज देकर रखा है। इसलिए न कोई सुनेगा, न कोई देखेगा और न ही कोई बोलेगा ही। क्योंकि हम जो भी कर रहे हैं, वह सब बुरा ही तो है। इस प्रकार से गान्धी जी ने प्रत्येक बुरे काम करने की पूरी तरह से आजादी दे रखी है। गान्धी बाबा भगवान आपका भला करे।

लेखक का तो अभी यही कहना है कि अपराधों का घढ़ा अभी भी भरा नहीं है। अभी उसमें एक भयंकर विस्फोट की आवश्यकता है जिसकी चिन्गारी से आंखें चकाचौंध होकर बन्दर पर से हाथ अपने आप हट जाए, उससे उत्पन्न वायु तरंगों से उसका हृदय कम्पन कर उठे तो उसके मुंह से स्वतः ही चीख निकल जाए। तब से तीनों ज्ञानेन्द्रिय आश्चर्य चकित होकर कहेंगी कि हाय यह क्या हो गया? क्या हो रहा है? तब अन्य दो ज्ञानेन्द्रिय सुषुप्त अवस्था में पड़ी हुई उनींदी अवस्था से सचेत अवस्था में आती हुई, अपने कार्य में स्वतः ही लग जाएगी। यह सब तब ही होगा जब उपरोक्त सभी अपराधों का घड़ा भर जाएगा। इस अधूरे घड़े को भरने के लिए आशाराम बाबा, रामपाल या बाबा राम रहीम और न जाने अन्य कितने बाबाओं तथा अन्य कितने ही राजनेताओं के प्रयत्न जारी हैं।

गान्धीजी की आज्ञा का उल्लंघन गत कुछ वर्ष पूर्व कुछ बुद्धिजीवियों ने कर दिया। कानों की उंगलियां कुछ ढीली पड़ने से कुछ सुनाई दिया, देखने की जिज्ञासा नेत्रों में हुई तो आँखों पर से हाथ स्वतः ही हट गए। उपरोक्त दोनों इन्द्रियों के क्रिया कलाप विचलित होकर मुंह पर से दोनों हाथ स्वतः उठ गए और जीभ बोल उठी कि बुरा हो गया बुरा हो रहा है। इन तीनों चीनी बन्दरों व नामधारी बुद्धिजीवी ने कहा कि तुम ये अधिकार इनको दे दो क्योंकि तुम इसके योग्य नहीं हो। यह कहते समय उपरोक्त बुद्धिजीवी यह भूल गया कि दोनों ही एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

तो पूरा देश यह अनुभव कर रहा है कि उन चीनी बन्दरों की मानो दशा क्या हो रही है कि जैसे पत्थर की मूर्ति। कान खुले हैं मगर सुनने लायक नहीं, आंखें खुली हैं मगर देखने लायक नहीं, जीभ स्वतन्त्र है मगर हिल नहीं सकती। यह गान्धीजी का ही श्राप है कि आज्ञा का उल्लंघन करोगे तो पछताओगे। पूरा शरीर ऐसा हो गया है कि मानो लकवा मार गया हो।■

आर्यो! जगत् बचाओ तुम

व्याकुल है सारा संसार, आर्यो! जगत् बचाओ तुम।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।

वेद ज्ञान है ईश्वर वाणी। वैदिक वाणी है कल्याणी।।
ईश्वर है जग का आधार, सकल जग को समझाओ तुम।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।१।।

जब वैदिक प्रचार यहां था। आपस में तब प्यार यहां था।।
सब करते थे परोपकार, परोपकारी बन जाओ तुम।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।२।।

मानव भूल गए मानवता। गर्ज रही है अब दानवता।।
जीना हुआ यहां दुश्वार, जगत् के कष्ट मिटाओ तुम।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम ।।३।।

मची हुई है आपा-धापी। है उद्देश्य फकत अब खा-पी।।
गऊओं पर चल रही कटार, पापियों के गढ़ ढाओ तुम।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।४।।

पिता-पुत्र आपस में लड़ते, पति-पत्नी है रोज झगड़ते।
भाई-भाई में तकरार, धर्म का मर्म बताओ तुम।।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।५।।

पाखण्डी हैं अब संन्यासी, निश-दिन करते हैं बदमाशी।
नेता है गुण्डें गद्दार, खलों के शीष उड़ाओ तुम।।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।६।।

मानव तन अनमोल साथियों, बोलो मीठे बोल साथियों।
यह है सच्चे सुख का सार, इसे बेशक अजमाओ तुम।।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।७।।

राम-भरत, लक्ष्मण बन जाओ, बनो कृष्ण, जग में यश पाओ।
कर दो दानव दल संहार, सुदर्शन चक्र उठाओ तुम।।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।८।।

स्वामी दयानन्द तपधारी, योगी, ज्ञानी, जग हितकारी।
जो कर गए विश्व उद्धार, सन्त की महिमा गाओ तुम।।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।९।।

"नन्दलाल" निर्भय अब जागो, करो मेल, सब झगड़े त्यागो।।
हो जाओगे भव से पार, प्रेम रस धार बहाओ तुम।
जग में करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ तुम।।१०।।

विश्वकर्मा कुल गौरव
- पं. नन्दलाल निर्भय -
बहीन, जनपद- पलवल, हरियाणा
चलभाषः ९८१३८४५७७४

शिक्षा-संस्कार, सभ्यता और संस्कृति के बिना अधुरी है

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष- ०९५७५७९८४१२

राजा (शासन) शिक्षा, न्याय, चिकित्सा और धर्म की व्यवस्था स्वयं और पूर्णतया नि:शुल्क करें और ये चारों हमारी वैदिक परम्परा, सभ्यता और संस्कृति के अनुकूलपूर्ण संस्कारित हो, ताकि धर्म, न्याय और समाज की रक्षा हो सके। मानवता बनी रहे। आज मैकाले के समय की पाश्चात्य सभ्यता और फेशनपरस्त जीवन शिक्षा प्रणाली मूलक न होकर पूर्णतया जीविका मूलक होकर बहुत महंगी है? गरीब और आम-आदमी की पहुंच से शिक्षा-न्याय व चिकित्सा बहुत दूर है फिर समाज में समरसता आएगी कैसे? हर क्षेत्र में राजनीति और व्यापारीकरण प्रवेश कर गया है। केवल भौतिक तुला पर तोले जाते हैं। आध्यात्मिक पहलु पंगु होता जा रहा है। **'विद्या दधादि विनयम् विनयाति याति पात्रताम् पात्रत्वात धनं-धनांत् धर्मम् च सुखम्'** कहां रही। इसमें केवल भौतिक, वैज्ञानिक, टेक्नोलॉजिक विकास हुआ है। शिक्षा ने आर्थिक ग्राफ बढ़ाया है वह भी पैकेज दे रही है जो हर गरीब आदमी को संभव नहीं है। स्कूल, कान्वेंट, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, कोर्स कोचिंग व पैकेज बड़ा शहर या विदेश। माता-पिता गुरु आचार्य व अपनों से दूर करने की शिक्षा। खाओ-पियो और मौज उड़ाओ। दिल के बजाय दिमाग को शार्प करने वाली शिक्षा जिससे भावनात्मक, पारिवारिक रिश्ते दूर होते जा रहे है। माफ करना, कुछ अपवाद छोड़कर आज का युवक उग्र, आवेशी, असहनशील और अनुशासनहीन होता जा रहा है। माता-पिता, गुरु या वरिष्ठ कुछ हिदायत या सीख देने से डरते हैं। कही उलटा-सीधा जवाब न मिल जावे या कुछ कर न बैठे। हम देख रहे हैं शिष्टाचार, सदाचार और संस्कारविहीन शिक्षा से समाज का कितना नैतिक स्तर गिर गया है। विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्ति परेशाम् पर पीड़ानाय बन गई है। आन्दोलन तोड़फोड़, जाम, आगजनी व अनर्गल देश द्रोह के नारे आये दिन होते हैं।

नीचे से ऊपर तक या ऊपर से नीचे तक अनैतिक कार्यों का दिग्दर्शन देखने को मिल सकता है। समाज में भ्रष्टाचार, लूटपाट, अपहरण, बलात्कार, गबन, हवाला और आतंक मचाने वाले कौन सी शिक्षा और संस्कार ले कर आए हैं। **क्या रामराज व प्राचीन आश्रम गुरुकुलों की शिक्षा व आदर्श शिक्षा और संस्कार केवल किताबों में ही रह गए हैं? ज्ञानाय दानाय च रक्षणाम वाली शिक्षा कहां गई?** जब तक शासन व समाज की गाड़ी भौतिक व आध्यात्मिक दोनों पहियों पर समान रूप से भार रखकर नहीं चलेगी नई भावी कर्णधार पीढ़ी-शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा और संस्कारित उत्तम चरित्रिक जीना नहीं सीखेगी तब तक भारत के भविष्य (गुरु कहलाने) को कोई भी पार्टी या सरकार नहीं बदल सकती। जनजनायक, संत और सेवक की कथनी और करनी में लेशमात्र भी अन्तर नहीं होना चाहिए और इसके लिए सबको शिक्षा प्रणाली व कोर्स में प्राचीन वैदिक गुरुकुल पद्धति आदर्श शिक्षा पूर्ण रूप से लागू करना होगी। ईमानदारी और सत्यमार्ग ही राष्ट्र को बचा सकता है। इसे जाति वर्ग सम्प्रदाय, समय व स्थान के भेदभाव से न देखा जाए। इसके लिए कुछ संस्थाएं गुरुकुलम अच्छा काम कर रहे हैं। सर्व भवंतु सुखीनः व वसुधैव कुटुम्बकम के लिए सत्य मेव जयते जरूरी है। सभी नेता नायक, वैज्ञानिक, संत, विद्वान व विशेषज्ञ एक होकर तभा सभी आर्य समाज प्रतिनिधि सभाएं धर्म सम्प्रदाय, सामाजिक संस्थाएं एक महा सम्मेलन कर संस्कारित, नैतिक शिक्षा के सूत्र बना कर सरकार को ज्ञापन देकर बदलाव का दबाव बनावे तो परिणाम अच्छे होंगे। क्योंकि राष्ट्र हित सर्वोपरि है। राष्ट्र सही व सुरक्षित तो सभी सुरक्षित। इसमें पक्षपात या राजनीति जैसी कोई बात नहीं है। हमारा आशय सुराज रामराज से है। ■

परोपकारी बनें

- महात्मा चैतन्यमुनि -
महादेव, सुन्दरनगर
जिला-मण्डी , हिमाचल प्रदेश
चलभाष - ९४१८०५३०९२

उपनिषद् में कहा गया है- **उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निवोधत्** (कठो.) उठो जागो और शुभ कर्मों के द्वारा श्रेष्ठता प्राप्त करो-Rise, awake and achieve excellence through good actions वास्तव में देखें तो व्यक्ति के पास जो कुछ भी है अन्ततः वह परमात्मा की अपार कृपा से ही है इसलिए जो व्यक्ति अपने मन, बुद्धि तथा धन आदि को परोपकार में लगा देता है, उसी का जीवन वास्तव में सार्थक है, क्योंकि परोपकार करना ही जीवन का वास्तविक यज्ञ है। नीतिकारों का तो यहां तक कहना है कि परोपकार से प्राप्त पुण्य सौ यज्ञों (अश्वमेध) से भी बढ़कर होता है। हमारे शास्त्रों में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है, उसके पीछे यही भाव है कि केवल अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए किया गया काम ही वास्तव में श्रेष्ठ होता है। यज्ञ हमें त्याग करना सीखाता है.... यज्ञकर्ता की भावना **'मम'** की नहीं बल्कि **' इदं न मम् '** की होती है, उसका आदर्श वाक्य होता है- Maximum for dthers, minimum for self. उसका स्वभाव ही ऐसा बन जाता है कि स्वयं से पूर्व दूसरों का हित देखता है। ऋग्वेद में एक स्थान पर यज्ञ को ब्रह्माण्ड की नाभि कहा गया है, उसका भी भाव यही है कि जहां त्याग की भावना समाप्त हो जाती है, वहां से सुख, समृद्धि, समरसता

और संवेदना आदि पलायन कर जाती है और जहां त्याग एवं परोपकार की भावना होती है वहां पर परिवार, समाज, देश एवं विश्व का चतुर्दिक विकास होता है.... जिस प्रकार हमारे शरीर की केन्द्र बिन्दु नाभि को माना जाता है, उसी प्रकार यह त्याग एवं परोपकार की वृत्ति ही समूचे ब्राह्मण्ड का केन्द्र बिन्दू है जहां तक तथा जब तक एक-दूसरे के प्रति यह त्याग व समर्पण की भावना बनी रहती है तभी तक प्रेम, सौहार्द्र और समरसता बनी रहती है, जहां भी अपना स्वार्थ आगे आ जाता है वहीं पर ईर्ष्या, द्वैष तथा वैर-वैमनष्य हो जाता है। हमारे इतिहास में कितने ही ऐसे उदाहरण हैं कि **मम** की भावना का आश्रय लेकर परिवार के परिवार नष्ट हो गए। सबसे बड़ा उदाहरण तो रावण, कंस तथा दुर्योधन का है। इनमें यदि मम की भावना न होती तो इनका इस प्रकार से समूल नाश कभी न होता....

मनुष्य की मनुष्यता तो इसी में है कि हम आपस में बांटकर खाएं। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि हम समाज में एक दूसरे के सहयोग से ही जीवित रहते हैं। समाज सामूहिक विकास एवं व्यवहार का ही तो नाम है, बल्कि यदि यूं कहें कि समाज बना ही एक दूसरे के सहयोग के लिए है तो और भी अधिक उपयुक्त रहेगा। यदि हमें समाज सहयोग न दे तो हमारा जीना दुभर हो जाएगा। कल्पना करो कि हमारा समाज हमसे कहे कि आज से हममें से कोई भी तुम्हारा सहयोग नहीं करेगा। तुम अपनी आवश्यकताओं को स्वयं पूरी करो। तुम्हें अपने लिए स्वयं ही अन्न उगाना है, स्वयं ही सब्जियां उगानी है, स्वयं ही अपने लिए वस्त्रों की व्यवस्था करनी है, स्वयं ही वाहनों का निर्माण करना है, तुम्हें अपने रहने, खाने-पीने, लिखने आदि की वस्तुओं का स्वयं ही निर्माण आदि करना है... स्वयं ही अपने लिए भवन बनाओ, गैस व बिजली आदि का स्वयं अपने लिए निर्माण करो... हम कोई भी किसी प्रकार की तुम्हारी सहायता नहीं करेंगे। यदि ऐसा हो जाए तो हम एक दिन भी बिना दूसरे के सहयोग के जीवित रह सकते हैं क्या? नहीं बिलकुल भी नहीं। इसीलिए हम यदि समाज से सहयोग लेते तो उसे सहयोग देना भी हमारा नैतिक दायित्व बन जाता है। सहयोग, प्रेम, सौहार्द्र, संवेदना और सद्भाव नहीं होगा तो हमारी स्थिति कैसी होगी इस सम्बन्ध में अकबर और बीरबल का एक बहुत प्रसिद्ध किस्सा है। एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा कि बीरबल क्या कारण है कि भेड़ों, गायों, गधों तथा घोड़ों आदि के तो समूह देखने को मिल जाते हैं मगर कुत्तों के नहीं। बीरबल ने कहा कि जहांपनाह इसका उत्तर मैं आपको कल दूंगा। बीरबल ने दो कमरों में बहुत सी खाद्य सामग्री रख दी और फिर एक कमरे में भेड़ों को तथा दूसरे कमरे में कुत्तों को बंद कर दिया। अगले दिन बीरबल अकबर को लेकर उन कमरों में गया। पहले वह भेड़ों वाले कमरे में गया तो देखा कि सभी भेड़ें सामग्री खाकर मजे से जुगाली कर रही थीं। जब वे कुत्तों वाले कमरे में गए तो दृश्य बड़ा ही भयानक और दयनीय था। खाद्य सामग्री तो ज्यों की त्यों पड़ी हुई थी, मगर सभी कुत्ते एक दूसरे पर गुर्रा रहे थे, काट रहे थे... लहूलुहान थे। किसी की आंख फूटी हुई थी तो किसी का कान कटा हुआ था। बीरबल ने उत्तर दिया कि महाराज यही कारण है कि कुत्तों के समूह देखने को नहीं मिलते हैं। इन्होंने आपस में एक-दूसरे के लिए जीना सीखा ही नहीं है। इसीलिए कहावत प्रसिद्ध है कि कुत्ते का कुत्ता बैरी।

व्यक्ति का वास्तविक मूल्यांकन उसकी धन-दौलत से नहीं बल्कि उसके अच्छे या बुरे विचार व व्यवहार से किया जाता है। अपने लिए उसने कितना किया है यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना यह कि उसने दूसरों के लिए क्या किया है... कहते हैं कि एक बार तैमूरलंग ने बहुत से गुलाम पकड़े। पकड़े हुए गुलामों को बेचने के लिए वह स्वयं ही मोलभाव आदि करता था और सौदा तय होने पर उन्हें बेच देता था। उसके द्वारा पकड़े हुए गुलामों में से एक बार तुर्किस्तान के दार्शनिक अहमदी भी थे। उसने उनसे पूछा कि बताईए तुम्हारे पास में खड़े इन दो गुलामों की कितनी कीमत होगी? अहमदी ने कहा- ये समझदार मालूम पड़ते हैं अतः इनकी कीमत चार-चार हजार अशर्फी से कम नहीं हो सकती है। तैमूरलंग ने अकड़ कर पूछा कि तो फिर तुम यह भी बताओ कि मेरी कितनी कीमत होगी? अहमदी ने तैमूरलंग को देखा और फिर कुछ देर तक सोचकर कहा- दो अशर्फी। तैमूर यह सुनकर गुस्से से लाल-पीला हो गया और बोला अहमदी इतने पैसों की तो मेरी चादर ही है। दार्शनिक ने पुनः एक बार तैमूर की ओर देखा और गंभीरता से बोला- यह कीमत तो मैंने तुम्हारी चादर की ही बताई। तुम्हारे जैसे अत्याचारी की कीमत तो एक छदाम भी नहीं हो सकती है। निर्भिक अहमदी द्वारा कहे गए इस सत्य ने तैमूर को भीतर तक हिलाकर रख दिया तथा उसने अहमदी को मुक्त कर दिया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसकी श्रेष्ठता इसी में है कि वह स्वयं को तो प्रेम करे ही मगर संसार के समस्त प्राणियों के प्रति उसके हृदय में प्रेम की भावना होनी चाहिए। जहां प्रेम होगा वहीं संवेदना होगी और जहां संवेदना होगी वहीं सेवा भी होगी। यह एक दूसरे की सेवा ही परोपकार है। यही समजिक समरसता और उन्नति का आधार है तथा यही मानवीयता का आभूषण भी है। स्वार्थ की भावना से स्वार्थ का ही विस्तार होता है, मगर प्रेम और त्याग की भावना से प्रेम और त्याग का वातावरण बनता है, जिसके हृदय में प्राणी मात्र के प्रति प्रेम होगा, वही इस प्रकार की कामना कर सकता है कि -**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्।** वास्तव में सज्जन व्यक्तियों का दूसरों को सहयोग देने का एक स्वभाव सा ही बन जाता है। सूर्य कमल समूहों को विकसित करता है, चन्द्रमा कुमुदिनियों के समूह को प्रफुल्लित करता है और मेघ भी बिना मांगे ही जल देता है। इसी प्रकार सज्जन लोग भी स्वाभाविक रूप से ही परोपकार के कार्यों में लगे रहते हैं। परोपकारी जनों की तुलना करते हुए कहा गया है कि वृक्ष फल लगने पर नीचे की ओर झुक जाते हैं और नए-नए जलों से भरपूर बादल भी पृथिवी की ओर पर्याप्त नीचे तक लटक जाते हैं। वास्तव में सत्पुरुष सम्पत्ति के आने पर नम्र हो जाते हैं, क्योंकि परोपकारी जनों का तो यह स्वभाव ही है। किसी नीतिकार ने बहुत ही सुन्दर कहा है कि करूणा से परिपूर्ण परोपकारी जनों के कान शास्त्र-ज्ञान से सुशोभित होते हैं न कि कुंडलों से। हाथ दान से शोभित होते हैं न कि कंगनों से और उनका शरीर परोपकार करने से सुशोभित होता है न कि चन्दन लेप से। एक बहुत ही सुन्दर एवं सार्थक उपमा यह दी जाती है कि वृक्ष स्वयं अपने फलों का सेवन नहीं करते हैं और सरोवर भी अपने जल को नहीं पीते हैं। इसी प्रकार संसार में परोपकारी मनुष्यों ने दूसरों के उपकार के लिए ही शरीर धारण किया होता है।■

अनेक घरेलू रोगों की सस्ती रामबाण औषधि हल्दी

वात, पित्त, कफ इन तीनों दोषों की विकृति पर हल्दी उपयोगी है, हल्दी में रक्त को शुद्ध करने का गुण है।

आयुर्वेदिक मत- तिक्त कढ़े रस रूक्ष लघु गुण उष्णवीर्य और कटुविपाक होता है त्रिदोष नाशक वेदना स्यापन, रुचिकारक, अनुलोमन, पित्त रचेक और कृमिनाशक है। कुष्टनाशक, दुग्ध शोधक और मुक शोधक है।

प्रमेह, ज्वर, रक्त विकार, जलोदर और नाड़ी शूल में लाभदायक इसका लेप, सूजन, दर्द, खारिश और वृणों को ठीक करता है। इसका धूम्र सूंघने से श्वांस, हिचकी और बेहोशी दूर होती है धुआं, बिच्छू के काटे हुए स्थान के दर्द को मिटा देता है।

आधुनिक मत- इसमें उड़नशील तेल १ प्रतिशत कक्युमिमन नामक तत्व और टरमैरिक आयल पाया जाता है।

डॉ. आर.एन. क्षोरी ने लिखा है कि हल्दी ताकत देती है पीलिया या पुराने कफ के रोग को दूर करती है। यकृत और मूत्र संस्थान सम्बन्धी रोगों में लाभ करती है बिना दर्द की सूजन को मिटाने के लिए सज्जी खार के साथ हल्दी का लेप किया जाता है। पिसी हल्दी को तिल के तेल में मिलाकर लगाने से चर्म रोग दूर होता है।

डॉ. देसाई का कहना है कि नजला, ठंड प्रमेह और प्रदर तथा चर्म रोगों के लिए हल्दी उत्तम द्रव्य है। हल्दी तीखी, कड़वी, रूक्ष सूखी गर्म और शरीर के वर्णो को अच्छा बनाने वाली है।

प्रयोग-

गर्म दूध में चुटकीभर हल्दी डालकर पीने से स्वरभेद में लाभ होता है और दबी हुई आवाज खुल जाती है।

गर्म दूध में हल्दी और घी डालकर पीने से जुकाम, कफ, खांसी दूर हो जाती है।

हल्दी चूर्ण एक तौला और चार तौले दही का सेवन से पीलिया दूर होता है।

बकरी के मूत्र में हल्दी मिलाकर कब्जियत में लाभ होता है।

हल्दी और शकर पानी में मिलाकर पीने से मूर्छा दूर होती है।

हल्दी और कली चूने का लेप करने से चोट की सूजन मिटती है।

हल्दी को घिसकर थोड़ा गर्म कर जन्तू के डंक पर लेप आराम देता है।

हल्दी का धूएं का भस्म लेने से सर्दी जुकाम मिटता है।

हल्दी की बुकनी अंगारे पर डालकर उसका धुआं लाभ देता है।

हल्दी, फिटकरी और इमली के पान इन तीनों को समान भाग लेकर पीसकर उसकी पुटली बनाकर आंखों पर सेक लाभ करती है।

हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय, अमरोहा, उ.प्र.
चलभाष - ९४१२३२२४६०

प्रेरक संस्मरण –

आज मन बहुत व्यथित हुआ

मेरा एक सेवक (अर्जुन) की पत्नी उम्मीद से थी। पंखुरी मेरी बेटी को भी लगभग तभी प्रसव होने वाला था। हम तैयारियों में जुटे थे। कुछ बाजार से झबले लेने गए तो १० एक खरीदे, मुझे तो सारा बाजार पसंद आ रहा था, किन्तु उसने और लेने से मना कर दिया। कहा कि कुछ दिन में बच्चा बढ़ जाता है और सब बेकाम के रह जाएंगे। इस पर मैंने कहा कि कम से कम २१ जोड़े रखने की प्रथा है। वे बोली तो फिर १० एक अर्जुन के बच्चे के लिए ले लेते हैं। बेटी पंखुरी की सुलझी सुंदर सोच की मैं हमेशा कायल हो जाती हूं। हमने वैसा ही किया और फिर bedding, bottles, nappies, booties rattlers, blankets सब दो-दो लिए गए।

अर्जुन को दिया तो वह भी बहुत खुश हुआ। पिछले हफ्ते गांव से लड़का होने की खबर आई तो हमने शीघ्र उसको सब सामान के साथ रवाना कर दिया। पैसे बैंक में डलवा दिए कि कहीं रास्ते में कोई छीन न ले और २००० रुपए रास्ते में जरूरत के लिए दिए। वह खुशी-खुशी चला गया, बोला पहुंचते ही फोटो भेजेगा। मेरी बहुत इज्जत करता है वह। सुना है दूसरों के सामने ऑफिस में भी हमेशा मेरे गुण गाता रहता है।

आज मुझे पता लगा कि वो अब तक घर पहुंचा नहीं, क्योंकि रास्ते में कई दोस्तों के कहने पर उसने बेटा होने की खुशी में दावत दी और शराब खरीद ली। ट्रेन में ज्यादा पीने से बेसुध पड़ा था। कोई सारा सामान पर्स सब ले गया। टीटी ने किसी स्टेशन पर उतार दिया। शराब के नशे में बदतमीजी करने के चक्कर में लॉकअप में बन्द दिया।

सुनकर क्रोध आया, दुःख हुआ, अफसोस भी। सोच रही हूं कि आज अर्जुन की वजह से मुझे जो तकलीफ हो रही है, **तो ईश्वर को कितनी होती होगी जब उसके बंदे उसकी जय-जयकार तो करते हैं। उसके खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुक सकते, लेकिन उसकी कही नहीं मानते। उसके किसी गुण का अनुसरण नहीं करते। भले ही गुणगान न करे पर गुणों का मान जरूर करें।**

रेणू अग्रवाल, चेन्नई

वैदिक सत्संग

दिनांक २९ जुलाई से २ अगस्त तक

आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से ग्राम-मेहतवाड़ा, तह.- आष्टा, जिला- सिहोर (म.प्र.) में वैदिक सत्संग आयोजन किया जा रहा है। अतः अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्म लाभ लेवें।

सम्पर्क-मोहन आर्य- चलभाष- ८०८५८२५८०५
विजय प्रकाश आर्य- चलभाष- ८७७०२५२०२२

उदारवादियों की अनुदारता

जांगिड कुलभूषण- **रामफलसिंह आर्य**
वरि. उप प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जनपद-मण्डी
चलभाष- ०९४१८४७७७१४

सामान्यरूप से उदारवादी मनुष्य की यह पहचान है कि वह दूसरों के द्वारा किए गए कार्यों, विचारों एवं उनकी परम्पराओं के प्रति संकुचित दृष्टिकोण न रखकर उनका ठीक-ठीक मूल्यांकन करे और उनका सम्मान करे। परन्तु आज देश के अन्दर कुछ ऐसा वातावरण बनता जा रहा है कि उदारवाद की परिभाषा बदलने लगी है। उदारवादी आज वह हैं जो राष्ट्र के लिए घातक तत्वों के प्रति या तो उदासीनता रखे या उनका प्रशंसक हो। 'उदारवाद' ही क्यों आज देश को तथाकथित प्रगतिशील, बुद्धिजीवी, सहिष्णु, राष्ट्रभक्त वे लोग हैं जो आधुनिक शिक्षा प्राप्त सुखसुविधा भोगी उस दल में सम्मिलित हैं, जिनके लिए राष्ट्र का उत्थान इस बात में निहित है कि वे अपने प्राचीन गौरव, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, कला, गौरवमयी परम्पराओं, श्रेष्ठ व्यवहारों का किस प्रकार से अधिक से अधिक उपहास उड़ा कर उनका अवमूल्यन कर सकते हैं। इस विचारधारा को पनपाने में बहुत सारा योगदान उस उच्छृंखल 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' का भी है जिसका उद्देश्य ही देश की जनता को सत्य से नितांत दूर रखकर एक भ्रमजाल में उलझा देना है। यदि हम स्पष्ट शब्दों में कहें तो इस ढंग से हमारे इस विशाल राष्ट्र को खण्ड- खण्ड करने, जनता को भ्रमित करके उल्टे रास्ते पर ले जाने, यहां की सभ्यता एवं संस्कृति का विनाश करने का कार्य कर रहा है। इसके स्वर समय-समय पर आपको सुनने को मिलते रहते हैं। अंग्रेजी भाषा में इसे Febrication of Mechenism कहते हैं अर्थात् एक ऐसी व्यवस्था तैयार कर देना जो बड़ी सरलता से समाज में ऐसी विचारधारा उत्पन्न कर देती है कि लोग उसे अपना लेते हैं। यदि गम्भीरतापूर्वक देखा जाए तो यह कार्य 'लार्ड मैकाले' की योजना का ही एक अंग है। इस वर्ग ने अभी कुछ दिन पहले '**असहिष्णुता**' का ऐसा राग अलापा कि उनके सुरों में कई सुर मिल गए। देश के तथाकथित अत्यन्त बुद्धिशाली लोगों ने सरकार को अपने पुरस्कार लौटा-लौटा कर यह जताने का प्रयास किया कि हमें इस असहिष्णुता के वातावरण में श्वांस लेना दूभर हो गया है। कुछ और भी अधिक पढ़े-लिखों को यह देश 'असुरक्षित' दिखाई देने लगा। और एक भय मन में भर गया कि यहां पर उनको, उनके बच्चों को उनके परिवारों को अपनी सुरक्षा खतरे में पड़ी दिखाई दे रही है।

इस वर्ग की शाखाएं देश में कई स्तरों पर, कई स्थानों पर, कार्य कर रही हैं। एक स्तर है जो कि इतिहास वेत्ताओं के रूप में कार्य कर रहा है। ये लोग इस बात का निर्णय करते हैं कि इस देश की उन्नति या अवनति, संगठन या विघटन, निर्माण अथवा विनाश के लिए कार्य करने वाले लोग कौन थे। यह वर्ग ऐसा है जो जब चाहे किसी को देशभक्त बना दे और जब चाहे किसी को देशद्रोही बना दे। देशद्रोही या देशभक्त उस व्यक्ति के कर्मों पर निर्भर न होकर इस महान वर्ग के लेखकों की लेखनी पर निर्भर है। उदाहरण के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक '**भारत का स्वतंत्रता संघर्ष**' को लेते हैं। इसके लेखक श्री विपिन चन्द्र, श्रीमती मृदुला मुखजी, आदित्य मुखर्जी एवं श्रीमती सुचेता महाजन हैं। इसका प्रथम संस्करण १९९० में छापा था। यह पुस्तक महाविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है और प्रशासनिक सेवा के लिए तैयार करने वाले भी इसकी सहायता से अपनी तैयारी कर रहे हैं। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले अनेक कष्टों को सहन करने वाले भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि वीर शहीदों को 'आतंकवादी' कहकर उनका अपमान किया गया है। आज देश को आजादी की हवा में सांस लेते हुए ६८ वर्ष से ऊपर व्यतीत हो चुके हैं जो उन शहीदों के उन बलिदानों का फल है जिन्हें ये लोग आतंकवादी कहकर पुकार रहे हैं। क्या इससे भी लज्जाजनक बात कोई और हो सकती है। यह है वह तन्त्र, वह मैकेनिज्म, जिसका हमने ऊपर वर्णन किया है। ये वे उदारवादी लोग हैं जो एक ही दृष्टि से योगी के समान एक समत्व भाव से सबको देखते हैं। इन्होंने समाज को वह दिव्य दृष्टि प्रदान की है जिसके प्रकाश में जे.एन.यू. में देशद्रोही नारे लगाने वाले लोग पलते हैं।

आईये अब तनिक यह विचार करें कि यह वर्ग आखिर तैयार कैसे हुआ? इसको यह दिव्य दृष्टि समरसता का यह वरदान मिला कैसे? इसे जानने के लिए हमें थोड़ा पीछे मुड़ना होगा। २ फरवरी १८३५ में लार्ड मैकाले ने ब्रिटिश की पार्लियामेंट में जाकर जो भाषण दिया उसके फलस्वरूप यहां के उक्त समय के शासक अंग्रेजों ने उसके द्वारा दी गई योजनानुसार कार्य करना सुनिश्चित किया। यह कार्य तो उससे पूर्व भी हो ही रहा था, परन्तु उसके उपरान्त तो इसे और अधिक गति प्रदान की गई। इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सन् १८८५ में ए.ओ. ह्यूम ने उस समय में वायसराय लार्ड डफरिन की सलाह पर कांग्रेस की स्थापना की। इसका उद्देश्य यह था कि गुप्त रूप से जो क्रान्किारी, गतिविधियां चल रही थी, उनकी रोकथाम करने के लिए अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों का एक ऐसा खुला मंच जुटाया जाए जिससे वे अपनी शिकायतें सरकार तक पहुंचा सकें और अपने लिए सरकारी नौकरियां मांग सकें। (देखिये श्री हंसराज रहबर द्वारा लिखित पुस्तक '**गान्धी बेनकाब**' का पृष्ठ ११७) इसका सीधा सा अर्थ यह था कि यहां के लोगों का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति से हटा कर विलासपूर्ण जीवन की ओर ऐसा धकेल दिया जाए कि वे आजादी के लिए संघर्ष कर रहे अपने ही भाइयों के विरोधी बन जाएं और ब्रिटिश सरकार के भक्त। अपनी इस स्थापना की पुष्टि में हम श्री गुरुदत्त जी द्वारा लिखित पुस्तक '**भारत गांधी नेहरू की छाया में**' से

भी कुछ उदाहरण देना उपयुक्त समझते हैं। तनिक अवलोकन कीजिए।

The First Geueration of the eaugress potriarchs had aceeped british rule in iulia as a sort of dirue dispensation pheraeshah mehta's uiserutable dispersatiou.of prouiolerci which had buoegoht iadia and englalter..., british rule it these cougress leadise was a coudition preace stabililg and progess at the ahemdabad cougress in 1902 sareudranath bawerjee deelaerd from the presielutirl plead for the prefomancee of british rule in india .

(गांधी जी के जीवन चरित्र, श्री प्यारेलाल द्वारा लिखित-भाग प्रथम)

अर्थात् - कांग्रेस के पहले के प्रतिष्ठित नेताओं में यह बात मानी जाती थी कि हिन्दुस्तान में ब्रिटिश राज्य भगवान की कृपा का प्रसाद है। फिरोज शाह मेहता ने यह कहा था कि यह भगवान की अज्ञात कृपा है जिसके हिन्दुस्तान और इंग्लैण्ड साथ-साथ हो गए हैं। इन कांग्रेसी नेताओं के लिए ब्रिटिश राज्य शान्ति, स्थिरता और उन्नति लाने वाला सिद्ध हो रहा था। १९०२ में कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन पर प्रधान पद के भाषण में सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने घोषणा की थी हम हिन्दुस्तान में ब्रिटिश राज्य के सदा रहने की मांग करते हैं। (पृष्ठ ६३, ६४)

आगे पृष्ठ ६५ पर वे पुनः लिखते हैं- **'अंग्रेजों के यहां आते ही पादरियों की सेना यहां पर आ पहुंची और सरकारी सहायता से ईसाई मजहब का प्रचार करने लगी। मैकाले और मैक्समूलर जैसे पादरी भारत की शिक्षा और साहित्य को दूषित करने लगे।'**

स्मरण रखना चाहिए कि कांग्रेस की स्थापना से पहले यहां विद्रोह की चिनगारी सुलग चुकी थी, जिसे अंग्रेज अत्याचार द्वारा दबाये रखने का पूरा-पूरा प्रयास कर रहे थे। सन् १८६८ ई. में लार्ड कर्जन बायसराय बनकर भारत आया था और उसने आते ही अमानवीय अत्याचार प्रारम्भ कर दिए थे। यह इग्लैण्ड के टोली दल का सदस्य था। अति क्रूर, अभिमानी और हिन्दू विरोधी व्यक्ति था। स्वाभाविक ही था कि इसके अत्याचारों से जहां एक ओर जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी वहीं दूसरी ओर अंग्रेज के विरुद्ध द्वेष का वातावरण भी बनता जा रहा था। ऐसी स्थिति में कांग्रेस की स्थापना का वास्तविक उद्देश्य क्या था यह मान्य श्री गुरुदत्त के शब्दों में पढ़िये- **'कांग्रेस की स्थापना इस कारण से हुई थी कि देश का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथ में चला जाए जो ब्रिटिश राज्य को हिन्दुस्तान के लिए ईश्वरीय देन मानते हैं। यह नियम रखा गया कि कांग्रेस में केवल अंग्रेजी पढ़े-लिखे और बोल सकने वाले लोग ही सम्मिलित हो सकते थे।'** (पृष्ठ ६७)। इसके स्पष्ट है कि कांग्रेस की स्थापना ब्रिटिश सरकार के लिए एक ऐसा माध्यम था जिसके द्वारा एक तो सरकार यहां के क्रान्तिकारियों के प्रयासों को उन्हीं के देशवासियों द्वारा रोक सके, परस्पर असहयोग उत्पन्न हो और दूसरी ओर अपने भक्तों-समर्थकों का एक दल बिना किसी विरोध के खड़ा कर सके। पादरी लोग भी प्रचारार्थ आ ही रहे थे। अतः इस देश पर आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक आक्रमण हो चुका था। यद्यपि कालान्तर में कांग्रेस में वे लोग भी सम्मिलित हुए, जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए कार्य किया और अंग्रेजों के अत्याचारों के बदले उनका असहयोग किया या संघर्ष किया। क्योंकि इसी काल में महर्षि दयानन्द जी के प्रचार कार्य तथा आर्य समाज की स्थापना द्वारा लोगों में स्वाभिमान जागा। जो हिन्दू जिस किसी के आक्षेपों को सुनकर चुप हो जाता था, मौलवियों एवं पादरियों के प्रश्नों का जिसके पास कोई भी उत्तर नहीं था, उसने मुंहतोड़ उत्तर देना सीखा। देशभक्ति का भाव लोगों में जागा, अत्याचार का सामना करना सीखा, अतः स्वाभाविक ही था कि कांग्रेस के नेताओं की भी नींद टूटी। परन्तु स्वदेश एवं स्वदेशी के प्रति (लोकमान्य तिलक के निधन के उपरान्त) जिस प्रेम की ज्योति जागनी चाहिए थी उसका अधिकतर अभाव रहा। लोकमान्य तिलक के उपरान्त यह पार्टी जब गान्धी एवं नेहरू के हाथ में चली गई तो यह अभाव और भी गहरा हो गया, क्योंकि श्रीमान नेहरू तो यह कहते ही थे कि मैं शिक्षा से अंग्रेज तथा शरीर के जन्म से भारतीय हूं (संयोगवश) उस व्यक्ति से यह आशा रखना ही निरर्थक है कि वह भारत की सभ्यता का प्रेमी और भारतीय दर्शन के मूल्यों की रक्षा करने वाला होगा। ■

अन्तर के पट खोल

अन्तर के पट खोल, मनुआ प्रभु मिलेंगे,
ओ३म् ही ओ३म् बोल, मनुआ प्रभु मिलेंगे।।

बाहर माया नगरी न्यारी,
जिसमें फंसते है नर-नारी,
इन्द्रियां भी तो चंचल सारी,
मन को बनाती भ्रष्टाचारी,
इन्द्रियों से मत खेल, मनुआ प्रभु मिलेंगे।
ओ३म् ही ओ३म् बोल, मनुआ प्रभु मिलेंगे।।१।।

माता मिलेंगी, पिता मिलेंगे,
बन्धु-भगिनी, जीवन साथी,
जनम्-जनम् से भटक रहा है,
एक जनम् के ये सब साथी,
इन्हें प्रभु संग मत तोल, मनुआ प्रभु मिलेंगे।
ओ३म् ही ओ३म् बोल, मनुआ प्रभु मिलेंगे।।२।।

चांदी मिलेंगी, सोना मिलेगा,
हीरे-जवाहर, पन्ना, मुंगा,
कदम-कदम पर बिखरे हैं मोती,
ये सब बनाते बुद्धि को खोटी,
इनसे ना करना मेल, मनुआ प्रभु मिलेंगे।
ओ३म् ही ओ३म् बोल, मनुआ प्रभु मिलेंगे ।।३।।

स्वामी सत्यव्रतानन्द सरस्वती
एल.बी. ४२, न्यू इन्दिरा कॉलोनी,
बुरहानपुर (म.प्र.)
चलभाष- ९९२६४-५८५५३

सम्मानीय पाठकगण! हमारा उपरोक्त भूमिका को लिखने का तात्पर्य यही है कि उन दोनों महात्माओं की (गान्धी एवं नेहरू) छत्रछाया में भारत में जो मानसिकता बनी, फली-फूली उसी का यह परिणाम है कि आज राष्ट्र के सामने अनेकों विकाल समस्याएं मुंह बायें खड़ी है। अपनी व्यक्तिगत जिद एवं स्वार्थों तथा अदूरदर्शिता एवं राजनैतिक अयोग्यता के कारण इन दोनों शक्तियों ने राष्ट्र को पतन के गहरे गड्ढे में धकेल दिया। निर्भिक, तपस्वी, न्यायकारी एवं स्वाभिमानी बनने के स्थान पर देश में सुख-सुविधाभोगी, कायर, दब्बू और स्वदेश प्रेम से शून्य लोगों के दल के दल तैयार हो गए, जो शुद्ध भारतीयता के मर्म से परिचित तक न थे। प्राचीन इतिहास की कौन कहे अभी थोड़े दिन पूर्व हुए भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, वीर सावरकर, राजेन्द्र लाहिड़ी, मदनलाल धींगरा, राजगुरु, सुखदेव, सुभाषचन्द्र बोस आदि को आतंकवादी बताकर लादेन जी, अफजल गुरु जी, कसाब जी के लिए मानवाधिकारों की दुहाई देते फिरने वाले ये लोग आखिर क्या कहना चाहते हैं? उदारवादी होने के अर्थ क्या यह है कि मानवता के शत्रुओं की स्तुति और देशभक्तों की निन्दा की जाये। क्या अफजल और भगतसिंह जी को एक ही तुला पर तुलना पड़ेगा? सहिष्णुता का अर्थ यह है कि क्या कि कश्मीर से यदि लाखों हिन्दुओं को मार-काट कर भगा दिया जाये, उनके घर, स्त्री एवं सम्पत्ति को लूट लिया जाये तो सबसो अपनी जुबान पर ताले जड़ लेने चाहिए और यदि एक मुस्लिम को दादरी में मार दिया जाए तो उसका प्रायश्चित 'अति बुद्धिमान वर्ग' अपने पुरस्कार लौटाकर करें। यदि मैं अपने ऊपर होने वाले अत्याचार होने के समय रोकूं भी तो अनुदार और असहिष्णु बन जाऊ और अत्याचारी सीमा से बढ़कर भी अत्याचार करता जाये तो वह उदार और सहिष्णु? वाह रे उदारवादियों! यदि तुम्हारी उदारता अपने शहीदों का अपमान करने से ही सिद्ध होती है तो फिर तुम्हे विनाश से कौन बचा सकता है? आज भारत का बच्चा-बच्चा जब भगसिंह का भगत है तो फिर तुमने उस महान् आत्मा में ऐसी क्या कमी देखी कि उन्हें आतंकवादी लिख दिया? क्या उपरोक्त उन वीरों का एक भी कार्य ऐसा दिखा सकते हो जिसमें उन्होंने किसी गरीब को सताया हो, अत्याचार किया हो, किसी का शोषण किया हो या देशद्रोह का कार्य हो। कोई भी कर्म ऐसा हबता सकते हो जो उन्होंने स्वार्थ के लिए किया हो? हां, उन्होंने तुम्हारे जैसी पक्षपात, मूर्खता, कृतघ्नता एवं कायरता की पट्टी अपनी आंखों पर नहीं बांधी थी। उनके हृदय तुम्हारी तरह संवेदन शून्य नहीं थे। अन्यथा तुम्हारी तरह बेशर्म बनकर जीने वालों की उस समय भी क्या कमी थी और आज तो कोई कमी है ही नहीं। अपने तुच्छ से तुच्छ स्वार्थ की सिद्धि के लिए कुत्ते की भांति दुम हिलाने वाले लोग क्या कभी उन वीरों के बलिदान का मूल्य समझ सकते हैं?

दूषित मनोवृत्ति वाले इस प्रकार के लोगों की वृद्धि का कारण हमारी आज की यह शिक्षा पद्धति ही है। जिस आधार के ऊपर राष्ट्र के विशाल भवन की नींव रखी जाती है जब वह आधार ही दूषित है, विकृत है तो फिर हो चुका राष्ट्र निर्माण। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त सरकार की अत्यन्त उदासीनता, अकर्मण्यता और कर्त्तव्यहीनता के कारण न तो शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सुधार किया गया और न ही ऐसे विषय रखे गए कि आगे आने वाली सन्तानें स्वदेश प्रेम के रंग में रंग कर अपनी सभ्यता व संस्कृति की प्रेमी बनें। विदेशियों द्वारा दूषित इतिहास ही विद्यार्थियों के समक्ष परोसा जाता रहा, जिसे पढ़कर वे बेचारे यही जान पाए कि बाबर, अकबर महान् थे और राणा प्रताप जैसे लोग भगोड़े। वेदों, दर्शनों, उपनिषदों का स्थान पुराणों की अश्लीलतापूर्ण एवं मूर्खतापूर्ण गप्पों ने ले लिया। यदि कहीं पर वेदों को किसी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में पढ़ाया भी जाता है तो वही सायण, उव्वट, महिधर आदि का भाष्य जिसके आलोक में वेदों में की उटपटांग अनर्गल कथाएं आर्यों का विदेशी आक्रमणकारी होना, गाय का मांस खाना आदि का वर्णन पढ़कर समाज में वैसी ही प्रथायें बार-बार जन्म ले लेती है। जिन वेदों का आश्रय समस्त हिन्दू समाज लेता है, पूर्व में भी जिनके गीत आर्यों द्वारा बड़ी श्रद्धा से गाये जाते रहे हैं, जब उन्हीं में जड़पूजा, स्त्रियों से व्याभिचार, मांस, शराब का सेवन, ईश्वर के स्थान पर बहुदेवता आदि-आदि का वर्णन जब अन्य मतों वाले लोग निकालकर हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं तो उनका मुंह तकने के अतिरिक्त और कोई चारा हमारे सामने शेष नहीं रह जाता। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि इस क्षेत्र में ऋषि दयानन्द जी एवं आर्य समाज के योगदान को सर्वथा उपेक्षित कर दिया जाता है। बेचारे हिन्दुओं को आज तक भी यह समझ में नहीं आया कि उसकी रक्षा कौन कर सकता है?

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जिस उच्छृंखल एवं स्वदेश के गौरव एवं स्वाभिमान शून्य जिन मैकाले एवं ए.ओ.ह्यूम के मानसपुत्रों ने राज्य सत्ता का आश्रय लेकर अपने जैसी फौज को जन्म दिया। वहीं फौज, वही वर्ग आज उदारवादी होने का दम भर रही है। उसी वर्ग के उदारवादी होने का यह प्रबल प्रमाण है कि वे देश भक्तों को आतंकवादी लिखे। इस पर प्रगतिशील मीडिया भी चुप्पी साध ले और सेक्युलरवादी भी। यद्यपि शहीद भगतसिंह जी के भाई कुलवीर सिंह के पोते ने इस बारे में स्मृति ईरानी को पत्र लिखकर इसमें सुधार करने के लिए कहा है परन्तु क्या यह दायित्व उन्हीं का है? क्या भगतसिंह जी का आज जो मान-सम्मान है वह केवल उनके कुल के कारण है। सभी प्रबुद्ध पाठकों, सामाजिक संगठनों, आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने-अपने स्तर पर इस बारे में तुरन्त आवश्यक कार्यवाही करें। इन आपत्तिजनक पंक्तियों को तुरन्त उन पुस्तकों से हटाया जाए। न केवल पंक्तियां ही हटाई जाए अपितु इनके लिखने वालों के विरुद्ध भी आवश्यक कार्यवाही की जाये। आश्चर्य है कि जब इन पुस्तकों को किसी विश्वविद्यालय/निदेशालय द्वारा स्वीकृति दी जाती है। उस समय वहां के अधिकारी इतनी लापरवाही से कार्य लेते हैं और बिल्कुल एक औपचारिक तौर पर इसे लेकर स्वीकृति दे देते हैं। यही तो वह समस्या है जिसका हम ऊपर वर्णन कर आये हैं। यदि समय रहते देशवासी नहीं जागे तो बहुत देर हो जाएगी और देश के इस प्रबुद्ध वर्ग, प्रगतिशील एवं उदारवादी वर्ग को अपनी मनमानी करने का और अधिक अवसर प्राप्त होगा। ■

२१वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

दिनांक- ६ से ८ अक्टूबर २०१८ तक

आपको ज्ञात ही होगा कि राजस्थान प्रान्त का उदयपुर नगर एक अति मनोरम नगर है। **यहीं पर स्थित 'नवलखा महल' कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली है।** १९९२ में यह आर्य समाज को हस्तगत हुआ था। तब से अब तक प्रभु कृपा से, भगीरथ पुरुषार्थ तथा आप लोगों के स्नेह से यह एक सुन्दर स्मारक बन चुका है, जिसके दर्शनार्थ लगभग ३०००० (तीस हजार) पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। यहां प्रतिवर्ष आयोज्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव भी आर्य जगत् में विशिष्ट स्थान रखते हैं। इसी में पधारने हेतु यह अग्रिम अनुरोध है। मानस बनावें इष्ट मित्रों, परिवारजनों के साथ आने का। पर्यटन तथा धर्मलाभ साथ-साथ हो जाएगा। इस निवेदन को आप अन्यों को भी अवगत करवाएंगे तो प्रसन्नता होगी।

निवेदक-**श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर- राजस्थान
दूरभाष-०२९४-२४१७६९४, ७२२९९४८८६०, ९३१४२३५१०१

आर्य समाज शिवपुरी के तत्वावधान में

वैदिक अतिथि यज्ञ का आयोजन

दिनांक २० से २२ जुलाई २०१८ तक

आमंत्रित विद्वान- डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुंबई

सम्पर्क- इन्द्रप्रकाश गान्धी, प्रधान-म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा

समीर गान्धी- चलभाष ९४२५१३७०६७

योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

वेद प्रचार मंडल, मल्हारगढ़, जिला- मन्दसौर के द्वारा दि. २४ से २७ मई २०१८ तक चार दिवसीय योग एवं प्रशिक्षण शिविर आर्य बाल विद्या मंदिर, बूढ़ा में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण आचार्य चन्द्रेश जी आर्यवन रोजड़ गुजरात के द्वारा दिया गया। प्रशि. में ध्यान योग, ईश्वर उपासना, विधि, चित्त की एकाग्रता के लिए क्रियात्मक योगाभ्यास, योग के आठ अंग, चित्त के बदलने की विधि, प्रसन्नचित्त रहने के उपाय एवं गृहस्थ में सुखी रहने के उपाय इत्यादि गूढ़ रहस्यों का ज्ञान कराया गया।

शिविर का समय प्रातः ५ बजे से रात्रि १० बजे तक का था। इस शिविर में आर्य समाज गांव बूढ़ा, टकरावद, नारायणगढ़, बरखेड़ा पंथ, नैनोरा, कनघट्टी, खेड़ा खदान, देहरी, रठाना, मजेसरी, नागदा जंक्शन एवं इंदौर इत्यादि से ११५ पुरुष-महिलाओं एवं युवक-युवतियों ने भाग लिया। शिविर की व्यवस्था एवं संचालन करने में आर्य समाज बूढ़ा के पदाधिकारियों के अतिरिक्त विनोद जी नागरिया, पं. सत्येन्द्र जी आर्य एवं संभाग के उप प्रधान बन्शीलाल जी आर्य ने विशेष सहयोग दिया। क्रियात्मक योग एवं प्रशिक्षण शिविर का यह प्रथम प्रयास पूर्णतः सफल रहा जो सराहनीय है।

आर्य समाज मल्हारगंज, इन्दौर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मल्हारगंज इंदौर मध्यप्रदेश की कार्यकारिणी का २०१८-१९ का वार्षिक चुनाव निर्विघ्न एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा नियुक्त इन्दौर संभागीय प्रधान श्री गोविन्दराम आर्य की अध्यक्षता में रविवारीय सत्संग के पश्चात् दिनांक ०३ जून को सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चुनाव अधिकारी महोदय की उपस्थित में वर्ष २०१८-१९ हेतु सर्वसम्मति से डॉ. दक्षदेव गौड़ (प्रधान), डॉ. विनोद आहलुवालिया (मन्त्री) तथा ठाकुर हरिसिंह आर्य (कोषाध्यक्ष) के रूप में चुना। इसके पश्चात् चुनाव अधिकारी ने नवनिर्वाचित समस्त पदाधिकारियों को आर्य समाज की पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। अंत में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी ने उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

वैदिक सत्संग सम्पन्न, भूमि का दान मिला, बनेगा आर्य समाज

आर्य जगत् के प्रसिद्ध साधक संन्यासी स्वामी अमृतानंदजी महाराज की जन्मभूमि नर्मदा नदी के पावन तट पर ग्राम दुधवास, जिला-खण्डवा (मध्यप्रदेश) में लगभग १५ वर्ष पूर्व वेद प्रचार रथ यात्रा के समय सत्संग हुआ था। उसके उपरांत अनेक वर्षों का व्यवधान हुआ पर वैदिक सत्संग न हो सका। श्री कैलाश पालीवाल जी व कुछ धार्मिकजनों ने मिलकर एक वेदकथा सत्संग का आयोजन दिनांक १२ से १४ मई को करवाया जो अत्यधिक सफल रहा। प्रथम दिवस ग्राम में शोभा यात्रा निकाली गई। पञ्चकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया।

स्वामी अमृतानन्द जी महाराज जी ने भी साधना के सूत्र दिए। ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी सत्यवीर (सत्येन्द्र) जी प्रातः ५.३० बजे से ६.३० बजे तक आसन-प्राणायाम की कक्षा लेते थे। ऋषि उद्यान गुरुकुल के ब्र. निरंजन जी उड़ीसा वाले, ब्र. सत्येन्द्र जी दोनों ने भी सुन्दर उपदेश सभी सत्रों में दिए। स्वामी अमृतानंद जी के ज्येष्ठ पुत्र डॉ. अखिलेश शर्मा जी ने भी अंतिम दिन सपरिवार अपनी उपस्थिति देकर प्रेरणास्पद व्याख्यान दिया। प्रति सत्र में आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी लगभग १ घंटे तक वेदोपदेश करते थे, जिनमें उपनिषद व वेदों के उदाहरण लेकर अनेक सिद्धानों की चर्चा होती थी। पुरुषार्थी जी ने आर्य समाज मंदिर बनाने के लिए भूमि के दान का सभी से आग्रह किया। देव प्रेरणा से एक कृषक सज्जन श्री रामलाल यादव आगे आए और आधा एकड़ भूमि दान देने की घोषणा कर दी। स्थानीय भारतीय जनता पार्टी के विधायक देवेन्द्र वर्मा जी ने भी एक दिन दोपहर की सभा में आकर सहयोग का आश्वासन दिया। १४ मई सोमवार को प्रातः आचार्य प्रवर पुरुषार्थी जी ने आर्य समाज की कार्यकारिणी का गठन कर दिया और पूर्व सरपंच श्री हीरालाल जी को अध्यक्ष, कैलाश पालीवाल को मंत्री और श्री पंढरी यादव जी को मनोनीत कर दिया। सभी को आर्य समाज व वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को तन मन धन से स्व जीवन परिवार व ग्राम में वर्धन का संकल्प दिलवाया। आर्य समाज का सत्संग हर सप्ताह करने और प्रतिवर्ष ऐसा ही वृहत्त सत्संग करवाते रहने का आग्रह किया। सभी अतिथियों के रुकने व भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था हीरालाल जी के निवास स्थान पर की गई थी। ■

आर्य-द्रविड़ / उत्तर-दक्षिण भेद की समीक्षा

- जगदीश प्रसाद आर्य -
गिरदौड़ा (नीमच) म.प्र.
चलभाष- ८९८९६१५३४२

यह लेख 'वैदिक संसार' अप्रैल २०१८ में छपे 'आदि मानव का उत्पत्ति स्थान और महर्षि दयानन्द' की अगली कड़ी है। उक्त लेख और पूर्व की कड़ियों से हम इस नतीजे पर पहुंचे थे कि आर्य किसी अन्य देश से आकर भारत में नहीं बसे और न वे सप्त सिन्धु और उत्तरप्रदेश तक किसी सीमित क्षेत्र में आबद्ध थे। तिब्बत आदि मानव की उत्पत्ति स्थल होने से आर्यों का भी उत्पत्ति स्थान था। जहां से वे हिमालय के रास्ते चल कर वर्तमान उत्तरप्रदेश, पंजाब और सिन्ध में बसे। उन्होंने इस विस्तृत भू-भाग में राज्य स्थापित किए। उन आर्य राज्यों के अस्तित्व के प्रमाण बुद्धकाल महाभारत और रामायण काल और इसके सुदूर अतीत तक प्राप्त होते हैं।

यह सर्व स्वीकृत तथ्य है कि अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो को अपना ध्येय बनाकर ही भारत में अपनी सत्ता की जड़ों को गहरीकरण किया। हमें समझाया गया कि भारत एक देश नहीं अपितु उपमहाद्वीप है,जिसमें अनेक देश अनेक सभ्यताएं अस्तित्व में हैं। उत्तर में आर्य सभ्यता है जबकि दक्षिण में द्रविड़। अपने निहित स्वार्थों के वशीभूत ऐसी अन्यान्य बातों को संजोकर उसे शिक्षा का भाग बनाकर, शिक्षा के बहाने यहां के जन की राष्ट्रीय भावना पर कुठाराघात करके दक्षिण भारत को उत्तर के विरुद्ध खड़ा कर दिया। यद्यपि पूर्वजों के पुण्य और पुरुषार्थ के प्रताप से देश स्वतंत्र हुआ, तथापि गौरांग द्वारा बोई विषबेल के विषफल विवश हो भारत आज भी चल रहा है। उनके कपटपूर्ण दावों की युक्तियुक्त समीक्षा कर भारत की एकता को उद्घटित करना इस लेख का केन्द्रीय भाव है।

रामायण का प्रसिद्ध प्रसंग है-वनवास काल में पञ्चवटी से सीताहरण के पश्चात् लक्ष्मण सहित श्रीराम सीता की खोज में यत्र-तत्र भटके। इसी क्रम में किष्किंधा पहुंचना। सुग्रीव से मित्रता, बालि का वध, उसके द्वारा अपहृत सुग्रीव की पत्नी को उसे दिलवाना और सीता की खोज में सुग्रीव को सम्मिलित करने का सम्पूर्ण घटनाक्रम सब भारतीयों के हृदय पटल पर अंकित है। बालि को पेड़ की ओट लेकर छल से मारा था। तब मरणासन्न बालि ने राम पर अधर्म से मारने का दोषारोपण किया, इसके उत्तर में राम ने जो कहा वह ध्यान से सुनिये-

इक्ष्वाकूणामियं भूमिः स शैल वन कानना।
मृग पक्षि मनुष्याणां निग्रहानुग्रहेष्वपि।।
वा.रा. किष्किंधा काण्ड सर्ग १२

राम कह रहे हैं कि वन पर्वतों सहित यह भूमि इक्ष्वाकु राजाओं की (हमारी) है। अतः यहां के वन्य पशु पक्षियों और मनुष्यों को दण्ड देने का उन पर अनुग्रह करने में हम समर्थ हैं। इसके पश्चात् राम ने बालि कृत अपराध की चर्चा कर वध का कारण बताया। इस सन्दर्भ में यह बात निकल कर सामने आई कि वनवासी राम भी किष्किन्धा में अपने ही राज्य में थे, भले ही उस समय वे अभिषिक्त राजा न थे पर राजा के प्रतिनिधि के रूप में स्वयं को प्रकट कर रहे थे। इससे किष्किन्धा को इक्ष्वाकु (आर्यों) के अधीनस्थ होने की पुष्टी होती है और भिन्न दक्षिणावर्त की बात निरस्त। सीता का हरण गोदावरी तटस्थ पंचवटी से हुआ था। राम वहां भी अपने राज्य में थे। महाभारतकालीन अश्मक राज्य जो कौरवों की ओर से लड़ा था, यहीं पर स्थित था। अश्मक की सत्ता बुद्ध काल के १६ महाजनपदों तक प्राप्त होती है। जिसकी चर्चा **'आर्यों के मूल स्थान पर विमर्श'** लेख में कर चुके हैं। ये साक्ष्य दक्षिण में पृथक द्रविड़ सभ्यता की कल्पना को ध्वस्त करते हैं। जो सज्जन वानर राज्य को आर्यों से बाह्य मानते हों वे निम्न सन्दर्भ पर विचार करें-

आज्ञापयतदा राजा सुग्रीवः प्लवगेश्वरः।
औध्र्व दैहिकमार्यस्य क्रियतामनुकूलतः।।
वा.रा. किष्किन्धा काण्ड सर्ग १५

यहां सुग्रीव मृत बालि के दाह संस्कार के लिए आज्ञा दे रहा है। कहता है इस आर्य का अन्तयेष्टि संस्कार आर्योचित रीति से किया जाए। बालि ही नहीं रावण भी आर्य था। सन्दर्भ है- रावण ने सीता को राम की ओर से हताश करने के उद्देश्य से माया निर्मित राम का कटा हुआ सिर और धनुष सीता को दिखा कर कहा सीते! राम युद्ध में मारा गया, उसका यह सिर और धनुष है। अब तू हमारे वशवर्तिनी हो जा। यह देख सीता विलाप करने लगी तभी एक सैनिक ने आकर रावण से कहा-

विजस्वार्य पुत्रेति सोऽभिवाद्य प्रसाद्य च।
न्यवेदयदनुप्राप्तं प्रहस्तं वाहिनीन पतिम् ।।
वा.रा. युद्धकाण्ड सर्ग-१३

अर्थात् - हे राजपुत्र! आपकी जय हो, ऐसा कह कर अभिवादन द्वारा प्रसन्न करके सेनापति प्रहस्त के आने की सूचना रावण को दी। और भी रावण राम के साथ युद्ध करते हुए घायल हो गया। ऐसी दशा में उसका सारथी उसे रणक्षेत्र से बाहर निकाल ले गया। सचेत होने पर रावण ने सारथी को आड़े हाथों लेते हुए कहा-

त्वयाद्य हि ममानार्य चिरकालमुपार्जितम् ।
यशोवीर्यं च तेजश्च प्रत्ययश्च विनशिताः।।
वा.रा. युद्ध काण्ड सर्ग ४८

अर्थात् - हे अनार्य! तूने चिर काल से उपार्जित मेरे यश, वीर्य, तेज और स्वाभिमान को नष्ट कर दिया। यहां रावण क्रोध में भरकर सारथी को अनार्य कह रहा है, सो तो गाली है, सहज कथन नहीं है। स्पष्ट

है रावण स्वयं को आर्य ही मानता था।

नित्य नैमित्तिक अनुष्ठानों के पूर्व संकल्प पाठ की सनातन परम्परा उत्तर से दक्षिण तक सर्वथा प्रचलित है और संकल्प का पाठ भी समान है जिससे-'**अद्य श्री ब्राह्मण दिवसे द्वितीये पहरार्धे, श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वते मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे, जम्बू द्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे मेरोः उत्तरे। दक्षिणे दिग्भागे....**' यहां रेखांकित अंश किसी स्थान का पता देने का उपक्रम है जो बड़ी इकाई से क्रमशः छोटी इकाई की ओर अग्रसर होते हुए दक्षिणावर्त को आर्यावर्त का और आर्यावर्त को भरतखण्ड का भाग प्रकट कर रहा है।

सम्पूर्ण देश में बिना भेद समान कर्मकाण्ड और समान संस्कार समान (संस्कृत) भाषा में सम्पन्न किए जाते हैं। संस्कृत के साथ देवनागरी सबकी साझी लिपि है। अन्य भारतीय भाषाओं में लिप्यान्तर है पर स्वर व्यंजन का क्रम और वर्ण वे ही हैं, सब लिपियाँ ध्वन्यात्मक है। अंग्रेज आगमन के पूर्व तक भारत की अन्तप्रान्तीय सम्पर्क भाषा संस्कृत थी जो आध्यात्मिक विद्वज्जगत् में आज भी है। दक्षिण के विजय नगर साम्राज्य के राजा हरिहर द्वितीय के राज पण्डित सायण ने वेद और वेदांग साहित्य पर सर्वाधिक टीकायें प्रदान की थीं। विशाल वैदिक और लौकिक साहित्य साझा है और उसके पठन-पाठन की परिपाटी समान है। नवीन साहित्य को उत्स उसी से प्राप्त होता है। आर्यो के मान्य ग्रन्थों पर द्रविड़ आचार्यों की टीकायें भेद बुद्धि का निरसन करती है। उपनिषदें, वेदान्त दर्शन और भगवद् गीता आर्यों के, मान्य ग्रन्थ है इसमें कहीं वैमत्य नहीं, जिन पर दक्षिण के शंकराचार्य रामानुजाचार्य और माध्वाचार्य की टीकाओं की दीर्घ परम्परा रही है।

किरातार्जुनीयम् का कर्ता भारवि दक्षिण का था, उसने आर्यों के शिव और अर्जुन पात्रों को नायक प्रतिनायक बनाकर अपना महाकाव्य रचा। आयुर्वेद में रसायन शास्त्र का जनक नागार्जुन दक्षिण का था। संगीत के ताल स्वर में उत्तर दक्षिण नहीं संगीत पद्धति एक है। नाट्य शास्त्र के स्थायी भाव संचारीभाव एक। साहित्य शास्त्र, काव्य शास्त्र, रस अलंकार, छन्दों विधान एक हैं। काल गणना पद्धति एक है। नाट्य शास्त्र के स्थायी भाव संचारीभाव एक साहित्य शास्त्र, काव्य शास्त्र, रस अलंकार छन्दों विधान एक हैं। काल गणना पद्धति एक है। सर्वत्र अनुष्ठानों में चान्द्रमास व्यवहार है। वर्ष को सौर रखा है, समायोजन हेतु अधिक मास का समायोजन एक जैसा है। दीर्घ अवधि के लिए युग गणना सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, चतुर्युगी, मन्वन्तर, ब्रह्मादिन तक गणनाओं में कहां भेद है?

द्वादश ज्योतिर्लिंग उत्तर दक्षिण में कहां कैद है? उनके नाम और स्थान बोध के ये श्लोक-

सौराष्ट्रे सोमनाथञ्च श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकाल औकारममलेश्वरम् ।।
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमाशङ्करम् ।
सेतु बन्धं तू रामेशं नागेशं दारूका वने।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे।
केदारं हिमवत्पृष्ठे घुश्मेशं च शिवालये।।

शिव पुराण आर्यों के पवित्र पर्वतों में-

महेन्द्रो मलयो सह्यो। शुक्तिमानृक्ष पर्वतः।
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुल पर्वताः।। विष्णु पुराण

दक्षिण के महेन्द्र, मलय और सह्य पर्वतों को परिगणित किया है।

इसी प्रकार आर्यों की पवित्र नदियां-

गंङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिंकुरु।।

यहां दक्षिण की गोदावरी और कावेरी नदियों को सादर ग्रहण किया है। पवित्र मोक्ष प्रदात्री पुरीयां-

अयोध्या, मथुरा, माया काशी, काञ्चिरवन्तिका।
पुरी द्वारा वतीश्चैव सप्तैताः मोक्ष दायिका।।
काश्यां तु मरणान्मुक्तिः स्मरणआदरूणाञ्चले।
दर्शना देवी श्री शैले पुनर्जन्म न विद्यते।।

कोई बताये कि इन मोक्ष दायिनी पुरियों में काञ्ची और श्री शैल को आर्यों ने क्यों सम्मिलित किया? इसी प्रकार

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।

इन सात अमर विभूतियों में दाक्षिणाव्य बलि और विभीषण को क्यों सम्मिलित कर लिया?

भेद बुद्धि के पुरोधा बतायें कि चार धाम, चार शंकरमठों की, बारह ज्योतिर्लिंगों की, गंगोत्री, रामेश्वर पर्यन्त कावड़ यात्रा की और अनकहे तीर्थों की यात्राएं उत्तर दक्षिण के बाढ़ों को तोड़कर सहस्त्राब्दियों से क्यों होती आ रही है? बताएं कि गोदावरी की सहायक नदी वेन गंगा के नाम में द्रविड़ों ने आर्यों की नदी के नाम को क्यों सम्मिलित किया? कैलाश वासी शिव की प्रिया, हिमाचल की पुत्री गौरी ने तपस्या के लिए ध्रुव दक्षिण में स्थित कन्या कुमारी को क्यों चुना? वे घोषित करें कि आद्य शंकराचार्य ने उत्तर दक्षिण को घेर कर मठ स्थापित करके आचार्य भूल कर बैठे।

कठिनाई यह है कि इस सीमित लेख में कितना समेटूं और कितना छोड़ूं। जहां आत्मा परमात्मा, कर्मफल, आवागमन, बन्धमोक्ष के सिद्धान्त सर्व व्यापक चिन्तन के विषय हैं, जहां यम नियम, शील, सदाचार पर समान आग्रह हो। जहां आर्यों के पांच यम, जनों के अणुव्रत और बोद्धों

के पंचशील एकाकार हैं, जहां विष्णु के १० और २४ अवतार सर्वत्र समान रूप से मान्य और पूज्य हों, जहां के सन्त महात्मा और ऋषि-मुनि साझे हों और बिना सम्प्रदाय भेद । प्रान्त भेद सर्वत्र आदृत हों, जहां रामानन्द दक्षिण से चल कर भक्ति मार्ग का विस्तार उत्तर में करते हो, जहां देव विशेष की पूजा पद्धति, उसके अलंकरण और उपकरण समान हों, शिव शक्ति विष्णु, गणपति और सूर्य सर्वत्र पूजे जाते हों, पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्मार्थ काम मोक्ष) और वर्णाश्रम विभाग पर समान विश्वास हो, पञ्च महायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ, बलिवैश्व देवयज्ञ) सर्वत्र नित्य कर्मों में सम्मिलित हों, कोई निसंवाद न हो, शिक्षा सूत्र पर सर्वत्र बल हो, मातृदेव, पितृदेव, आचार्य देव, अतिथि देव की सर्वत्र स्वीकृति हो। यहां तक कि व्यवसाय आधारित जाति व्यवस्था, जाति, उपजातियों की जटिलता और छुआछूत के महारोग भी समान हों, एक ही ढंग के मेले-ठेले बिना भेदभाव सर्व समावेशी हो, हां, हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक के कुम्भ मेलों में अव्याहत समागम सदियों से होता आया हो। (हर्ष कालीन चीनी यात्री ह्वेन्त्सांग ने उत्तर दक्षिण दोनों का भ्रमण किया, उसने जैसा मनोहारी चित्रण प्रयाग मेले का किया है वैसा ही श्री शैल का भी। जहां पूजा पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों में बिना सिले अधोवस्त्र और उत्तरीय धारण करने की सर्वव्यापी परम्परा हो, गृहस्थ पुरुषों की पोशाख में धोती-कुर्ता, पगड़ी, महिलाओं की साड़ी, लंहगा सर्वत्र सदैव से प्रचलित हो, जहां के सन्यासी और भिक्षुगण तिलक छाप और पहनावे से सर्वत्र पहचाने जाते हो, वहां उत्तर-दक्षिण भेद का अन्वेषण साहस नहीं दुस्साहस कहा जाएगा।

अब रही यह बात कि ब्रिटिश अधीनता के पूर्व राजनैतिक दृष्टि से भारत कभी एक नहीं रहा, इसका भी परीक्षण करते हैं। वेद के पश्चात् वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन भाग ब्राह्मण ग्रन्थ है जिनमें एक राट् सम्राट, सार्वभौम, राजाधिराज इत्यादि राजाओं की उपाधियां तब उपलब्ध होती है, जब अधिकांश यूरोपीय सभ्यताएं गर्भ में भी नहीं आयी थीं। राजाओं द्वारा अश्वमेध, राजसूर्य वाजपेयी जैसे यज्ञ दिग्विजय करके सम्पन्न किए जाते थे। मैत्रायणी उपनिषद् में चक्रवर्ती राजाओं के नाम गिनाये हैं-

चक्रवर्तिनः केचित् भूरिद्युम्न- इन्द्रद्युम्न- कुवलयाश्व-यौवनाश्व-वृद्धाश्व-अश्वपति-शश बिन्दु-हरिशचन्द्र- अम्बरिश- ननक्तु, शयीति-ययाति- अनरण्य- अक्षसेन- आदयः अथ मरुत्त भरत प्रभृतयो राजानः। (मैत्रायणि उपनिषद् १/५) महाभारत में अनेक महान् राजाओं के नाम गिनाये हैं जिनको भारत वर्ष अत्यन्त प्रिय था-

अत्र ते कीर्तियिष्यामि वर्ष भारतः भारतम् ।
प्रियमिन्द्रस्य देवस्य मनोवैवस्वतस्य च।।
प्रथोस्तु राजन् वेन्यस्य तथेक्ष्वाकोर्महात्मनः।
ययाते रम्ब रीशस्य मान्धातुर्नहुषस्य च।।
तथैव मुचुकुन्दस्य शिबै रौशीनरस्य च।
ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपते स्तथा।।
कुशिकस्य च दुर्धर्षं गाधेश्चैव महात्मनः।
सोमकस्य चदुर्धर्ष दिलिपस्य तथैवच।।
अन्येषां च महाराज क्षत्रियाणां बलीयसाम।
सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम् ।।

म.भा.भीष्म पर्व. अ.-९ /५-९

यहां महाभारत काल में भी अति प्राचीन रहे इन बलवान १९ राजाओं के नाम गिनाने के पश्चात् अन्येषाम् कहा जिनके समय भारत एक इकाई था। कालिदास के रघुवंश में रघुवंशियों को **'आ समुद्र क्षितीशानाम्'** अर्थात् समुद्र पर्यन्त भूमि के राजा कहा है, समुद्र पर्यन्त में द्रविड़ प्रदेश स्वतः समाहित हो जाते हैं।

पाण्डवों ने दो बार चारों दिशाओं में दिग्विजय की पहली राजसूर्य यज्ञ के पूर्व, इसमें दक्षिण के जिन राज्यों की विजय का उल्लेख है उनमें किष्किन्धा, तालकट, दण्डक, पाण्डय, द्रविड़ केरल ताम्रलिप्ति और आन्ध्र भी सम्मिलित हैं। इसी प्रकार युद्धोपरान्त दिग्विजय कर युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया जिसके दिग्विजय का भी विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। ये चतुर्दिक, विजयं तात्कालिक भारत की राजनैतिक एकता सिद्ध करते हुए दक्षिणावर्त को उससे एक्य सिद्ध करती है।

महाभारत के पश्चात् भी इतिहास में भारत की राजनैतिक एकता के निदर्शन प्राप्त होते हैं- सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व नागवंश और शिशुनाग वंश के बड़े-बड़े साम्राज्य थे। नन्दवंश का साम्राज्य, पंजाब से सम्पूर्ण पूर्वी भारत तक तथा दक्षिण से गोदावरी नदी तक विस्तृत था। मौर्यों का साम्राज्य नन्दों से भी बड़ा था जो उत्तर-कश्मीर से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी के पार तक पश्चिम मे हिन्दु कुश से लेकर वर्तमान बांग्लादेश तक था। जो मुगलों के साम्राज्य तथा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य से बड़ा था। शक संवत् के प्रणेता कनिष्क के साम्राज्य की सीमायें पश्चिम में इरान तो उत्तर में चीन को पूर्व में बंगाल को और दक्षिण में कृष्णा नदी को छूती थी। गुप्त काल से समुद्र गुप्त महान् विजेता हुआ। प्रयाग प्रशस्ति आज भी उसका यशोगान करती है। डॉ. स्मिथ ने उसे भारतीय नेपोलियन पुकारा है। व्यावहारिक नीति का प्रयोग कर उसने दूरवर्ती राज्यों को अधीनता स्वीकार कराके छोड़ दिया। अश्वमेध यज्ञ कराना उसकी मुद्राओं से सिद्ध है। मुगलों ने भी उस प्रवृत्ति को जारी रखा, मुगल साम्राज्य भारत में ब्रिटिश साम्राज्य से बड़ा था। पर गौरांगा कहता है कि भारतीय तो राजनैतिक एकता को जानते तक नहीं थे। ठीक है। अपने मुख से कोई हरड़ को दस हाथ की कहे तो कह सकता है।

वास्तव में अटक से कटक तक कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत सदैव से एक था, एक है। द्रविड़ प्रदेश आर्यावर्त का ही भाग है। विशाल देश में देशकाल और जलवायु के अन्तर से स्थानीय भिन्नताएं पनप जाती है पर वे एकता के सूत्रों को बाधित नहीं करती, जाति/ पंथ भाषा और क्षेत्र के इन ऊपरी भेदों को राजनैतिक स्वार्थ के वशीभूत गौरांगों ने अधिकाधिक गहरा किया। उत्तर दक्षिण का भेद भी उसी कूटनीति की घड़न्त है जिसकी प्रमाण पुरस्कार समीक्षा ऊपर की गई है। विश्वास है गोरी चमड़ी के काले कारनामों को समझने में सहायक होकर यह लेख राष्ट्रीय एकता का पोषक सिद्ध होगा। ■

मेरी कोलकाता- दार्जिलिंग यात्रा

आर्य समाज बड़ा बाजार (कोलकाता) का निःशुल्क योग कक्षा प्रथम वर्ष पूर्ति उत्सव सम्पन्न

मेरे समधी श्री अशोक जी शर्मा, निवासी-चैनपुर, जिला- पलामू झारखण्ड गत वर्ष २०१७ में पक्षाघात (लकवा) रोग से ग्रसित हो गए थे। उनका उपचार रांची के रिम्स चिकित्सालय में हो रहा था। कुशल क्षेम जानने के उद्देश्य से मैं रांची गया। वहां से कोलकाता का मानस बना चैनपुर होते हुए कोलकाता २०१७ के जून माह में पहुंचा। यह मेरी पश्चिम बंगाल की भूमि की प्रथम यात्रा थी। आर्य जगत् के सुविख्यात भजनोपदेशक श्री कैलाश जी कर्मठ तथा वैदिक संसार में प्रकाशित रचनाओं के सुविज्ञ रचनाकार श्री खुशहालचन्द्र जी आर्य तथा बहन श्री मृदुला जी अग्रवाल के अतिरिक्त किसी से परिचय नहीं था। भाई कैलाश जी और श्री खुशहालचन्द्र जी तो कोलकाता से बाहर थे। उनसे भेंट नहीं हो पाई। बहन मृदुला जी से भेंट हुई तथा आर्य समाज बड़ा बाजार के उस समय के मन्त्री श्री नरेश जी गुप्ता व पुरोहित आचार्य राहुल देव जी एवं आर्य समाज विद्यासागर के मन्त्री श्री महेश जी आर्य से नवीन परिचय हुआ। दो दिवस रुककर लौट आया।

इस वर्ष पुनः जनवरी माह से ही जाने का प्रयास कर रहा था। पत्रिका प्रकाशन, यात्रा आरक्षण आदि व्यवस्थाओं के उपरान्त दिनांक २३-२४ मई की मध्यरात्रि से ४ जून २०१८ को इन्दौर वापसी का कार्यक्रम परमपिता परमात्मा की महती कृपा से बन गया। उस निराले शिल्पी की विहंगम रचना को चक्षुओं से प्रत्यक्ष दृष्टिपात करने तथा स्नेहीजनों आर्यों से मेल-मिलाप का अद्भुत, रोमांचकारी अविस्मरणीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पारिवारिक दायित्वों से मुक्त तथा परिवार में कोई आवश्यक कार्य कठिनाई न होने की दशा में अधिकांश मेरे साथ प्रवास पर रहने वाली मेरी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा भी इस यात्रा में मेरे साथ रहीं। मेरी ज्येष्ठ सुपुत्री श्रीमती जयश्री शर्मा जो शासकीय विद्यालय में शिक्षिका है के ग्रीष्म अवकाश होने से वह और उसका प्यारा सुपुत्र आदित्य शर्मा के भी साथ चलने का कार्यक्रम बन गया और इनके कारण से ही मेरी कोलकाता यात्रा का विस्तार होकर उसमें दार्जिलिंग भी जुड़ गया। अन्यथा परमपिता परमात्मा की महती कृपा से प्रकृति तत्वों में कोई विशेष रुचि न होने के अब घूमने-फिरने, खाने-पीने वस्त्र आदि के प्रति मेरा और मेरी धर्म पत्नी का कोई आकर्षण तो रहा नहीं। हमारा और हमारे जीवन का तो अब एक ही लक्ष्य रह गया है कि उस परमपिता की प्राप्ति जो उस परमपिता की न्यायकारी व्यवस्था पर निर्भर है, किन्तु उस परमपिता का वेदज्ञान कितना अधिक से अधिक विद्वानों-महापुरुषों के माध्यम से सत्संग तथा स्थान-स्थान पर आर्यजनों के संग के द्वारा प्राप्त कर सकें यह हमारे ऊपर निर्भर है। यह भी तभी तक सम्भव है जब तक शरीर साथ दे रहा है, अन्यथा नाक से बहेगा नाला, आंखों में पड़ेगा जाला और लाठी से पड़ेगा पाला, ऐसी स्थिति में प्यास लगने पर पानी के लिए भी दूसरों पर आश्रित होना होगा और जीवनभर इन्द्रियों द्वारा भोगे गए भोग चैन की बंशी नहीं बजाने देंगे। तब पता चलेगा कि इस विलक्षण मानव जीवन को व्यर्थ ही व्यतीत कर दिया। हाथ कुछ न रहेगा, केवल पाश्चाताप के आंसू बहाने के।

यह बताना आवश्यक इसलिए है कि एक ही यात्रा पर निकले यात्रियों के अपने-अपने लक्ष्य भिन्न-भिन्न होते हैं। इसी प्रकार हम लोगों के भी लक्ष्य भिन्न-भिन्न थे हम सभी के लक्ष्यों से भिन्न लक्ष्य लेकर हमारे साथ छोटी पुत्रवधू और उसकी सुपुत्री कु. वैदिका भी हमारी यात्रा की आधी यात्रा की सहयात्री के रूप में हमारे साथ हो गई। उसका लक्ष्य था अपने रुग्ण पिता तथा परिवारजनों के साथ अधिक से अधिक समय रहना।

दिनांक २३-२४ की मध्यरात्रि को अहमदाबाद-कोलकाता लौहपथगामिनी के द्वारा उज्जैन से प्रस्थान किया। सुपुत्र नीतिन शर्मा अपने चार पहिया वाहन से हमें बैठाने हेतु आया था। दिनांक २५ के ब्रह्ममुहूर्त में लगभग तीन बजे डाल्टनगंज स्टेशन पर बहू को लेने उसके भाई कृष्ण और जयदेव आ गए थे। दिनांक २५ को सायंकाल ४ बजे हम कोलकाता (बेलगछिया) स्टेशन पर उतरे। आर्य समाज बड़ा बाजार पहुंचे। डॉ. जे.आर. शर्मा इलाहाबाद वाले इन दिनों अपने सुपुत्र श्री प्रभात रंजन जी शर्मा के पास कोलकाता में ही हैं। आपके सुपुत्र बी.एस.एफ. में द्वितीय कमान अधिकारी के पद पर सेवारत् हैं। आपका आग्रह था कि मैं आपके परिवार का बी.एस.एफ. कैम्पस कोलकाता में आतिथ्य स्वीकार करूं, किन्तु मैं पूर्व से श्री खुशहालचन्द्र जी को सूचित कर चुका था, अतः उन्होंने मेरे विश्राम का प्रबन्ध आर्य समाज बड़ा बाजार में कर दिया था और मेरे लक्ष्य की पूर्ति में मेरे लिए अधिकतर सुविधाजनक आर्य समाज रहता है।

आर्य समाज में प्रवेश के पूर्व ही डॉ. जे.आर. शर्मा जी प्रतिक्षा करते मिल गए। आर्य समाज के व्यवस्थापकों से भेंट उपरांत सामान आदि रख व्यवस्थित हुए। कुछ समय पश्चात् खुशहालचन्द्र जी भी आ गए, यह है आर्यों का व्यवहार।

दिनांक २४-२५ को यात्रा के कारण यज्ञ-उपासना न करने का क्षोभ रहा। मात्र मन्त्र पाठ किया। दो दिवस से गर्म भोजन भी नहीं मिला था। आर्य समाज के सामने भोजनालय में भोजन कर विश्राम किया।

दिनांक २६ को बहन मुदुला जी के यहां यज्ञ और भोजन पूर्व निर्धारित था। प्रातः दिनचर्या से निवृत्त हो बहन जी के यहां पहुंचे। बहनजी और समस्त परिजन आत्मियता से मिले। भोजन किया। खूब मन भर कर पारिवारिक, सामाजिक, सैद्धान्तिक वार्ताएं की और आर्य समाज लौट आए। श्री खुशहालचन्द्र जी के साथ आर्य समाज बड़ा बाजार के मन्त्री श्री आनन्द देव जी की गद्दी पर भेंट करने गए। उनसे वार्ता हुई उन्हें वैदिक संसार का सदस्य बनाया।

दिनांक २७ को दैनिक नित्यकर्म से निवृत्त हो ध्यान उपासना, यज्ञ किया। यज्ञ पश्चात् स्वामी अमृतानंद जी द्वारा संवत् २०५९ में प्रकाशित पुस्तक **'योग क्या, क्यों कैसे?'** के पृष्ठ संख्या ६ से १३ तक योग क्या? का वाचन कर विशेष रूप से योग दर्शन के २/१५ सूत्र की व्याख्या कर दुःखों के विषय में अवगत करवाया।

पश्चात् फूल बाजार (हावड़ा ब्रीज) वाले गंगा घाट होते हुए आर्य समाज कलकत्ता (विधान सरणी) के साप्ताहिक सत्संग में पहुंचे। डॉ. देवव्रत जी के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ हो रहा था। परिजनों को आहूति देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डॉ. जे.आर. शर्मा जी ने संस्था मन्त्री दीपक जी आर्य व पदाधिकारियों और अन्य आर्यजनों से परिचय करवाया। यज्ञशाला में देवयज्ञ पश्चात् विशाल सभागार में सत्संग प्रारम्भ हुआ। ज्वालापुर के स्नातक वयोवृद्ध आचार्य आत्मानन्द जी तथा उपनिषदों के मर्मज्ञ पं. देवनारायण जी तिवारी के दर्शन और प्रवचन का लाभ प्राप्त किया। आर्य समाज कलकत्ता की ओर से मेरा आत्मिक अभिनन्दन कर अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर दिया गया।

सत्संग समापन पश्चात् पं. देवनारायण जी ने अपने आवास स्थान पर आत्मियतापूर्वक ले जाकर अपनी स्वलिखित काव्य रचनाओं के संग्रहण पर प्रकाशित पुस्तकें **'श्री कृष्ण चरित्र मानस'**, **'योगेश्वर'**, **'मर्यादा पुरुषोत्तम'** (दो भागों में) **'उद्गीथ रहस्य'**, **'आलोक-पुञ्ज'**, **'अमृत**

सिन्धु', '**मुक्ति सोपान**' को भेंट किया तथा जलपान करवाया।

आर्य समाज से प्रस्थान कर महानगर भ्रमण का मानस था जिसे त्याग कर शर्मा जी के आग्रह पर उनके घर पहुंचे। परिजनों से भेंट की भोजन किया, गंगा किनारे स्थित वृक्षों से आच्छादित सुरम्य वातावरण का आनन्द लिया। पश्चात् आर्य समाज लौट आए।

सायंकाल आर्य समाज बड़ा बाजार में ५ बजे से निःशुल्क योग कक्षा के प्रथम वर्ष पूर्ति का उत्सव डालर बनियान वाले श्री दिनदयाल जी गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित था। उपरोक्त आयोजन में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रशिक्षुओं द्वारा अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन किया गया। समारोह की उद्घाटनकर्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती गीता चौधरी काउंसलर उपस्थित थी। योगगुरु डॉ. सत्येन्द्र जी आर्य, दिल्ली, संस्था संरक्षक खुशहाल चन्द्र जी आर्य, मन्त्री श्री आनन्द देव जी, पूर्व मन्त्री श्री नरेश जी गुप्ता, उप प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी अग्रवाल, ट्रस्टी चांद रतन जी दम्माणी, डॉ. जे.आर. शर्मा, योग कक्षा संचालिका कु. पूजा शर्मा और सुमन साव उपस्थित रहे। संचालन योगेन्द्र जी गुप्ता तथा योगेन्द्र जी दम्माणी द्वारा किया गया। योग कक्षा संचालिकाओं (अवैतनिक) का सम्मान किया गया।

दिनांक २८ मई को दिनचर्या से निवृत्त हो ध्यान-उपासना-यज्ञ किया पश्चात् सामान लेकर चल पड़े हावड़ा स्टेशन को जहां से ११.१५ को न्यू जलपाई गुड़ी के लिए प्रस्थान करना था। धर्मपत्नी को सामान के साथ स्टेशन पर बैठाया और सुपुत्री तथा दोहिते को लेकर गंगाघाट आए। नौका विहार करवाया। दोहिते आदित्य को गंगा स्नान करने का अत्यन्त चाव था उसे स्नान करवाया।

सिकन्दराबाद-गोवाहाटी लौहपथगामिनी से हावड़ा से प्रस्थान कर रात्रि लगभग १० बजे न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पर उतरे। वहां से लगभग १० किलोमीटर दूरी पर आर्य समाज बड़ा बाजार कोलकाता के मन्त्री श्री आनन्ददेव जी आर्य के छोटे भाई श्री सत्येन्द्र आर्य के निवास पर सीलीगुड़ी रात्रि ११ बजे लगभग पहुंचे। आपकी धर्म पत्नी ने बगैर किसी परेशानी भावमुद्रा के अत्यन्त सहजता के साथ भोजन बनाया-करवाया।

दिनांक २९ को प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत्त हो ध्यान-उपासना की तथा आर्य जी के विशाल भवन के चौथे माले पर स्थित भव्य यज्ञशाला में हम सभी ने देवयज्ञ किया पश्चात् प्रातःराश लेकर दार्जिलिंग के लिए प्रस्थान किया। श्री सत्येन्द्र जी से संक्षिप्त वार्ता से जाना कि आप वैदिक धर्म तथा सिद्धान्तों से ओतप्रोत इसके विस्तार हेतु प्राण-प्रण से समर्पित हैं। आप '**वैदिक विचार मंच**' के माध्यम से गुरुकुल-वृद्धाश्रम आदि वृहद योजना पर सहयोगियों के साथ कार्यरत हैं। सायंकाल का भोजन भी आपने साथ बांध दिया। बेटी को बेटी की तरह विदा किया। सभी को यथायोग्य भेंट दी तथा हमारे अतिरिक्त सामान को आर्य समाज गुरुंग बस्ती में रखवाकर हमें टेक्सी स्टेशन तक छोड़ने हेतु सेवक को साथ भेजा। आपके व्यवहार से हम अभिभूत हो गए। वैदिक धर्म तथा संस्कार आपको अपने पूर्वजों से वीरासत में प्राप्त हुए हैं। २८ मई को आपके विवाह की ३०वीं वर्षगांठ भी थी। २५वीं वर्षगांठ पर आपके यहां सुश्री अंजलि जी पधारी थीं और अपने सुमधुर भजनों से वेदामृत वर्षा की थी।

सिलगुड़ी से प्रस्थान कर सिलीगुड़ी से लगभग २६ हजार फिट की ऊंचाई पर ७५ किलोमीटर दूर टेढ़े-मेढ़े, संकरे रास्तों से चढ़ाई चढ़ते हुए सायंकाल दार्जिलिंग पहुंचे। विश्राम स्थल तथा दूसरे दिन भ्रमण हेतु वाहन का प्रबन्ध किया। धर्म पत्नी को विश्राम स्थल पर छोड़ा। बेटी-दोहिते को लेकर पैदल भ्रमण हेतु बाजार में निकले। मई माह में शीत का आनंद अद्भुत था।

भाँप द्वारा चलित तीन-चार डब्बों वाली परिदर्शन लौहपथगामिनी (नैरोगेज खिलौना ट्रेन) के स्टेशन के समीप ही हमारा विश्राम स्थल था। विश्राम स्थल पर लौटकर ध्यान-उपासना पश्चात् भोजन-शयन किया।

दिनांक ३० को ब्रह्ममुहूर्त से पूर्व तीन बजे जागकर नित्यकर्म स्नानादि से निवृत्त हुए कि वाहन चालक अपना वाहन लेकर पहुंच गया। वाहन के अन्दर संध्या के मन्त्रों का सामूहिक पाठ किया। दार्जिलिंग से लगभग ८०० फीट की ऊंचाई पर स्थित '**टाईगर हिल**' जहां से सूर्योदय का मनोहारी दृश्य देखा जा सकता है। वहां पहुंचकर देखा कि सूर्योदय देखने हेतु लोगों का मेला लगा हुआ है, किन्तु आकाश में घनघोर बादल छाये हुए हैं। हल्की-हल्की बूंदे गिर रही हैं, छाते बिक रहे हैं। ऐसी दशा में सूर्योदय का दृश्य नहीं देख पाये। वहां से लौटकर दार्जिलिंग से लगभग ४ हजार फीट की गहराई पर '**रॉक गार्डन**' का प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहारी था। चट्टानों के बीच कल-कल कर बहता गिरता स्वच्छ निर्मल शीतल जल। उस सुरम्य वातावरण में हमने देवयज्ञ किया। वहां से लौटकर गोरखा मेमोरियल गार्डन, हिमालय पर्वतारोहण प्रशिक्षण केन्द्र तथा संग्रहालय, बौद्ध मन्दिरों- स्तूपों के देखने के पश्चात् दोपहर लगभग तीन बजे सीलीगुड़ी के लिए प्रस्थान किया।

सिलीगुड़ी पहुंचकर आर्य समाज में सामूहिक सन्ध्या मन्त्र पाठ का सौभाग्य प्राप्त किया। भोजनादि से निवृत्त हो न्यू जलपाई गुड़ी स्टेशन पहुंचे। वहां से १०.१५ रात्रि पर चलने वाली ग्रीष्म अवकाश विशेष लौहपथगामनी से प्रस्थान कर दिनांक ३१ को दोपहर लगभग १२.३० पर हावड़ा स्टेशन पहुंचे। वहां से १.१० पर चलने वाली हावड़ा-जबलपुर (शक्तिपुञ्ज) लौहपथगामिनी से रात्रि २ बजे डाल्टनगंज स्टेशन पर उतरे। वहां से लगभग ५ किलोमीटर दूरी पर चैनपुर सुपुत्र की ससुराल पहुंचे। स्टेशन पर लेने सुपुत्र के साले विकास जी तथा कृष्णा जी आ गए थे। पुत्र वधु और पूरा परिवार प्रतीक्षा कर रहा था।

लगभग तीन घण्टे विश्राम पश्चात् दिनांक १ जून को नित्यकर्म से निवृत्त हो ध्यान-उपासना की। समस्त परिजनों से मिलकर देवयज्ञ किया। '**योग क्या, क्यों, कैसे?**' पुस्तक के पृष्ठ संख्या १४ से १९ तक योग क्यों का वाचन किया। विशेष रूप से योग दर्शन के १/२ सूत्र की व्याख्या द्वारा उपदेशित किया।

भोजनादि से निवृत्त हो पुत्रवधु के ताऊ तथा आर्य समाज चैनपुर के वरिष्ठ सदस्य श्री जगदीश जी शर्मा से भेंट करने पहुंचे। उन्होंने रात्रि विश्राम वहीं करने और प्रातःकाल यज्ञ वहीं करने का अनुरोध किया। अतः वहीं पर सायंकालीन सामूहिक सन्ध्या मन्त्र पाठ पश्चात् भोजन-शयन किया।

दिनांक २ मई को नियमित दिनचर्या संध्या-उपासना उपरान्त देवयज्ञ किया। प्रातःराश पश्चात् वहां से प्रस्थान कर विश्राम किया। भेंट करने के लिए स्नेहीजन आते रहे। स्नेहीजनों-परिजनों सबके साथ सामूहिक रूप से संध्या के मन्त्रों का पाठ किया। उपस्थितों को किसी भी भाषा में किसी भी प्रकार से जैसी उनकी ज्ञान क्षमता हो उस अनुसार ईश्वर को स्मरण -उपासना करने की प्रेरणा दी।

आर्य समाज चैनपुर के मन्त्री श्री हरिहरप्रसाद जी आर्य से भेंट करने उनके निवास पर पहुंचे। पूर्व मन्त्री श्री बसन्त जी शर्मा से पूर्व दिवस उनके निवास पर भेंट हो चुकी थी। भोजनादि से निवृत्त हो रात्रि १० बजे स्टेशन के लिए प्रस्थान किया। वहां से रात्रि लगभग २ बजे जबलपुर के लिए प्रस्थान किया।

३ मई को लगभग चार बजे सायंकाल जबलपुर पहुंचे। यात्री प्रतिक्षालय में स्नानदि से निवृत्त हो सामूहिक संध्या मन्त्र पाठ किया। भोजनादि से निवृत्त हो जबलपुर-इन्दौर लौहपथगामनी से रात्रि १२.३० पर प्रस्थान कर ४ मई को प्रातः ११ बजे इन्दौर पहुंच कर लगभग ५००० किलोमीटर की यात्रा की सुखद् अनुभूतियों को समेटे यात्रा का समापन हुआ।

सुखदेव शर्मा, प्रकाशक
वैदिक संसार, इन्दौर

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

गतांक से आगे- दिनांक २१ दिसंबर २०१७ से २१ जून २०१८ तक

जिनकी श्वांस-प्रश्वास में ओ३म् बसता है, जिनका जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को समर्पित है, जिनका परिवार आर्य समाज है। जिनके प्रयास और सहयोग से सहारनपुर जिला सम्पूर्ण भारत में वैदिक संसार के पाठक संख्या में १६१ सदस्यों के साथ प्रथम पायदान पर १५७ सदस्यों के जिले इन्दौर को पीछे छोड़कर प्रथम पायदान पर अपना स्थान बना चुका है, मन्दसौर जिला १४५ सदस्यों के साथ तृतीय स्थान पर है। ऐसे आर्य व्यक्तित्व के धनी, सरलता-सहजता की प्रतिमूर्ति, धर्म परायण **वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री आदित्य प्रकाश जी गुप्त** का जन्म ९.४.१९४४ को माता द्रोपदी देवी की कोख से पिता श्री धर्मदेव जी के यहां ग्राम-खेड़ा अफगान, जिला- सहारनपुर (उ.प्र.) में हुआ। मात्र तीन वर्ष की अल्पायु में आपकी माता का देहावसान हो जाने से आप अपनी माता के वात्सल्य प्रेम से विमुख हो गए।

आपको वैदिक धर्म आर्य समाज और इनके लिए संघर्ष वीरासत में प्राप्त हुए। आपके दादाजी श्री गणेशीलाल जी ने ३ सितम्बर १८९७ को आर्य सहयोगियों का साथ लेकर खेड़ा अफगान में आर्य समाज की स्थापना की। जिसके कारण उन्हें रुढ़िवादियों तथा विधर्मी बहुल ग्रामवासियों का कोपभाजन का शिकार बनना पड़ा। उन्हें अनेक झूठे प्रकरणों में फंसाया गया। व्यवसाय में बाधा उत्पन्न कर हानि पहुंचाई गई, किन्तु आपके दादाजी कत्तर्व्य पथ से डिगे नहीं, जीवन पर्यन्त आर्य समाज के लिए संघर्ष करते हुए १९५० को उनका निधन हो गया।

आपकी चार बहने तथा एक बड़े भाई आनन्द प्रकाश जी मित्तल हैं जो अवकाश प्राप्त प्रशासनिक अधिकारी हैं। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आपको इण्टर में ही स्कूल छोड़ना पड़ा।

दिनांक ५.७.१९७० को आपका विवाह गाजियाबाद के प्रसिद्ध आर्य नेता वरिष्ठ समाजसेवी, परमानन्द जी आर्य की सुपुत्री सौ. का. शशिप्रभा के साथ हुआ। आपकी श्रीमती जी ने हिन्दी विषय में एम.ए. किया है। आपके दो सुपुत्र श्री वेदभूषण गुप्त तथा चन्द्रभूषण गुप्त तथा एक सुपुत्री श्रीमती आभा रश्मी हैं। आपके छोटे सुपुत्र गाजियाबाद में सपरिवार निवासरत हैं तथा बड़े सुपुत्र सपरिवार सहारनपुर में निवासरत हैं।

आपका पैतृक व्यवसाय खेती तथा शुगर क्रैशर का होने के कारण स्वाध्याय वा आपको बहुत समय प्राप्त होता था। स्वाध्याय के प्रति रुचि होने से वैदिक सिद्धान्त आपके रग-रग में रच बस गये। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन में कभी सिनेमा तथा रामलीला मंचन नहीं देखा।

आपने कपड़े का व्यवसाय भी किया। वर्तमान में आपका किराना आदि, जनरल वस्तुओं का अच्छे स्तर पर व्यवसाय है, जिसमें आपके बड़े सुपुत्र हाथ बंटाते हैं। आपने अपने परिवार-व्यवसाय से अधिक ध्यान आर्य समाज के सेवा कार्यों को दिया। इसके कारण आपको भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। १९७९ में आर्य समाज भवन का पुनर्निर्माण, १९८२ में हरिजन मोहल्ले में हरिजन मिलन समारोह, १९८३ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शाल वाले, दिल्ली तथा पं. शिवकुमार जी शास्त्री की उपस्थिति में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह, १९९७ में आर्य समाज खेड़ा अफगान का शताब्दी समारोह दिल्ली प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री साहिबसिंह वर्मा तथा राज्यपाल महामहिम वीरेन्द्र जी वर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में ऐतिहासिक आयोजन आपके मार्गदर्शन में किए गए। प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव, ऋषि दयानन्द जन्मोत्सव, बोध दिवस तथा बलिदान दिवस और अनेक आर्य पर्वों, महापुरुषों के जन्म दिवसों, पुण्यतिथियों आदि अवसरों पर आयोजन करते रहना आपके जीवन के अंग बन चुके हैं। आर्य समाज खेड़ा अफगान में १९८२ से दैनिक यज्ञ आपकी अस्वस्थता के दिवसों को छोड़कर होता आ रहा है। सहारनपुर जिला आर्य उप प्रतिनधि सभा के मन्त्री पद पर छह वर्षों तक सेवाएं देकर अनेक ग्रामों में आर्य समाजों की स्थापना की।

अनेक बिछड़े हुए भाइयों को प्रेरणा देकर विधर्म से स्वधर्म में घर वापसी करवाई। अनेक को प्रेरणा देकर दुर्व्यसन, मांसाहार आदि छुड़वाकर सद्धर्मी बनाया।

दिनांक ६.६.२०११ को स्नेहीजनों के सहयोग से वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास की स्थापना की। विगत ग्यारह वर्षों से आप वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिताओं का आयोजन करते आ रहे हैं। प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के लगभग १००० तक विद्यार्थी भाग लेते हैं। इन प्रतियोगिताओं की उपलब्धि यह है कि इसमें मुस्लिम परिवारों के विद्यार्थी भी भाग लेते हैं और उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पुरस्कार भी प्राप्त करते हैं। २०१५ में सहारनपुर में आयोजित भव्य पुस्तक मेले में आपने विभिन्न आर्य प्रकाशकों का वैदिक साहित्य मंगवाकर अल्प मूल्य में जन सामान्य के हाथों में वैदिक साहित्य पहुंचाया। इस वर्ष आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर आधे मूल्य पर साहित्य विक्रय किया गया। आपके द्वारा विद्वानों के मार्गदर्शन में **'उत्कृष्ट वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी', 'महर्षि दयानन्द जीवन दर्पण', 'वैदिक संस्कृति में स्त्री का महत्व', 'महर्षि दयानन्द का हरिद्वार और सहारनपुर प्रवास' 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप'** आदि पुस्तकों को प्रकाशित करवाया। जिसमें अनेक पुस्तक आपके द्वारा रचयित है। आपके कार्यों में आपके समस्त परिवारजन कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करते हैं। आप कहीं भी रहे, दैनिक यज्ञ के बगैर भोजन नहीं करते। रविन्द्रनाथ टैगौर विद्यापीठ इण्टर कालेज नकुड़, वेद मन्दिर नकुड़, आर्य समाज खालापार (सहारनपुर), जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा सहारनपुर आदि कई संस्थाओं द्वारा समय-समय पर आपको सम्मानित किया जा चुका है।

वैदिक संसार के आपके सम्पर्क में आने का भी परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से रोचक प्रसंग है। लगभग ४-५ वर्ष पूर्व मैं गुरुकुल पौधा (देहरादून) के वार्षिकोत्सव में भाग लेने गया था, वहां पर आर्य समाज खेड़ा अफगान के पूर्व मन्त्री तथा आदित्य प्रकाश जी के अभिन्न सहयोगी श्री अमित कुमार जी आर्य समाज खेड़ा अफगान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का स्टाल लगाये हुए थे। मैंने ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप और उत्कृष्ट वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी पुस्तकें लेकर पढ़ी, मैं आपके कार्यों से मन्त्र मुग्ध हो गया। मैंने मन्त्री जी को वैदिक संसार की प्रति दी तथा उसे मंगवाने का अनुरोध किया। इसके पश्चात् चलभाष पर आदित्य प्रकाश जी जो वर्तमान में आर्य

समाज खेड़ा अफगान के प्रधान है से वार्ता हुई आपने अवलोकनार्थ पूर्व प्रकाशित समस्त अंक मंगवाये। उसी समय मेरा हिमाचल प्रदेश के महर्षि दयानन्द मठ घण्डरा में श्रीरामफलसिंह जी आर्य द्वारा आयोजित साधना शिविर में सपत्निक जाना हुआ, वहां से लौटते समय मैं सहारनपुर आपसे भेंट करने पहुंचा। तबसे आप वैदिक संसार परिवार के अभिन्न सदस्य बन गए। डॉ. अशोक कुमार जी, श्री अमित कुमार जी, श्री राजेश कुमार जी (मन्त्री), श्री राजेश कुमार जी मच्छर हेड़ी आपके सुपुत्र वेदभूषण जी आदि अनेक आर्य बन्धुओं के सहयोग से आप वैदिक संसार को जन-जन के हाथों में पहुंचाने का पुनित कार्य कर रहे हैं।

प्रतिवर्ष आपसे लगभग एक माह के वैदिक संसार प्रकाशन का व्यय सहयोग प्राप्त हो जाता है। आप केवल आर्थिक सहयोग ही नहीं करते, अपितु समस्त सदस्यों की पत्रिका अपने पास मंगवाकर अपने सहयोगियों के सहयोग से घर-घर जाकर वितरित करवाते हैं। वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता है तथा आपके स्वस्थ दीर्घायुष्य जीवन की कामना करता है। आपका चलभाष- ८४४५०४४९२२ है।

आपकी प्रेरणा से बने वार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं-

उत्तरप्रदेश, जिला- सहारनपुरः श्री सुमित कुमार राजेश कुमार जी-खेड़ा अफगान, श्री रवि कुमार श्रीपाल जी-खेड़ा अफगान (द्विवार्षिक), श्री सुशील कुमार समेरचन्द जी-खेड़ा अफगान, श्री रमणकुमार जी-खेड़ा अफगान, श्री कृष्णलाल कन्टुराम जी- खेड़ा अफगान, श्री तेजपालसिंह अतरसिंह जी-खेड़ा अफगान, श्री आसु मांगेरामजी-खेड़ा अफगान, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्यवीर जी गुप्ता-खेड़ा अफगान, श्री ज्वेन्द्र कुमार रतनसिंह जी-खेड़ा अफगान, श्री ब्रजपाल फूलसिंह जी-खेड़ा अफगान, श्री अमित कुमार सुरेशचन्द्र जी आर्य-खेड़ा अफगान, श्री सुरेन्द्र कुमार ज्योतिराम जी-खेड़ा अफगान, श्री यशपाल जयभगवान जी-खेड़ा अफगान, श्री दीपेश कुमार अशोक कुमार जी गुप्ता-खेड़ा अफगान, श्री सोनू बुद्धि प्रकाश जी भटनागर-खेड़ा अफगान, श्री संजय कुमार रामेश्वर प्रसाद जी तायल-खेड़ा अफगान, श्री विनय कुमार रामेश्वर प्रसाद जी-खेड़ा अफगान। डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी सैनी (इस्लाम नगर वाले)-खेड़ा अफगान, डॉ. सुबोध कुमार जी, श्रीमती सावित्री देवी आर्य वैदिक आयुर्वेदिक चिकित्सालय-खेड़ा अफगान, श्री श्रवण कुमार हरिदेव जी-खेड़ा अफगान, श्री राजेश नकलीरामजी-खेड़ा अफगान, श्री मोहनकुमार सूरजमल जी पोस्ट मास्टर-खेड़ा अफगान, डॉ. प्रमोद कुमार जी -खेड़ा अफगान, मे. न्यू. शिव एजेन्सिज-खेड़ा अफगान, श्री नेमचन्द हरिकिशन जी गर्ग-खेड़ा अफगान, श्री संजय मेहरचंद जी-खेड़ा अफगान, श्री प्रफुल्ल सुभाषचन्द जी गुप्ता-खेड़ा अफगान, श्री श्रवण कुमार फूलसिंह जी-खेड़ा अफगान, (द्विवार्षिक), श्री शेरसिंह सिगारुसिंह जी आर्य-खेड़ा अफगान, श्री कुंवर पाल मदनलाल जी -खेड़ा अफगान, (द्विवार्षिक), श्री संजय ओमप्रकाश जी सैनी- खेड़ा अफगान, (द्विवार्षिक), श्री नरेश कुमार प्रकाशचंद जी-खेड़ा अफगान, श्री विनिशकुमार सुभाषचन्द जी गर्ग-खेड़ा अफगान, श्री नकलीराम लालसिंह जी सैनी-खेड़ा अफगान, श्री विनय कुमार प्रेमप्रकाश जी गर्ग-खेड़ा अफगान, श्री श्याम मेड़ीकल स्टोर (इस्लाम नगर वाले)-खेड़ा अफगान।

डॉ. सतेन्द्रसिंह इसमसिंह जी-मोहद्दिनपुर, श्री सतीश कुमार इलमसिंह जी -मोहद्दिनपुर, श्री विश्वास कुमार जी-मोहद्दिनपुर, श्री राजेश कुमार हुकुमचन्द जी मित्तल-मोहद्दिनपुर, श्री विरमसिंह बाबूरामजी-मोहद्दिनपुर, श्री महिपाल धूमपालसिंह जी-मोहद्दिनपुर, श्री ओमवीर रतीरामजी-मोहद्दिनपुर, (द्विवार्षिक), डॉ. तेजपालसिंह इलमसिंह जी-मोहद्दिनपुर, श्री अजीत सिंह प्रितमसिंह जी- मोहद्दिनपुर, (द्विवार्षिक), श्री अनिल कुमार शिवकुमार जी-मोहद्दिनपुर, चौधरी रतीराम धीरसिंह जी-मोहद्दिनपुर, श्री राजपाल मूलारामजी-मोहद्दिनपुर, श्री जशवीर देवीसिंह जी-मोहद्दिनपुर,

श्री संजीव कुमार मोहनलाल जी (नवागांव वाले)- नकुड़, श्री अशोक जगमाल सिंह जी चौहान-नसरुल्लागढ़ (नकुड़,) श्री राजन श्यामलालजी गुप्ता-नकुड़, श्री रमेश श्यामसिंह जी आर्य आसराखेड़ी (नकुड़), श्री अभय कुमार बुगलसिंह जी सैनी 'अधिवक्ता'-नकुड़, श्री चन्द्रशेखर सुरेशचन्द्र जी मित्तल-नकुड़, श्री अमरीश कुमार किशोरीलाल जी आर्य-नकुड़, श्री सन्दीप कुमार मोहनलाल जी -नकुड़, डॉ. उमेश कुमार सुखराम जी-नकुड़, श्री हरिदत्त देवदत्त जी आर्य-नकुड़, श्री महेन्द्र पाल विशम्बरसिंह जी रोहिला-नकुड़, श्री बसंत धर्मपाल जी आर्य-नकुड़,।

श्री मा. पवनसिंह दलेलसिंह जी-मच्छरहेड़ी, श्री सुनील कुमार जयपालसिंह जी सैनी-मच्छरहेड़ी, श्री शिवकुमार सुलेखचन्द जी सैनी-मच्छरहेड़ी, श्री सन्दीप कुमार वेदपालसिंह जी सैनी-मच्छरहेड़ी, श्री मदनपाल तेलूरामजी सैनी-मच्छरहेड़ी, श्री ईश्कलाल हरकेश जी सैनी-मच्छरहेड़ी।

श्री प्रेमचन्द बलवन्त सिंह जी- चापरचीड़ी, श्री विजेन्द्र कुमार प्रियांशु जी सैनी-चापरचीड़ी, श्री चन्द्रभान श्री लालजी-चापरचीड़ी, मा. संजय कुमार अतरसिंह जी-चापरचीड़ी,(द्विवार्षिक), श्री निर्देश प्रधान जी- चापरचीड़ी, श्री रविन्द्र पवनसिंह जी सैनी-चापरचीड़ी, श्री प्रधान/मन्त्री जी आर्य समाज-चापरचीड़ी, अनुज कुमार जी आर्य (पंवार)-चापरचीड़ी, श्री मोहित कुमार महेन्द्रसिंह जी- चापरचीड़ी, श्री मोतीराम जी प्रधान-चापरचीड़ी।

श्री राजकुमार भारतसिंह जी- रनियाला दयालपुर, श्री निशकुमार शम्भूसिंह जी-रनियाला दयालपुर, डॉ. मदनलाल जयपाल जी- रनियाली (द्यौराला), श्री नरेन्द्र कुंवर पाल जी-रनियाला दयालपुर, श्री मनीष कुमार रघुवीरसिंह जी-रनियाला दयालपुर, श्री कर्मसिंह मथुरासिंह जी सैनी-रनियाला दयालपुर।

श्री अजय बुद्धि प्रकाश जी गुप्ता- वेद मन्दिर सहारनपुर, डॉ. एस. एस. कुमार-सहारनपुर, श्रीमती मूर्ति देवी आर्या-रामपुर(सहारनपुर), श्री ऋषभ कुमार अमरनाथसिंह जी - दैदपुरा, श्री प्रदीप कुमार रामेश्वर प्रसाद जी- भूरीवास, श्री चरनसिंह धर्मसिंह जी सैनी- भूरीवास, श्री ब्रजेश कुमार रामकिशन जी धीमान- भूरीवास, श्री विनोद कुमार इलमचन्द जी सैनी-कपूरी, श्री राजकुमार जी- बहादरपुरा (रन्देवा), श्री ब्रह्मसिंह जीतसिंह जी नागल- रणदेवा, श्री श्यामलाल जी सैनी- जाजवा, श्री जगपाल सिंह मांगेरामजी -ढायकी, श्री सुशील कुमार जी-बहादरपुर, श्री लखन रतिराम जी-इस्लाम नगर, श्री राजेश कुमार रोशनलाल जी- घौराला।

उत्तराखण्ड, जिला- देहरादूनः श्री शिवकुमार जी गोयल देहरादून।

दिल्ली : श्री विनय कुमार जी कुरेले- नई दिल्ली २५।

वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत, स्वामी दयानन्द सरस्वती के पद चिन्हों पर चलने वाले वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री मनीराम जी चौहान का जन्म १२ अगस्त १९४४. को म.प्र. रायसेन के ग्राम-शिवतला में हुआ। आपकी माता-हीराबाई व पिता श्री आनन्दीलाल जी थे। आपके माता-पिता ईमानदार, कर्मठ व धर्मशील रहे हैं, जिसका प्रभाव आप पर भी शत-प्रतिशत पड़ा। आप वैदिक विचारधारा से सन् १९६८ से आर्य समाज बाड़ी से जुड़े। १९७० से वैदिक विद्वानों को आमंत्रित कर क्षेत्र

में प्रचार-प्रसार का कार्य करने में संलग्न हैं। अनेक बार वैदिक यज्ञों के आयोजन में उल्लेखनीय योगदान दिया। योग शिविरों के आयोजन में भी यथाशक्ति सहयोग करते हैं। आपकी वैदिक विचार धारा की अभिरुचि के परिणाम स्वरूप आपको रायसेन जिले के भारत- स्वाभिमान प्रभारी का दायित्व प्रदान किया गया। दायित्व का उल्लेखनीय निर्वहन करने के कारण रायसेन जिले में स्वामी रामदेव जी का योग शिविर सम्पन्न हुआ। आप आवासीय गुरुकुल होशंगाबाद को ३ वर्ष से दो हजार रुपए का सतत अर्थ सहयोग कर रहे हैं।

आप विभिन्न प्रतिभाओं के धनी हैं। शिक्षकीय दायित्व भी निष्ठापूर्वक समर्पण भाव से किया। शासन द्वारा आपका प्राथमिक विद्यालय आदर्श घोषित किया गया। परिणाम स्वरूप १९७९ में राज्यस्तरीय व १९९२ में राष्ट्रीय सम्मान से आपको सम्मानित किया गया। तथा १९९१ में रा.शै. अनुसंधान केन्द्र द्वारा शैक्षिक खिलौना प्रतियोगिता में पुरस्कार प्रदान किया गया।आप निर्धन असहाय बालकों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते हैं। आपसे शिक्षा प्राप्त २०-२५ छात्रों का नवोदय विद्यालय में चयन हुआ।

ग्राम स्तर पर गांधी वाचनालय व नवनिर्माण समिति की स्थापना की। संभागीय किराड़- क्षत्रिय विकास परिषद् की स्थापना १९६९ (पंजीकृत) में की। मूर्तरूप में किरार भवन बकतरा, भगवान सूर्यनारायण मन्दिर सरदार नगर को पूर्ण कराने में योगदान दिया। इन सभी के पीछे वैदिक विचार धारा के प्रचार का लक्ष्य रहा है।

आपको अखिल भारतीय किराड़ महासभा द्वारा समाज सेवा में उत्कृष्ट योगदान का २००१ में सम्मान, २००७ में किरार भूषण सम्मान से अलंकृत किया। तहसील शाखा- उदयपुरा, जिला- रायसेन ने समाज सेवा व उत्कृष्ट कार्य का, बरेली जिला-बनाओं संगठन में समाज सेवा व शैक्षिक कार्य का सम्मान प्रदान किया। वाल्मीकि संगठन ने भी सेवा कार्य का सम्मान प्रदान किया।

साहित्यिक दृष्टिकोण से भी अपने स्तर पर समाज सुधार के प्रति सेवा प्रदान की। स्वाध्याय जीवन का अंग है। कहा भी है- **काव्य शास्त्र विनोदेन कालो- गच्छति धीम्ताम् । व्यसनेन च मूर्खाणाम् निद्राया कलहेन वा।।** आप वैदिक साहित्य का अध्ययन करते हैं। समाज सुधार व वैदिक दृष्टिकोण से व्यक्त करते हैं कि **''जन्मना जायते शूद्रः।''** अर्थात् जन्म से सभी शूद्र होते हैं। कर्म से ही वर्ण प्राप्त होता है। इसी प्रकार **''भस्मान्त शरीरम्''** भस्म अर्थात् दाह संस्कार के साथ ही शरीर का अन्त हो जाता है। वैदिक ज्ञान के अभाव में मानव अन्धविश्वास व कुरीतियों में फंसा है। इसको केन्द्र में रखकर आप वर्तमान में लगभग ७३ वर्ष की आयु अवस्था और लकवा रोग से ग्रसित होने के उपरान्त भी आप गांव-गांव, घर-घर जाकर वैदिक संसार से परिवारों को जोड़ने का उल्लेखनीय सहयोग कर वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि की भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। सिहोर तथा रायसेन जिले में वैदिक संसार के अनेक परिवारों में पहुंचने का श्रेय आपको जाता है। इसके लिए वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता हैं तथा आपके स्वस्थ दीर्घायु जीवन की कामना करता है। आपका चलभाष क्रमांक ९९९३१८५६३० है। आपके द्वारा बनाए गए सदस्य निम्नानुसार हैं-

मध्यप्रदेश,जिला- रायसेनः श्री ब्रजभूषण मंगलसिंह जी पटेल-शिवतला, श्री निरंजन प्रहलादसिंह जी चौहान- कुटनासिर (द्विवार्षिक), श्री रमेश कुमार नन्हेलाल जी चौहान- कुटनासिर, श्री ब्रजकिशोर हरिसिंह जी सोनकर-बाड़ी कलां, श्री शोभाराम आशारामजी मालवीय- बाड़ी, श्री शंकर सिंह कमोदसिंह जी ठाकुर- पारतलाई, ठाकुर धनराजसिंह धर्मराज सिंह जी- हरसिली, श्री चन्नूलाल नन्हें जी सिलावट पूर्व शिक्षक- बाड़ी, श्री छोटे राम नन्हेंलाल जी आर्य- बाड़ी, श्री राजकुमार जी ठाकुर-चोंट, श्री भगवतसिंह जी पटेल- हरसिली, श्री बाबूसिंह हरनामसिंह जी भदौरिया-बाड़ी, श्री देवीसिंह काशीराम जी चौहान- कुटनासिर, श्री कालीचरण गुलाब सिंह जी चौहान- खपरियाकला।

अन्य महानुभावों से प्राप्त विविध सहयोग

स्वैच्छिक अनुदान

गुजरात, जिला-कच्छः श्री अखिलेश रामचन्द्र जी आर्य- गान्धीधाम।

जिला-अहमदाबादः श्री देवदत्त मूलचंद जी शर्मा- अहमदाबाद।

राजस्थान, जिला- अलवरः मा. विक्रमसिंह पन्नालाल जी जांगिड ढिगवाड़ (मांडन)।

आजीवन

पश्चिम बंगाल, कोलकाताः श्री दीनदयाल जी गुप्त 'डालर गारमेन्ट्स वाले'- ओम टावर, कोलकाता- ७१ ।

मध्यप्रदेश जिला-इन्दौरः श्री श्वेतकेतु जगदीश प्रसाद जी वैदिक-

अग्रवाल परिवार पर टूट पड़ा दुःखों का पहाड़

श्रीमती राधाबाई

नमन अग्रवाल

वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित, सरल-सहज, सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी तथा वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी श्री मनोज जी अग्रवाल सुपुत्र स्व श्री लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल, निवासी-शिवपुरी (म.प्र.) के ज्येष्ठ भ्राता श्री गणेशीलाल जी का देहावसान ४ दिसम्बर को ६० वर्ष की आयु में हो गया। परिवार आपके शोक से उबर नहीं पाया था कि स्व. श्री गणेशीलाल जी के सुपुत्र नमन अग्रवाल का २९ वर्ष की अल्पायु में दिनांक २४ मई को इन्दौर से शिवपुरी लौटते समय कार दुर्घटना में दुःखद निधन हो गया। आपका विवाह ७ फरवरी २०१८ को मात्र तीन माह पूर्व ही हुआ था। आप शिवपुरी में ज्योति कलेक्शन के नाम से रेडिमेड वस्त्र व्यवसाय में संलग्न थे। आप मिलनसार तथा होनहार युवक थे। इस दुःखद घटना के घाव हरे ही थे कि अचानक परिवार पर फिर वज्रपात हुआ और आपकी माताजी श्रीमती राधाबाई धर्मपत्नि स्व. श्री लक्ष्मीनारायण जी का ७८ वर्ष की आयु में दिनांक ४ जून को निधन हो गया। माताजी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश जी गान्धी के सुपुत्र श्री समीर जी गान्धी द्वारा करवाया गया। माताजी अपने पीछे तीन सुपुत्र स्व. गणेशीलाल जी, मनोज तथा मनीष अग्रवाल का भरापुरा परिवार छोड़ गई। आर्य समाज शिवपुरी के सदस्यों, स्नेहीजनों तथा परिवारजनों ने वृहद संख्या में उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा शोक-सन्तप्त अग्रवाल परिवार को ढांढस बन्धाया।

वैदिक संसार परिवार ज्ञात-अज्ञात समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

वैदिक सदन भंवरकुआ, इन्दौर।

गुजरात, बड़ौदा: श्री अनिल कुमार जी शर्मा- बड़ौदा

त्रैवार्षिक

राजस्थान, जिला- उदयपुर: श्री सोहनसिंह जी चौहान- आर्य समाज पिछौली, उदयपुर।

जिला-अलवर: श्री रणजीतसिंह पूर्णसिंह जी सोलंकी- खैरथल।

जिला- जालौर: श्री इन्द्रसिंह गुमानसिंह जी राव- रावों का वास, धोरा ढाल, भिनमाल

पश्चिम बंगाल, कोलकाता: श्री आनन्ददेव जवाहरलाल जी आर्य- कोलकाता, श्री चांद रतन चेतन दास जी दम्मानी- कोलकाता।

मध्यप्रदेश, जिला-शाजापुर: श्री मांगीलाल रामसिंग जी आर्य- करजू, श्री हरिसिंह देवीसिंह जी आर्य 'सरपंच सा.' करजू।

हरियाणा, जिला- फरीदाबाद: श्री सूरज चुन्नीलाल जी आर्य- फरीदाबाद।

वार्षिक

पश्चिम बंगाल, कोलकाता: श्री महेश गोहन्तदास जी- आर्य समाज विद्यासागर कोलकाता।

बिहार, जिला- मुंगेर: श्री राजेन्द्र दास जी 'डीलर'- आर्य समाज कटियारी

उत्तराखण्ड, (खपरा) जिला- टिहरीगढ़वाल: श्री मनीष कुमार जी शर्मा- बराई।

जिला- पौड़ी गढ़वाल: डॉ. हरेन्द्र कुमार जी- कोटद्वार।

मध्यप्रदेश: जिला-शिवपुरी: श्री संजय मदनलाल जी शिवहरे- शिवपुरी, श्री हरिश जी अग्रवाल-शिवपुरी, श्री लखवीरसिंह जी आर्य 'राणा'- शिवपुरी, श्री दयाशंकर शिवनारायण जी गोयल- शिवपुरी, श्री रामकुमार प्यारेलाल जी राठौर- शिवपुरी, पं. योगेश रामहेत जी उपाध्याय- शिवपुरी।

जिला-बड़वानी: श्री मोहन द्वारकाप्रसाद जी पाटीदार- कुँआ, जयप्रकाश राधेश्याम जी सोनी-बड़वानी, श्री अन्तरसिंह दौलतसिंह जी चौहान- सेन्धवा, श्री कृष्ण कुमार दशरथ जी पाटीदार- केरवा (कुँआ), श्री प्रकाश नत्थू जी पाटीदार-कुआँ, श्री विजय देवव्रत जी पाटीदार-कुआँ।

जिला-बैतूल: वैद्य श्री रमेश केशव जी आर्य-चिचौली, श्री सुरेश जी मालवीय- चिचौली, श्री संजू हरिकिशोर जी जायसवाल- चिचौली, श्री दिलीप केशव जी आर्य- चिचौली, श्री ओमप्रकाश राजेन्द्र प्रसाद जी मदरेले-चिचौली, श्री सतीश शिवदयाल जी मदरेले, श्री अर्जुन बसन्तलाल जी मालवीय-चिचौली, श्रीमती इन्दिरा देवी राजेन्द्र प्रसाद जी आर्य-चिचौली, श्री विजय (लड्डू) शिवकिशोर जी आर्य-चिचौली, श्री सुबोध दीपचन्द जी जायसवाल-चिचौली, श्री सुभाष जी आर्य (सुनील हार्डवेअर)-चिचौली, श्रीमती शीतल साहेबलाल जी मालवीय-चिचौली, श्री राहुल नरेश जी पटेल-चिचौली, श्री क्रान्ति दिनेश जी आर्य-चिचौली, श्री देवेन्द्र जी जायसवाल युवराज इन्टरप्राइजेस-चिचौली।

जिला-रतलाम: श्री मांगीलाल बगदीराम जी परमार- धामनोद, श्री सरदारसिंह भूपसिंह जी चौहान-डोसीगांव।

जिला- जबलपुर: श्री शिवकुमार दमड़ीलाल जी सत्यार्थी आर्य समाज गंजीपुरा, जबलपुर, श्री योगेन्द्र किशनलाल जी आर्य- गंजीपुरा, जबलपुर।

जिला-सागर: श्री छक्कूलाल जी प्रजापति- बड़ौदिया कला।

जिला-सीधी: श्री रामहित्र जी अग्निहोत्री-मलदेवा।

गुजरात, जिला- कच्छ: श्री ईश्वर भाई जेठाभाई पटेल- नखत्राणा, योगाचार्य श्री कुलदीप सुरेशचन्द्र जी आर्य- गान्धीधाम, श्री हितेन्द्र भाई- आर्य स्टील, भुज।

जिला- मेहसाणा: श्री प्रजापति भागीरथ छगनभाई- मेहसाणा।

जिला- आणद: श्री केतन कुमार जगदीश भाई पटेल-नावली,

राजस्थान, जिला-अजमेर: श्री दीपक जी अजमेरा- अजमेर, श्री हेमन्तजी आर्य-अजमेर, श्री सूबेदार मेजर नैनसिंह जी- भगवानपुरा।

जिला-चित्तौड़गढ़: श्री कमल जी आर्य- रावतभाटा।

जिला- सीकर: श्री मदनलाल जगन्नाथ प्रसाद जी जांगिड- कोटडी धायलान, श्री राजवीर मुरलीधर जी पिलाजी-अजीतपुरा(कुदान)।

जिला-भीलवाड़ा: श्री शरद बद्रीलाल जी सोनी- भीलवाड़ा।

जिला- कोटा: श्री मोहनलाल जी स्वर्णकार- कोटा।

जिला-अलवर: श्रीमती कान्ता विद्यानन्द जी यादव-बिजौरावास।

जिला-बीकानेर : श्री चमनसिंह नाहरसिंह जी आर्य-बीकानेर।

महाराष्ट्र, जिला- ठाणे: श्री रामास्वामी रामैय्या जी भैरी- भिवंडी।

जिला-नाशिक: पण्डित राव भिलाजी बच्छाव।

जिला- नांदेड़: श्री हनमलु लछमन्ना जी पुल्लागौर- शहापुर।

जिला-लातूर: श्री भागवत नरसिंह जी आरदवाड़-शिवनखेड़ बुजुर्ग, श्री दिलीप कर्मवीर जी कंधारे-उद्गीर।

जिला-कोल्हापुर: डॉ. पद्मजा रावसाहेब दरूरे-

दिल्ली: श्री रामपालसिंह जी आर्य- नांगलोई दिल्ली-४१, श्री जयभगवान जी गोयल-यमुना विहार, दिल्ली-५३, श्री नरेन्द्रकुमार प्यारेलाल जी शर्मा-दिल्ली-३३।

कर्नाटक, जिला- बेंगलोर: श्री जे.एन. प्रभाकर राव जी- बेंगलोर।

जिला-बिदर: श्री मानवमित्र जी (गणेशदेव जी आर्य) आर्य-बिदर, श्री ईश्वरराव हबीब जी-हुमनाबाद।

हरियाणा, जिला- झज्जर: श्री जयपाल गजसिंह जी आर्य- खेड़ी जट्ट, सुश्री राजबाला द्वारा श्री सुभाष जी शर्मा-बहल।

जिला- रोहतक: श्री सोमवीर जी आर्य- रोहतक।

जिला-रेवाड़ी: श्री कर्ममुनि जी वानप्रस्थी-बालधनकला।

जिला-चरखी दादरी: श्री विष्णुकुमार हरस्वरूप जी पंडित-मेहराना।

जिला-रोहतक:श्री बारुराम जी चौधरी-रोहतक।

उत्तरप्रदेश, जिला-बागपत: श्री देवमुनि जी वानप्रस्थी- आर्य गुरुकुल विद्या पीठ-खैला (रटौल)।

जिला-शामली: श्री नेपालसिंह खेमचन्द्र जी आर्य- झाल।

जिला- सहारनपुर: श्री प्रेमचन्द सुगनचन्द जी आर्य- समसपुर (ताल्हापुर)।

जिला-मेरठ: श्री राजमुनि (तिमराजसिंह) जी दुर्वेशपुर (खास)।

जिला- बुलन्दशहर: श्री कालीचरण जी आर्य- भारत बुक डिपो- बुलन्दशहर।

पंजाब, जिला-लुधियाना: श्री श्रवणकुमार ज्ञानचन्द जी आर्य- लुधियाना।

जिला-चंडीगढ़: महर्षि दयानन्द बाल आश्रम-सेक्टर-६० मुहाली।

छत्तीसगढ़, जिला- दुर्ग: श्री प्रतापकुमार वल्लभ प्रसाद जी- दुर्ग।

झारखण्ड, जिला- पलामू: श्री साधुशरण गणेश जी आर्य- चैनपुर, श्री बसंत जागा जी शर्मा-राजचैनपुर।

गुजरात, जिला-सुरेन्द्र नगर: श्री मनजीभाई मोहनभाई-लीलापुर।

जिला-राजकोट: श्री सुरेशभाई गोरधनभाई-होड़थली। ■

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली...

सर्वोदय वैदिक गुरुकुल, मलारना चौड़ (राजस्थान) के स्वामी आत्मानन्द जी की प्रेरणा से ऋग्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य सोमदेवजी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। आचार्य कर्मवीर जी, अजमेर द्वारा आसन-प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया गया तथा रामनिवास जी आर्य, पानीपत के द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी गई।

गुरुकुल केहलारी, जिला-खण्डवा (म.प्र.) में स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य में योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न। आचार्य सर्वेश जी तथा शिविरार्थीगण

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा के प्रतिनिधिमंडल ने नगर विकास न्यास के चेयरमैन को ज्ञापन देकर कोटा शहर में **महर्षि दयानन्द सरस्वती सर्किल** बनाने का अनुरोध किया।

निराश्रित बालगृह मधु स्मृति संस्थान, रंगवाड़ी कोटा में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा वैदिक संत्सग किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्र.स. के महामन्त्री प्रकाश जी आर्य उपस्थित रहे।

२०वां आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन ६ मई २०१८ को आर्य समाज कीर्ति नगर दिल्ली में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के संयोजन में सम्पन्न

निराशा से ग्रस्त युवकों को प्रेरणा देने के लिए पतंजलि योग समिति कोटा द्वारा प्रकाशित **जीवन है अनमोल** फोल्डर के द्वितीय संस्करण का विमोचन आर्य समाज कीर्तिनगर दिल्ली में किया गया।

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर आर्थिक सहयोग कर पूण्यार्जन कीजिए

वैदिक संसार के निर्बाध गति से प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग करने निमित्त एकमुश्त २५ हजार रुपए प्रदान करें अथवा प्रतिवर्ष ५१०० रुपए नकद देने या अन्यों को सदस्य बनाकर प्रतिवर्ष ५१०० रुपए के सहयोग का व्रत (संकल्प) धारण कर वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर पुण्यार्जन कीजिए। - **सम्पादक**

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
पंच.विश्वकर्मा चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धूलिया (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

सुश्री अंजलि आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा, (हरियाणा)

श्री सांवरमल जी शर्मा
वास्को डी गामा, गोवा

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आ. सर्वेश सिद्धान्ताचार्य
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

श्री रमेशचन्द्र जी आर्य
गाधी, बागपत (उ.प्र.)

श्री बंशीलाल जी आर्य
बरखेड़ा पंथ (म.प्र.)

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि आपका **जीवन परिचय** तथा बनाए गए सदस्यों का विवरण पढ़ें आगामी अंक में

श्री अशोक जी आर्य
सहारनपुर (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय, हिरण मगरी (उदयपुर) का वार्षिक उत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न।

स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती के ग्राम दुधवास जिला-खण्डवा (म.प्र.) में वैदिक सत्संग में आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी की प्रेरणा से आर्य समाज की स्थापना की गई।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७